रत्न संचय

भाग-६

आचार्य देव श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी

॥ श्री गोड़ीजी पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्री जित-हीर-बुद्धि-तिलक-शांतिचंद्र-रत्नशेखर-राजेन्द्रसूरिभ्यो नमः ॥

रत्नसंचय भाग-६

शास्त्राधारे २५० विषयो का संग्रह

संपादक

आचार्यदेव श्री रत्नाकर सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य

उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी म.सा.

प्रकाशक

श्री रंजनविजयजी जैन पुस्तकालय

मालवाड़ा, जि. जालोर (राज.)

A

पुस्तक नाम : रत्नसंचय भाग-6

विषय : शास्त्राधारे 250 विषयो का संग्रह

प्रथमावृत्ति : नकल : 3,000 संवत : 2071

संपादक : उपाध्याय श्री रत्नत्रय विजयजी

किंमत : रु. 60 (साठ रुपये)

प्राप्तिस्थान

अमदावाद : **श्री पारस-गंगा ज्ञान मंदिर**
बी-१०३,१०४, केदार टावर, राजस्थान होस्पीटल के सामने
शाहीबाग, अमदावाद-३८० ००४
● फोन नं. ०७९-२२८६०२४७ (मो.) ९४२६५ ३९०७६.

श्री जैन प्रकाशन मंदिर
दोशीवाड़ा की पोल, कालुपुर, अमदावाद-१
फोन : (०७९) २५३५६८०६

मुंबई : **मणिलाल यु. शाह**
बी-१०१, फीलजोय एपार्टमेन्ट, एम.सी.एफ. क्लब के पास, हिंमतनगर
फ्लेट के पीछे, बोरीवली, (वे.) मुंबई-४०० ०९२
● (मो.) ९८२०१ ८५३५३ ● (घर) ०२२-२८९११४६९

पालीताणा : **श्री पार्श्वनाथ जैन पुस्तक भंडार**
फुवारानी पासे, तलेटी रोड, पालीताणा-३८४२७० (सौराष्ट्र).
● फो. : ०२८४८ - २५३३२३

मुद्रक : **नवनीत प्रिन्टर्स, (निकुंज शाह), शाहपुर, अमदावाद**
● मो. : 98252 61177

प्रस्तावना

जिस तरह सागर में से रत्न बहार नीकलते है उसी तरह जिनशासन में द्वादशांगी को सांगर की उपमा दी है । तीर्थंकर परमात्मा की त्रिपदी सुनकर गणधर भगवंत द्वादशांगी की रचना करते है उसी द्वादशांगी को आज २५०० साल का समय पूर्ण होते ही कितना भाग विच्छेद हुआ तो भी आज अपने पास ४५ आगम के मूल श्लोक, टीका, भाष्य, चूर्णी, निर्युक्ति आदि के साथ गिनने जाय तो ९ लाख श्लोक का समावेश होता है । गणधर भगवंतो के अनुमान से अपने पास जो ज्ञान है वो बिन्दु ० समान है मगर अपने अनुमान से सागर भरा हुआ है, क्योंकि नवलाख श्लोक को पढना यानि पूरा सागर पार करना इतना समय लगता है तो भी आज दिन तक जो जो रत्न प्राप्त किये उन सभी का संग्रह मंदमति के अनुसार किया है पूर्व में एक से चार भाग रत्नसंचय के प्रगट किये अब की बार पांचवा व छट्ठा भाग एक साथ प्रगट हो रहा है जिसके अंतर्गत कुल ५०० विषयों का संग्रह है प्रत्येक विषय के पीछे आगम-ग्रंथ का नाम भी लिखा है तो भी किसी जगह रह गया हो तो पढनेवाले विचार लेना । दोनों भाग संपूर्ण रुप से पढने पर बहोत सारे विषयो की जानकारी प्राप्त होगी ।

शास्त्राधार से ५०० विषय पढने के बाद जीवन में समकित व्रत को निर्मल करके सम्यग्ज्ञान में वृद्धि करके ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम करके सुकृत के सहभागी बनना । पढने के बाद इस पुस्तक को इस पुस्तक को दूसरो

के हाथ में पहोंचाकर पढाने का प्रयास करना, क्योंकि आगम के पदार्थ को पढना व पढाना बहोत बड़ा लाभ बताया है, जिनाज्ञा विरुद्ध कुछ भी विषय का शब्द का उपयोग हो गया हो तो क्षम्य गिनना ।

साधु साध्वीजी भगवंतो को प्रवचन के लिये शिबीर, वाचना आदि में ये विषय अति उपयोगी बनेंगे । ज्यादा से ज्यादा इस विषयो का पठन पाठन मनन चिंतन करके स्व-पर के उफकारी बने यही अंतर की अभिलाषा ।

लि.

आचार्य देवश्री रत्नाकर सूरीश्वरजी

म.सा. के शिष्य उपाध्याय

श्री रत्नत्रय विजयजी...

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
251.	संयम के पर्यायवाची शब्द	1
252.	कायोत्सर्ग में श्वासोच्छ्वास का प्रमाण	2
253.	आचारांग सूत्र के 18 अध्ययन के नाम	2
254.	सूयगडांग सूत्र के 23 अध्ययन	3
255.	शास्त्र में 10 बोल की दुर्लभता	3
256.	वीर्य और उसके भेद	4
257.	भाववीर्य के तीन प्रकार	5
258.	आगम के भारी शब्दो का अर्थ	6
259.	तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के पांच प्रकार	7
260.	साधु-साध्वीजी को तीन प्रकार के वस्त्र-पात्र	7
261.	प्रभुवीर के शासन में 9 व्यक्ति को तीर्थंकर नाम कर्म	7
262.	बत्तीस योग संग्रह के नाम	8
263.	प्रभुवीर की श्रमणोपासिका जयंति	10
264.	कौन से कारण से कौनी सी गति मिलती है ?	11
265.	अनंतर सिद्ध के 15 भेद	12
266.	परदेशी राजा के प्रश्नोत्तर	12
267.	बादर तेजस्काय के 12 प्रकार	15
268.	दश प्रकार के कल्पवृक्ष का प्रभाव	15
269.	चक्रवर्ती का कल्याण भोजन	16
270.	कषाय शब्द के अर्थ	16
271.	शब्द इन्द्रिय का प्राप्ति क्रम	17
272.	जीव को आहार ग्रहण करने के प्रकार	17
273.	नव नारुक - नव कारुक 18 प्रकार के प्रजाजन	18

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
274.	जंबूदीप के क्षेत्र पर्वत नदी कूट वि. का प्रमाण	18
275.	बार मास के नाम	19
276.	मेरुपर्वत के 16 नाम	20
277.	सामायिक कास्वरुप	20
278.	सामायिक पारने का रहस्य	21
279.	उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्ययन नाम	22
280.	दशवैकालिक सूत्र के 10 अध्ययन	22
281.	दशवैकालिक सूत्र के छठे अध्ययन के 18 आचार	23
282.	पुत्री ब्राह्मी की 18 प्रकार की लीपी	24
283.	प्रभु वीर का घोर तप	24
284.	कायोत्सर्ग के 19 दोष	25
285.	असमाधि के बीस स्थान	26
286.	छ आवश्यक में पंचाचार का पालन	27
287.	प्रतिक्रमण के 8 पर्यायवाची शब्दार्थ	28
288.	दश अच्छेरे का सामान्य अर्थ	28
289.	500 हलका प्रमाण	31
290.	चन्द्रगुप्त राजा के 16 स्थान स्वप्न का अर्थ	31
291.	आगम-ग्रंथ को पढने हेतु 14 संख्या का परिणाम	33
292.	सूत्र बोलने समय 32 दोष का त्याग	34
293.	सूत्र के आठगुण	35
294.	सूत्र शिखने के छ लक्षण	36
295.	सूत्र उच्चार के १७ गुण	36
296.	इहलोक विरुद्ध कार्य का त्याग	37
297.	24 दंडक के नाम	38
298.	वृक्ष के 10 विभाग धर्म के 10 गुणो से संयोजित	39

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
299.	आगम पंचांगी की भावना	39
300.	आगमो के उपनाम	41
301.	अरिहंत परमात्मा की चार उपमाएँ	41
302.	महाविदेह में जघन्य - उत्कृष्ट तीर्थंकर संख्या	41
303.	महाविदेह में सहचारी 84 तीर्थंकर की परंपरा	42
304.	सीमंधरस्वामी की मुख्य विशेषता	43
305.	चौद पूर्वी भी अनंत भव कर सकते है	44
306.	विजय देवसूरि का इतिहास	44
307.	बीजापुर (कर्णाटक) का प्राचीन इतिहास	46
308.	विजय देवसूरिके शिष्यभाव विजयजी	46
309.	कौन से संघयण वाले कौन सी नरक में	48
310.	चोसठ इन्द्र के नाम	48
311.	प्रमाद के आठ प्रकार	50
312.	प्रमाद के पांच प्रकार	51
313.	प्रमाद व वीर्य की व्याख्या	51
314.	शादी के प्रसंग में श्रावक को क्या करना ?	52
315.	कठोर वचन का त्याग	53
316.	तंदुलिया मच्छयानि क्या ?	53
317.	परमात्मा के अशोक वृक्ष की उंचाई	54
318.	सत्तर संडासा यानि सांधा की प्रमार्जना	55
319.	श्रावक के मार्गानुसारी के 35 गुण	56
320.	जैन धर्म को प्राप्त करने हेतु श्रावक के 21 गुण	58
321.	श्रावक के चौद नियम	60
322.	चैत्यवंदन में रखने की तीन मुद्रा	62
323.	चौद राज का प्रमाण	63

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
324.	ढाइद्वीप में सूर्य चंद्र का प्रमाण	63
325.	चार भावना का अर्थ	63
326.	भोजन के पांच प्रकार	64
327.	बावीस परिबह के नाम	64
328.	विरतिधर आत्मा का गुण वैभव	65
329.	बत्रीस प्रकार के नाटक	66
330.	नवसारी के श्यामल पार्श्वनाथ	67
331.	शान्तनुं-मंत्री-पौषध शाला का संबंध	68
332.	भरतक्षेत्र नाम केसे पडा ?	69
333.	मगधदेश में राजगृही राज्य की विशिष्टता	69
334.	मगध देशमें शिशुनाग वंश (नौनंद राजा)	70
335.	सम्राट संप्रति की परंपरा	71
336.	द्वादशांगी यानि क्या ?	72
337.	जंबूस्वामी के पांच भव	72
338.	जंबूस्वामी के 99 करोड की गिनती	73
339.	मथुरानगरी के कुबेर सेना वेश्या के 18 संबंध	73
340.	श्री चंद्रप्रभस्वामी जिनालय - सुरत	74
341.	शील (सदाचार) के छ लक्षण	75
342.	द्रव्य क्रिया को प्रधान बनाने के 4 लक्षण	76
343.	बहुमान भाव के पांच लक्षण (चैत्यवंदन हेतु)	77
344.	जिनवाणी श्रवण के आठ गुण	78
345.	सात प्रकार के भय के कारण	79
346.	तीन प्रकार के कारण ?	79
347.	सात व्यसनों का स्वरूप	80
348.	उपकार किसका मानना ।	81

क्रम	बिषय	पृष्ठ नं.
349.	अचितपाणी का काल	81
350.	'भु - भुवः-स्वः' शब्द कौन से सूत्र में ?	82
351.	दान धर्म के 7 गुण	84
352.	दानवीर भामाशाह	84
353.	दान के पांच भूषण व दूषण	85
354.	गीतार्थ यानि क्या ?	85
355.	पच्चक्खाणा पारने की छ शुद्धि	86
356.	तपचिंतवणी काउसग्ग विधी	86
357.	प्रभावना शब्द का अर्थ	87
358.	आलोचना यानि क्या ?	88
359.	समयं गोयम मा पमायए	89
360.	क्रिया अवश्य करना	90
361.	अनुकंपा - दान किसको दिया जाता है ?	91
362.	स्वाध्याय शब्द की व्याख्या	91
363.	स्वाध्याय किसको कहते है ?	92
364.	मलयगिरिजी की टीका व श्लोक	92
365.	जैन आगम में वांजीत्र के नाम	93
366.	'नमो तित्थस्स' यानि क्या ?	93
367.	स्वाध्याय से कर्म निर्जरा	94
368.	धर्म कथा के प्रकार	95
369.	मानव जन्म की दुर्लभता बतातें पाठ	97
370.	विनय शब्द की व्याख्या	98
371.	1296 गुण आचार्य भगवंत के	100
372.	तीर्थ किसको कहते है ?	103
373.	साधु के प्रवचन के गुण	104
374.	समवसरण में पर्षदा का प्रवेश	105

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
375.	देशना के बाद बलि उछालने की विधि	106
376.	तित्थपर समो सूरि	106
377.	आचार्य की आठ संपदा	108
378.	आचार्य भगवंत के चार विनय	110
379.	आचार्य भगवंत को नमस्कार का फल	110
380.	ब्राह्य व अभ्यंतर परिग्रह	111
381.	परिग्रह किसको कहते है ?	112
382.	संवर तत्त्व के 57 भेद	113
383.	कुंती-द्रौपदी का कार्योत्सर्ग ध्यान	114
384.	गांभूतीर्थ की विशेषता	114
385.	नागार्जुन योगी	115
386.	गुरु-शिष्य उपमा की छत्तीसी	115
387.	हनुमान के पूर्व के सात भव	117
388.	अंजना सती का पूर्वभव	117
389.	रावण-कुंभकर्ण-बीभीषण-हनुमान के अभिग्रह	118
390.	रावण का परिवार	119
391.	निंदा के भयंकर पाप	119
392.	अध्यात्म विकास की 10 भूमिका	120
393.	100 साल के आयुष्य में पुरुष की दश दशा	120
394.	सुख के दश प्रकार	121
395.	दश प्रकार से दीक्षा की इच्छा	122
396.	सूक्ष्मजीवो के आठ प्रकार	122
397.	प्रश्न पूछने के छः प्रकार	123
398.	कर्म पुद्गल को ग्रहण करने की छ अवस्था	123
399.	प्रभुवीर के प्रथम चातुर्मासिके अभिग्रह	123

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
400.	मेरु पर्वत के मेखलाकी लम्बाई	124
401.	मतिज्ञान के भेदो का स्वरुप	124
402.	मतिज्ञान के 28 भेद	126
403.	श्रुतज्ञान के 14 भेद	126
404.	अवधिज्ञान के 6 भेद	128
405.	मनः पर्यव ज्ञान के दो भेद	129
406.	केवलज्ञान का एक प्रकार	129
407.	समकित प्राप्ति की 67 प्रकार के भोजन	129
408.	अवधिज्ञान व मनःपर्यव ज्ञान बीच का भेद	130
409.	संयमीओ की दश दशा	131
410.	नियाणा के नौ प्रकार	132
411.	समकित को प्राप्त करने हेतु चार श्रद्धा	133
412.	समकित प्राप्ति के तीन लिंग	133
413.	समकित प्राप्ति हेतु 10 प्रकार का विनय	134
414.	विनय करने की पांच पद्धति	135
415.	समकित की प्राप्ति हेतु तीन शुद्धि	136
416.	समकित प्राप्ति हेतु पांच दूषण का त्याग	136
417.	समकित को प्राप्त करने वाले आठ प्रभावक	137
418.	समकित को निर्मल बनाने हेतु पांच भूषण	138
419.	समकित है या नहि उनके पांच लक्षण	139
420.	समकित की रक्षाहेतु छ जयणा	140
421.	समकित से पतित न होने के लिये छ आगार	140
422.	समकित को दृढ बनाने हेतु छ भावना	141
423.	समकित के मूलपाया समान छ स्थान.	142
424.	समकित गुण का लाभ	143

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
425.	समकित के 67 बोल का सामान्य वर्णन	144
426.	उपसर्ग शब्द की विवेचना	147
427.	द्युति मुनि की प्रथम देशना	148
428.	द्युति मुनी की देशना दूसरी	149
429.	देशना का प्रभाव भरत राजाके उपर	150
430.	उपदेशमाला ग्रंथ में आने वाली कथा	151
431.	चमरेन्द्र देव का पूर्व भव	152
432.	मंगल शब्द का अर्थ	153
433.	श्रावण पूर्णिमा की सात अजायबी	153
434.	मोक्ष के पर्यायवाची शब्द	157
435.	भद्रबाहु स्वामि की विद्वता	158
436.	उवसग्गहंर स्तोत्र की टीका	159
437.	भद्रबाहुस्वामी रचित निर्युक्ति	160
438.	अकबर बादशाह की ऋद्धि	160
439.	पर्युषण पर्व के प्रवचन कौन सै	161
440.	कल्पसूत्र की अनेक उपमा	162
441.	कौन सा जीव कौन सी गति में जाता है	163
442.	लक्ष्मी देवी के नीचे कमलो की संख्या	164
443.	अष्टांग निमित्त का स्वरुप	164
444.	व्यक्ति को स्वप्न आने के नौ कारण	165
445.	स्वप्न का फल कब मिलता है	166
446.	स्वप्न का फल कैसै मिलता है	166
447.	त्रिशलामाता के चौद स्वप्न का फल	167
448.	कल्पसूत्र का महिमा	168
449.	छप्पन्न दिक्कुमारीओ के नाम	169

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
450.	शूलपाणी यक्ष मंदिर में प्रभु को आये हुए 10 स्वप्नों	170
451.	राजीमति - नेमिनाथ के नौ भव का संबंध	171
453.	चोवीश तीर्थंकर का गर्भकाल	171
454.	संगमदेव द्वारा बीस उपसर्ग	172
455.	कल्पसूत्र की टीका में आते दृष्टांत	173
456.	कल्पसूत्र में साधु के 10 आचार	173
457.	तेरह गुण से युक्त चातुर्मास स्थल	175
458.	स्थविरभगवंतो के नाम व गौत्र	176
459.	'छ' श्रुतकेवली के नाम	177
460.	संप्रति राजा के गुरु आर्य सुहस्ति के 12 शिष्य	178
461.	दशपूर्वी के नाम	178
462.	आठो कर्म की स्थिति	178
463.	पुष्पमाला में फुलो की संख्या	179
464.	प्रभुवीरका परिवार व गोत्र	179
465.	परमात्मा वीर के दीक्षा का वरघोडा	180
466.	चार तीर्थंकरो के चतुर्विधसंघ के नाम	181
467.	नागेन्द्र आदि चार गच्छो की उत्पत्ति	182
468.	चेटक राजा की सात पुत्री व स्वामीओ के नाम	183
469.	समुद्र विजय राजा के 16 पुत्र	183
470.	कृत्रिकापण यानि क्या ?	184
471.	वैराग्य के पर्यायवाची शब्द	184
472.	राग के पर्याय वाची शब्द	185
473.	द्वेष के पर्यायवाची शब्द	186
474.	'शास्त्र शब्द का अर्थ'	187
475.	चौद पूर्व के नाम, पद, वस्तु, पूलिका	187

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
476.	पद - वस्तु - चूलिका यानि क्या ?	188
477.	निंदा के कारण भव भ्रमण	189
478.	प्रभावक चरित्र में आनेवाली कथा	190
479.	धर्मवृक्ष में नवपदो की नौ अवस्था.	191
480.	भरत चक्री द्वारा अष्टापदे जिन मंदिर	191
481.	पर्युषण पर्व के पांच कर्तव्य	191
482.	श्रावक के वार्षिक 10 कर्तव्य	194
483.	कालकाचार्य के समय की 7 घटना	197
484.	दश पयन्ना के श्लोक की संस्था	197
485.	जैन ग्रंथावली में आनेवाले पयन्नाके नाम	198
486.	स्थविर भगवंतो के 10 भेद	198
487.	देवंकी के आठ पुत्रो के नाम	199
488.	षड दर्शन के मुख्य ग्रंथ	199
489.	मलयगिरिजी द्वारा रचित सिद्धान्त टीका	200
490.	हरिभ्रद्र सूरि रचित ग्रंथ	200
491.	प्राणातिपात यानि हिंसा उसके 30 नाम	202
492.	मृषावाद के 30 नाम	204
493.	अदत्तादान के 30 नाम	205
494.	अब्रह्मचर्य के 30 नाम	207
495.	परिग्रह के 30 नाम	208
496.	वायुकाय की हिंसा कैसे होती है	210
497.	गुणवर्मा राजा के 17 पुत्रो का 17 प्रकारी पूजा द्वारा मोक्ष	210
498.	मौन अग्यारस का महिमा	211
499.	संग्राम सोनी द्वारा शासनभावना	212
500.	63 प्रकार के दुर्ध्यान व दृष्टांत के नाम	214

251. संयम के पर्यायवाची शब्द

1. **संयम** - पांच इन्द्रिय के 23 विषयो व मन को जो वश करे वो संयम
2. **प्रवज्या** - पाप कार्यो से मुक्त बनकर शुद्ध चारित्र योगमें प्रवेश करे प्रवज्या.
3. **दीक्षा** - दीयते-क्षीयते इति दीक्षा अभयदान द्वारा जीवो को बचाना व क्रिया द्वारा कर्म को काटना वो दीक्षा.
4. **निर्ग्रंथ** - बाह्य व अभ्यंतर ग्रंथी (राग - द्वेष आदि) वो जो दूर करे वो निर्ग्रंथ.
5. **ऋषि** - छ प्रकार की ऋतु की पीडा को जो सहन करे वो ऋषि.
6. **यति** - संयम जीवन की प्रत्येक क्रिया यतना (जयणा) पूर्वककरे
7. **साधु** - संयमी महात्माओने संयम मार्ग में सहाय करे वो साधु.
8. **श्रमण** - कर्म निर्जरा मार्ग को लक्ष में रखकर चारित्र में श्रम करे वो श्रमण ।
9. **भिक्षु** - ज्ञान - दर्शन चारित्र की साधना हेतु भ्रमर की तरह भिक्षाग्रहण करे वो भिक्षु ।
10. **महात्मा** - आत्मचिंतन द्वारा आत्मरमणता में आगे बढे वो महात्मा.
11. **योगी** - दर्शन - ज्ञान चारित्र की आराधना में सतत उपयोग रखे वो योगी ।
12. **मुनि** - मौन द्वारा लोक में नहि श्लोक में विचरे वो मुनि.
13. **शिष्य** - अपनी इच्छा का त्याग करके गुरु की इच्छा तरह वर्तन करना वो शिष्य ।
14. **संत** - संसार का अंत करके शांत बनकर जीए वो संत ।

15. **क्षमा-श्रमण** - क्षमा-मार्दव आदि 10 प्रकार के संयम धर्म का पालन करे वो क्षमाश्रमण

16. **अणगार** - अधिकरण के मूर्च्छाभाव को छोडकर उपकरण को धारण करके शुद्ध चारित्र का पालन करे वो अणगार.

17. **अचेलक** - जीर्ण व मलिन वस्त्र धारण करे वो अचेलक

(सूयगडांग सूत्र अं. १६/१७)

252. कायोत्सर्ग में श्वासोच्छवास का प्रमाण

- एक लोगस्स चंदेसुनिम्मलयरा तक - 25 श्वासोच्छवास
- चार लोगस्स सागरवर गंभीरा तक - 108 श्वासोच्छवास
- बार लोगस्स चंदेसु निम्मलया तक - 300 श्वासोच्छवास
- बीस लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा तक - 500 श्वासोच्छवास
- चालीस लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा व उपर एक नवकार का कायोत्सर्ग - 1008 श्वासोच्छवास

(जीतकल्प)

253. आचारांग सूत्र के 18 अध्ययन के नाम

1. शस्त्र परिज्ञा	11. शय्यैषणा	21. रुप सप्तक
2. लोक विजय	12. इर्या	22. पर क्रियासप्तक
3. शीतोष्णीय	13. भाषाजात	23. अन्योन्य क्रिया सप्तक
4. सम्यक्त्व	14. वस्त्रैषणा	24. भावना
5. अवंतिलोकचार	15. पात्रैषणा	25 विमुक्ति
6. धूताध्ययन	16. अवग्रह प्रतिमा	26. उपघात

7. विमोक्ष
8. उपधान श्रुत
9. महापरिज्ञा
10. पिंडैषणा
17. स्थान सप्तिका
18. निषीधका
19. अच्चारपासवण सप्तक
20. शब्दसप्तक
27. अनुद्घात
28. आरुहणा

(आचारांग सूत्र)

254. सूयगडांग सूत्र के 23 अध्ययन

1. समय
2. वैतालीय
3. उपसर्ग परीक्षा
4. स्त्री परिज्ञा
5. नरक विभक्ति
6. महावीर स्तव
7. कुशील परिभाषा
8. वीर्य
9. धर्म
10. समाधि
11. मार्ग
12. समवसरण
13. यथातथ्य
14. ग्रंथ
15. यमकीय
16. गाथा
17. पुंडरीक
18. क्रियास्थान
19. आहार परिज्ञा
20. प्रत्याख्यान क्रिया
21. आचार श्रुत
22. आर्दकीय
23. नालंदीय

(सूयगडांग सूत्र)

255. शास्त्र में 10 बोल की दुर्लभता

➡ सूयगडांग सूत्र के दूसरे बैतालीय नामके अध्ययन में जीव को 10 बोल की दुर्लभता बतायी है ।

1. मानव का अवतार
2. आर्यक्षेत्र
3. उत्तम कुल
8. जिनवाणी पर श्रद्धा
6. संतो का समागम
4. पांच इन्द्रिय की परिपूर्णता
5. निरोगी काया
10. संयम धर्म का आचरण
7. जिनवाणी श्रवण
9. दीर्घ आयुष्य

(सूयगडांग सूत्र)

256. वीर्य और उसके भेद

➠ **वीर्य :** वीर्य यानी शक्ति, सामर्थ्य, पराक्रम, तेज, दीप्त, अंतरंग शक्ति आत्मबल आदि अर्थो में जिसका उपयोग वो वीर्य । या शरीर की एक धातु शुक्र के रुप में उत्पन्न होने वाला वीर्य ।

➠ **भाव वीर्य के पांच प्रकार :**

1. **मनोवीर्य** - धर्म के कीसी भी कार्य में प्रथम अपने मन में सामर्थ्य-शक्ति का निश्चय करना वो मनोवीर्य ।
2. **वाग्वीर्य** - धर्म की कीसीभी क्रिया में बोलने द्वारा सामर्थ्य बताना. जैसे प्रवचन, सूत्र आदि शुद्धरुप से व घोषपूर्वक बोलना. वो वाग्वीर्य ।
3. **कायवीर्य** - धर्म की प्रत्येक क्रिया में शरीर शोषण भावना के साथ कराती क्रिया ।
4. **इन्द्रियवीर्य** - पांच इन्द्रिय के व्यापार में देव-गुरु-धर्म को जोडना वो इन्द्रियवीर्य ।
5. **आध्यात्मिक वीर्य के 10 प्रकार**
    1. **उद्यम** - ज्ञान उपार्जन यानि सूत्र गोखने में व तपाचरण में उत्साह रखना ।
    2. **धृति** - संयम व चित में स्थिरता प्राप्त करना ।
    3. **धीरत्व** - परिषह व उपसर्ग के समय में अविचल रहना ।
    4. **शौंडीर्य** - जब दिन उगे तब उच्चकोटि की भावना रखना । आज इसका अभिग्रह इस द्रव्य का त्याग इस तरह नये नये भाव में अभिवृद्धि करना ।

5. **क्षंमाबल** - क्रोध पर काबु रखना. अन्य को क्षमा देने का भाव रखना ।
6. **गांभीर्य** - सागर की तरह गंभीर बनना. प्रत्येक की नात अपने हृदय में रखना ।
7. **उपयोग बल** - ज्ञान दर्शन - चारित्र की क्रिया में उपयोग रखना.
8. **तपोबल** - बार प्रकार के तप में पराक्रम बताना ।
9. **योगबल** - मन - वचन - काया के योग से योग्य व्यापार करना ।
10. **पराक्रम** - 17 प्रकार के संयम मे शक्ति - सामर्थ्य का उपयोग करना ।

257. भाववीर्य के तीन प्रकार

1. **पंडितवीर्य** - संयम में पराक्रम, निर्मलता, साधुता, संयमजीवन की क्रिया, पंडितवीर्य
2. **बाल पंडितवीर्य** - व्रतधारी, बार प्रकार के व्रत को धारण करने वाले श्रावक की क्रिया.
3. **बालवीर्य** - असंयमी,अव्रती, हिंसा आदि पापवाली किया बालवीर्य ।

➡ **दो प्रकार से वीर्य का विभाजन.**

1. **सकर्म वीर्य** - कामभोगी, हिंसक प्रवृत्ति, असंयमी आदि सकर्मवीर्यवाले जो संसार भ्रमण द्वारा दुःखी होते है ।
2. **अकर्म वीर्य** - संयमी, आध्यात्मिक, दयालुजीव आदि अकर्मवीर्य वाले, जो कर्म से मुक्त बनकर मोक्षपद को प्राप्त करते है ।

(सूयगडांगसूत्र अं. ८)

258. आगम के भारी शब्दो का अर्थ

1. **ग्राम** - गांव में प्रवेश करने का जो कर लगता है वो.
2. **नगर** - जहां कर लगते न हो एसे लोगो के स्थान में रहना.
3. **राजधानी** - जहां राजा रहते हो उस नगर को राजधानी कहना.
4. **निगम** - जहां व्यापारीओ की संख्या ज्यादा से ज्यादा हो.
5. **खेट** - जिस वसति के चारो तरफ धूल - मिट्टी का बना हुआ किल्लाओ.
6. **कर्बट** - जहां वस्तु का क्रय विक्रय नहि होता हो अनैतिक व्यवसाय.
7. **मंडल** - जहां वसति की चारो तरफ एक से आधायोजन गमन आगमन हो.
8. **द्रोण मुख** - जहां पर आने जाने के जल व स्थल दोनो मार्ग हो.
9. **पतन** - जल मार्ग से जाने का वो जल पतन, जमीनमार्ग से जाने का वो स्थल पतन.
10. **आकार** - जहां सुवर्ण - लोहे आदि की खान हो.
11. **आश्रम** - तापस के निवास स्थान व धर्म स्थानक के पास में रहने की सुविधा.
12. **संबाह** - धान्य की रक्षा हेतु समतल भूमि में अनाज लाकर रखना.
13. **संन्निवेश** - जहां दूर देशो में व्यापार हेतु समतल भूमि में अनाज लाकर रखना.
14. **घोष** - जहां घी दूध बेचने वाले भरवाड रहते हो.

15. **आराम** - वृक्षवेला से युक्त स्थान नगर के पास में हो.
16. **उद्यान** - पुष्प - फल - वृक्षो छाया वाला सपाट स्थान.

(ठाणांग सूत्र)

259: तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय के पांच प्रकार

1. **जलचर** - जल में चलने वाले प्राणी - मच्छी, कछुए, मेंढक आदि.
2. **स्थलचर** - जमीन के उपर चलने वाले प्राणी - गाय, भैंस, बकरी आदि.
3. **उरपरिसर्प** - छातीयापेट से चलने वाले, साप - अजगर आदि.
4. **भुजयरिसर्प** - भुजा (हाथ) के बल से चलने वाले, चूहा, नोलीया आदि ।
5. **खेचर** - अकाश में पांख से उडनेवाले. पक्षी, कबूतर, पोपट आदि ।

(ठाणांग सूत्र)

260. साधु-साध्वीजी को तीन प्रकार के वस्त्र-पात्र

1. जांगिक - उन के वस्त्र
2. भांत्रिक - शण के वस्त्र
3. क्षौत्रिक रुके वस्त्र

1. तुंब - तुंबडे के पात्र आदि
2. काष्ट - लकडे के पात्र आदि
3. मिट्टी - मिट्टी के पात्र आदि.

(ठाणांग सूत्र)

261. प्रभुवीर के शासन में 9 व्यक्ति को तीर्थंकर नाम कर्म

1. **श्रेणीक राजा** - आगामी चोवीशी में प्रथम तीर्थंकर बनेंगे. पद्मनाभ स्वामी.

2. **सुपार्श्व** - आगामी चोवीशी में सूर नाम के दूसरे तीर्थंकर बनेंगे.
3. **उदायी** - आगामी चोवीशीमें सुपार्श्व नाम के तीर्थंकर बनेंगे.
4. **पोट्टिल अणगार** - आगामी चोवीशी में स्वयंप्रभ नाम के तीर्थंकर बनेंगे.
5. **दृढायु अणगार** - आगामी चोवीशी में सर्वानुभूति नाम के तीर्थंकर बनेंगे.
6. **शंख आवक** - आगामी चोवीशी में उदय नाम के तीर्थंकर बनेंगे.
7. **शतक श्रावक** - आगमी चोवीशी में शतकीर्ति नाम के तीर्थंकर बनेंगे.
8. **सुलसा श्राविका** - आगामी चोवीशी में निर्मम नामके तीर्थंकर बनेंगे.
9. **रेवती** - आगामी चोवीशी में चित्रगुप्त नाम के तीर्थंकर बनेंगे.

(ठाणांग सूत्र)

262. बत्तीस योग संग्रह के नाम

➠ साधु के श्रमण सूत्र में यह शब्द आता है बतीसाए जोग संगएहिं

1. आलोचना - अपने लगे हुए दोषो की क्षमा मांगना
2. निर्प्रलाप - शिष्य के दोष आचार्य कीसी को न करे.
3. आपत्सुद्रढ धर्म - आपत्ति के समय साधक धर्म में दृढ बने.
4. अनिश्चितोपधान - अपेक्षा बिना तप आदि करे.
5. शिक्षा - सूत्र व अर्थ का अभ्यास.
6. निष्प्रतिकर्म - शरीर की सौंदर्यता साफ सफाई नहि करे.
7. अज्ञानता - यश ख्याति हेतु अपना तप अज्ञात रखे.

8. अलोभता - वस्त्र, पात्र आदि हेतु निर्लोभ प्रवृत्ति करे.
9. तितिक्षा - भूख, तरस आदि परिषहो को सहन करे.
10. आर्जव - अपना व्यवहार सरल रखे.
11. शुचि - संयम वाले, सत्यबोले, हृदय की पवित्रता रखे.
12. सम्यग् दृष्टि - सम्यग् दर्शन यानि देव - गुरु पर श्रद्धा रखना.
13. समाधि - चित्त को संकल्प विकल्प से दूर रखे.
14. आचारोपगत - अपने आचरण को शुद्ध रखे.
15. विनयोपगत - विनय पूर्वक वर्तन करे.
16. धूतिमति - अपनी बुद्धि से धीरजता पूर्वक विचार करे.
17. संवेग - संसार से विरक्त बनकर मोक्ष की अभिलाषा रखे.
18. प्रणिधी - इन्द्रिय के उपर संयम रखे व एकाग्र चित बनाए.
19. सुविधी - विधी पूर्वक संयम धर्म का पालन करे.
20. संवर - कर्म के आने वाले द्वार को बंध करे.
21. आत्मदोषोपसंहार - कीसीभी प्रकार का दोष न लगे उसका ध्यान रखे.
22. सर्वकाम विरक्तता - सभी प्रकार के विषयो से विरक्त बने.
23. मूलगुण प्रत्यास्थान - पांच महाव्रत के अतिचारो में भी दोष लगने न दे.
24. उत्तरगुण - इन्द्रिय से लगने वाले दोष का त्याग करे.
25. अप्रमाद - दैनिक क्रिया में कीसी भी प्रकार का प्रमाद न करे.
26. सामाचारी - क्षणे क्षणे साधु की 10 समाचारी का पालन करे.
27. लवालव - हर पल साध्वाचार के पालन में सावध रहे.
28. ध्यानयोग - ध्यान योग द्वारा आत्मा में शांति का अनुभव करे.

29. मारणांतिक - मरणादि के प्रसंग पर कर्मोदय मानकर शांति रखे.
30. संग परिज्ञा - संग का रंग देखकर अयोग्य स्वरुप का त्याग करे.
31. प्रायभ्यितकरण - अपने दोषो की शुद्धि हेतु प्रायश्चित करे.
32. मारणांतिक आराधना - मृत्यु के समय दर्शन - ज्ञान - चारित्र की आराधना करे. **(समवायोग सूत्र)**

263. प्रभुवीर की श्रमणोपासिका जयंति

➡ कोशांबी नगर के राजा शतानिक की पुत्री श्राविका जयंति थी. जो साधु साध्वीजी के निवासस्थान की व्यवस्था करने वाली श्रमणोपासिका शय्यातरी कहलाती. जब जब प्रभु नगरी में पधारे तब उनकी देशना में जाकर प्रश्न पूछती.

१. **प्रश्न - है भंते ! जीव दुःखी अवस्था कैसे प्राप्त करता है ?**

ज. अढार प्रकार के पाप सेवन से जीव दुःखी अवस्था प्राप्त करता है.

2. **प्रश्न - है भंते ! भवसिद्धिक यानि क्या ?**

ज. मोक्षगमन के योग्य बनकर मोक्षमार्ग को जल्दी पास में लाए वो भव सिद्धिक.

3. **प्रश्न - है भंते ! जीव सोते अच्छे या जगते अच्छे ? जीवो सबल अच्छे या दुर्बल अच्छे ? जीव प्रमादी अच्छे या अप्रमादी अच्छे ?**

ज. जो पापी जीव है वो सोते. दुर्बल व प्रमादी अच्छे मगर जो धर्मी है वो जाग्रत, सबल व अप्रमादी अच्छे.

प्रभु वाणी से प्रभावित बनकर जयंति श्राविका ने संयम ग्रहण करके मोक्षगति को प्राप्त कीया. (भगवती सूत्र)

264. कौन से कारण से कौनी सी गति मिलती है ?

1. **नरकगति** - 1. महारंभ - घोर हिंसा के भाव.
   2. महापरिग्रह - मूर्च्छाभाव का अधिक संग्रह.
   3. पंचेन्द्रियवध - पांच इन्द्रियवाले जीव की हत्या.
   4. मांस भक्षण - कीसी भी प्रकार का मांस खाना.
2. **तिर्यम्चगति** - 1. मायाचार का सेवन
   2. असत्य वचन बार बार बोलना
   3. सरल व्यक्ति को साथ कपटवृत्ति करना.
   4. कीसी भी कार्य में कूड कपट की भावना रखना.
3. **मनुष्यवाति** - 1. भद्रिक स्वभाव वाला
   2. नम्रता के साथ हर कार्य को करता.
   3. हृदय में करुणा के भाव रखना.
   4. इर्ष्या व कषाय की मंदता करना.
4. **देवगति** - 1. देशविरति यानि श्रावकधर्म की आराधना.
   2. मोक्ष के लक्ष विना की आराधना.
   3. अज्ञानता युक्त कष्ट सहन करना.
   4. राग के प्रति संयमभाव रखना

(औपपातिक सूत्र)

265. अनंतर सिद्ध के 15 भेद

1. तीर्थ सिद्ध	-	गौतमस्वामी
2. अतीर्थसिद्ध	-	मरुदेवामाता.
3. तीर्थंकर सिद्ध	-	चोवीश तीर्थंकर
4. अतीर्थंकर सिद्ध	-	गौतमस्वामी
5. स्वयंबुद्ध सिद्ध	-	तीर्थंकर
6. प्रत्येक बुद्ध सिद्ध	-	करकंडुराजा
7. बुद्ध बोधित सिद्ध	-	गणधर
9. पुरुषलिंगसिद्ध	-	जंबूस्वामी
10. नपुंसकलिंग सिद्ध	-	गांगेय अणगार
11. स्वलिंग सिद्ध	-	जंबूस्वामी
12. अन्यलिंग सिद्ध	-	वल्कल चीरी
13. गृहस्थलिंग सिद्ध	-	सढेडवा माता
14. एक सिह	-	महावीर स्वामी
15. अनेक सिद्ध	-	ऋषभदेवादि 108 के साथ

(जीवाजीवाभिगम सूत्र)

266. परदेशी राजा के प्रश्नोत्तर

➠ पार्श्वनाथ प्रभु के प्रथम पट्टघर शुभदत्त गणधर, द्वितीय हरिदतसूरि, तीसरे समुद्र सूरि चोथे केशीकुमार श्रमण थे.

➠ गौतमस्वामी के साथ चर्चा करने वाले केशी मुनिथे. जो तीन ज्ञान के धारक थे.

- परदेशी राजा के साथ चर्चा करने वाले केशीकुमार चौदपूर्वी विचार ज्ञान के धारक थे. इस तरह दोनो केशी मुनि अलगथे.
- श्वेताम्बिका नगरी में रहनेवालो परदेशी राजा अधार्मिक, अधर्मचारी, क्रूर स्वभाव वालाथा. जीवन में हिंसा के कार्य चालू थे.
- इस तरफ केशी श्रमण श्रावस्ति नगरी में विचर रहे थे.
- परदेशी राजा का सारथी चित्त नाम था वो श्रावस्ति नगरी में गया वहां पर केशी श्रमण को श्वेताम्बिका नगरी में पधारने का आमंत्रण दिया.
- परदेशी राजा - तज्जीब तच्छरीरवाद सिद्धांत को मानने वाला था. यानि शरीर है वो ही जीव है शरीर से भिन्न आत्मा अस्तित्व नहि है जो पुनर्जन्म, पुण्य, पाप, कर्म, सिद्धांत को स्वीकार करने वाला नहि था.
- केशी कुमार-परदेशी राजा को कह रहे है कि हम श्रमण निर्ग्रन्थ है हम शरीर व आत्मा को भिन्न मानते है ।
- परदेशी राजा के 10 प्रश्न का जवान केशीकुमार श्रमण दे रहे है ।

1. नरक में जाने के बाद जीव मानव लोक में आ नहि सकता क्यों कि उनके पाप कर्म क्षीण नहि होते.
2. देवलोक में जाने के बाद जीव मानव लोक में आ नहि सकता क्योंकि 500 योजन तक मानव लोक की दुर्गंध उडती है ।
3. जिस तरह बंध मकान में से अवाज बहार आता है उसी तरह लोहे की कुंभी में से बहार का जिव अंदर प्रवेश करता है.
4. जिस तरह लोहे में अग्नि का प्रवेश होता है उसी तरहलोहे की कुंभी में से बहार का जीव अंदर प्रवेश करता है.
5. बाल्यवास्था व युवावस्था दोनों में एक हीआत्मा हौने से कार्य करने की क्षमता तरह तरह की होती है ।

6. युवावस्था व वृद्धावस्था दोनो में एक ही आत्माहोने से कार्य करने की क्षमता तरह तरह की होती है ।
7. व्यक्ति जींदा है या मरा है मगर उसका वजन एक जेसा होता है क्योकि शरीर में से नीकला हुआ जीव अरुपी होता है हलका या भारी नहि होता.
8. जिस तरह लकडे के अनेक टुकडे करने से अग्नि दिखता नहि है उसी तरह शरीर के कितने भी टुकडे करो मगर जीव नहि दिखेगा.
9. जिस तरह चलता हुआ वायुकाय के जीव को अपन देख नहि सकते उसी तरह जीव अपनी हाथ में सें जा रहा है तो भी नहि देख सकते.
10. हाथी व कंथवे का जीव एक समान है पूर्व कर्म के आधार से जीव को जो शरीर मिलता है उसमें जीव के असंस्थान प्रदेश शरीर मिलता है उसमें जीवके असंख्यात प्रदेश शरीर में विस्तृत व संकोच होकर समावेश हो जाता है छोटे शरीर में संकोचित होते है बडे शरीर में विस्तृत हो जाता है ।

➠ उपरोक्त प्रश्न के जवाब सुनकर परदेशी राजा के भाव बदल गये. केशी श्रमण के पास श्रावक के 12 व्रत स्वीकार कीये.

➠ राणी सूर्यकान्ता परदेशी राजा के भाव को देखकर चिंतित बनती है राजा को जहर देकर पुत्र को राज्य में स्थापन करती है.

➠ राजा समभाव के साथ मृत्युपाकर सूर्याभनामका देव बनता है.

➠ सूर्याभदेव प्रभु वीर के दर्शन करके 32 प्रकार का नाटक बताता है और देव देवी 60 प्रकार के वांजीत्र बजाते है 32 वें नाटक में प्रभुवीर का

च्यवन से लगाकर मोक्ष तक के सभी प्रसंग बताते है प्रभुवीर कहते है सूर्याभदेव परित्तसंसारी सुलभबोधि आराधक जीव है

➡ देवगति का आयुपूर्ण करके मनुष्य बनकर 'दृढप्रतिज्ञ' नाम धारण करेगा. स्थविरो के पास दीक्षा लेकर शुद्ध चारित्र पालकर केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष में जायेगा.

267. बादर तेजस्काय के 12 प्रकार

1. **इंगाल** - धूए बिना का अग्नि ।
2. **ज्वाला** - दीपक की ज्वाला ।
3. **मुम्मुर** - रख्या (राख) में रहा हुआ अग्नि ।
4. **अचि** - अग्नि से भिन्न रही हुयी ज्वाला ।
5. **अलात** - जलती हुयी मसाल ।
6. **शुद्ध अग्नि** - लोहे के गोला का अग्नि ।
7. **उल्का** - आग का तिनखा ।
8. **विद्युत** - आकाशीय बिजली ।
9. **अशनि** - आकाश में से झरता वज्र जेसाअग्नि ।
10. **निर्वात** - वैक्रियलब्धि से वज्रपात होनेवाला ।
11. **संघर्ष समुस्थित** - अरणि के लाकडे से प्रगट होने वाला ।
12. **सूर्यकान्त मणि** - सूर्य के किरण द्वारा सूर्यकान्त मणिका प्रकाश ।

(जीवाजीवा भिगम)

268. दश प्रकार के कल्पवृक्ष का प्रभाव

1. **मतंगा** - मादक रसयुक्त फल देता हैं ।

2. **भृंगा** - विविध प्रकार के भाजन बर्तन को देता है ।
3. **त्रुटितांजी** - जिसमें से 49 तरह की वांजीत्रयुक्त ध्वनि निकलती है ।
4. **दीवशिखा** - दीपक समान प्रकाश देते है ।
5. **ज्योतिशिखा** - चंद्रसूर्य जेसा तेजस्वी प्रकाश देता है ।
6. **चित्रांडा** - तरह तरह की मालाओ देता है ।
7. **चित्तरसा** - विविध प्रकार की स्वादिष्ट, भोजन सामग्री देता है
8. **मणिचंडा** - तरह तरह के सुंदर अलंकार देते है ।
9. **गेहगारा** - मनोहर गृह आवास स्थान की सुविधा मिलती है।
10. **अणिगणा** - विविध प्रकार के सुंदर वस्त्र की पूर्ति करते है ।

269. चक्रवर्ती का कल्याण भोजन

➡ पुंड्र जाति के गन्ने का भोजन करनेवाली । लाख गायो का दूध 50,000 गायो को पीलाने में आता है उसका दूध 25.000 गायो को पीलाने में आता इस तरह करते करते जब एक गाय तक दूध पहोंचता है और उस गाय में से जो दूध नीकलता है उस दूध में चावल, सक्कर, मेवा, मसाला डालकर पूर्ण रूप से गरम करके जब दूधपाक बनता है वो कल्याण भोजन कहलाता है जो चक्रवर्ती ही कर सकता है ।

(जीवाजीवाभिगम सूत्र)

270. कषाय शब्द के अर्थ

1. **कष्** यानी **संसार आय** यानि **लाभ** - जिससे संसार का लाभ होता है वो कषाय ।

2. स्वभाव से शुद्ध जीव को कर्म द्वारा कलुषित करना वो कषाय.
3. शुद्ध स्वभाव वाले आत्मा को विकारो से मलिन करना वो कषाय.
4. आठ कर्म में चय, उपचय, बंध, उदीरणा, वेदना आदि में कारणभूत भावकी उत्पत्ति को कषाय.
5. अच्छी सामग्री देखकर लेने का मन खराब वस्तु छोडने का मन वो कषाय । **(जीवाजीवाभिगम सूत्र)**

271. शब्द इन्द्रिय का प्राप्ति क्रम

1. **व्यंजनावग्रहः** - शब्द का पुदगल का कान के साथ स्पर्श होना.
2. **अर्थावग्रहः** - उसके बाद कुछ स्पष्ट अवाज का स्पर्श होना.
3. **ईहा** - उसके बाद किसका आवाज होगा संशयात्मक विचारणा.
4. **अपाय** - अरे ! यह तो मेरे मित्र का आवाज है एसा निर्णयात्मक ज्ञान.
5. **धारणा** - मित्र के अवाज को अपने मन में निश्चय करके रखना

(पन्नवणासूत्र)

272. जीव को आहार ग्रहण करने के प्रकार

1. **अनाभोग अनियतित आहार** - शरीर को टिकाने हेतु जीव द्वारा ग्रहण कराता आहार.
2. **अनाभोग निवर्तित आहार** - उपयोग पूर्वक अपनी इच्छा से ग्रहण कराता आहार.
3. **ओज आहार** - उत्पत्ति स्थानमें जीव उत्पन्न होकर प्रथम समये पुदगलो का आहार रुप में ग्रहण कराता आहार.

4. **लोम आहार** - आहार योग्य पुद्गल को आहार रुप में ग्रहण कराता आहार.
5. **प्रक्षेप आहार** - जिस पुद्गलका मुख में व शरीर में कोलीये के द्वारा आहार ग्रहण कराना.
6. **मनोभक्षी आहार** - देवगति के जीव शुभ पुद्गलो का मन द्वारा ग्रहण करनेवाले । (पन्नवणा सूत्र)

273. नव नारुक - नव कारुक 18 प्रकार के प्रजाजन

नव नारक -	नव नारक -
1. कुंभार	1. मोची
2. पटेल	2. घांची
3. सुवर्णकार	3. गांधी
4. रसोइया	4. रंगरा
5. गायक (गंधर्व)	5. कंसारा
6. वाणद	6. दरजी
7. माली	7. गोवाल
8. कथाकार	8. भिल्ल
9. पान विक्रेता	9. माछीमार

(जंबूदीप प्रज्ञप्ति)

274. जंबूदीप के क्षेत्र पर्वत नदी कूट वि. का प्रमाण

1. खंड - एक लाख योजन जंबूदीप भरतक्षेत्र प्रमाण 190 खंड होते है.
2. योजन - जंबूद्वीप का क्षेत्रफल सात अबज नीब्बे करोड, पिस्तालीस

लाख, चोराणुं हजार, एक सो पचास योजन पोणा दो कोष, पंदर धनुष, ढाई हाथ है.

3. पर्वत - जंबूदीप में कुल 269 पर्वत है.
4. कूट - पर्वत के शीखर 467 कूट है.
5. तीर्थ - कुल 102 तीर्थ है.
6. श्रेणी - 136 श्रेणी है वैताढ्य पर्वत के उपर आयी हुयी है.
7. विजय - चक्रवर्ती के विजयरुपस्थान 34 है. 34 राजधानी, 34 तिमिस्र गुफा और खंड प्रपात गुफा एवं 34 ऋषभकूट पर्वत है.
8. कद - सरोवर 16 है.
9. नदी - 14.56.026 छोटी बडी नदी है.
10. सूर्य चंद्र - जंबूदीप में दो सूर्य दो चंद्र. 56 नक्षत्र, 176 ग्रह, 1,33,950 क्रोडाकोडी ताराओ की संख्या है मेरु पर्वत के आमने सामने रहकर सूर्य चंद्र मेरु पर्वत को प्रदक्षिणा देते है ।
11. मंडल - चंद्र प्रदक्षिणा के वर्तुलाकार मार्ग को मंडल कहते है सूर्य के 184 व चंद्र के 15 मंडल बताये है.
12. योग - अपने अपने मंडल पर परिभ्रमण करते नक्षत्र जितना समय सूर्य चंद्र के साथ रहे व साथ परिभ्रमण करे उसको योग कहते है ।

(जंबूद्वीप प्रक्षप्ति)

275. बार मास के नाम

1. कारतक - प्रीतिवर्धन
2. मागसर - श्रेयांस
3. पोष - शिव
4. महा - शिशिर
5. फागण - हेमंत
6. चेडा - वसंत

7. वैशाख - कुसुमसंभव
8. ज्येष्ठ - निदाध
9. अषाढ - वन विरोह
10. श्रावण - अभिनंदित
11. भादरवा - प्रतिष्ठ
12 आसो - विजय

(जंबूदीप प्रज्ञप्ति)

276. मेरुपर्वत के 16 नाम

1. मंदर
2. मेरु
3. मनोरम
4. सुदर्शन
5. स्वयंप्रभा
6. रत्नोच्चय
7. शिलोच्चय
8. लोकमध्य
9. लोकनाभि
10. अच्छु
11. सूर्यावर्त
12. सूर्यावरण
13. गिरिराज
14. उत्तम
15. दिशाहि
16. अवतंसक

(चंद्रसूर्य प्रज्ञप्ति)

277. सामायिक कास्वरुप

समभावो समाइयं, तणकंचण सत्तुमित्त विसउति ।
निरभिस्संगं चित्तं, उचिय पवित्तिपहाणं च ॥ (पंचाशकसूत्र)

➡ **भावार्थ :** सामायिक यानी सभी स्थान पर समवृत्ति, निरभिष्वंग वृत्ति व औचित्य वृत्ति. प्रधान वृत्ति वाले वर्तन को सामायिक कहा है. सर्वत्र **समान वृत्ति** - सुवर्ण का ढेर या मिट्टी का ढेर दोनों सामग्री पुद्गलमय होने से जड़ है इसमें से एक भी सच्चा सुख दे नहि सकता. सिर्फ सुख दुःख की वृत्ति कल्पना जाल है उनका समय पूर्ण होने से वो जाने वाले है इसलिये करेमि भंते लेने के बाद सिर्फ दो घडी तक समान भाव लाने का अवश्य प्रयत्न करना ।

2. **निरभिष्वंग वृत्ति** - मोहाधीनता के कारण अनुकुल सामग्री, अनुकुल स्थान अनुकुल व्यक्ति, अनुकुल उपकरण पर राग करना. व प्रतिकुल सामग्री, स्थान, व्यक्ति, उपकरण पर द्वेष नहि करना वो निरभिष्वंगवृत्ति. इसलिये करेमि भंते लेने के बाद दो घडी तक आसक्तिभाव की वृद्धि न हो जाय उसका खास ध्यान रखना, सामायिक असक्तिभाव को तोडने के लिये है ।

3. **औचित्य प्रधान प्रवृत्ति** - सामयिक के समय में समता भाव के पोषक कार्य करना. जेसे गुरुविनय - वैयावच्च-स्वाध्याय-जाप-ध्यान आदि प्रवृत्ति वो ओचिय प्रवृत्ति है एसी प्रवृत्ति से काषायिक प्रवृत्ति नाश होती है. करेमिभंते लेने के बाद दर्शन, ज्ञान, चारित्र की प्रवृत्ति औचित्य प्रधान प्रवृत्ति है । **(पंचाशक सूत्र)**

278. सामायिक पारने का रहस्य

➡ जन श्रावक गुरु के पास आदेश मांगता है इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक पारुं ? उस समय गुरु श्रावक के भाव की वृद्धि करने हेतु जवाब देते है "पुणरवि काय्व्वो" यानि यह सामायिक का अनुष्ठान वापिस करने जैसा है आज्ञा नहि देते है मगर विधेय वाक्य का उपयोग करते है उस समय श्रावक भी हर्ष में आकार कहता है "यथाशक्ति" यानि समायिक मेरे को पसंद है मगर अभी संयोग व सामर्थ्य नहि है जब शक्ति व भावना होगी तब और मैं आगे बढूंगा ।

➡ दूसरी बार श्रावक आदेश मांगता है इच्छाकारेण संदिसह भगवन! सामायिक पार्यु ? तब गुरु जवाब देते है 'आयारो न मोत्तत्वो' यानि गुरु समज गुये है इनको अब सामायिक में रहने की इच्छा नहि है इसलिये

कह रहै है कि तुं छोड रहा है मगर यह आचार छोडने जैसा नहि है एसा भाव हृदय में भर के जाना श्रावक भी गुरु के वचन को स्वीकार करने के लिये 'तहत्ति' शब्द बोलता है। (सूत्रसंवेदना)

279. उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्ययन नाम

1. विनय श्रुत	13. चित्रसंभूतिय	25. यज्ञीय
2. परिषह	14. इषुकारीय	26. सामाचारी
3. चतुरंगीय	15. संभिक्षुक	27. खलुंकीय
4. असंस्कृत	16. ब्रह्मचर्य समाधि	28. मोक्षमार्ग गति
5. अकाम मरणीय	17. पापश्रमणीय	29. सम्यक्त्व पराक्रम
6. क्षुल्लक निर्ग्रन्थीय	18. संयतीय	30. तपो मार्ग गति
7. उरभीय	19. मृगापुत्रीय	31. चरण विधी
8. कपिलीय	20. महा निग्रन्थीय	32. प्रमादस्थान
9. नमिप्रवज्या	21. समुक्यालीय	33. कर्मप्रकृति
10. द्रुम पत्रक	22. रहनेमीय	34. लेश्या
11. बहुश्रुत महिमा	23. केशीगौतमीय	35. अणगार मार्गगति
12. हरिकेशीय	24. अष्ट प्रवचन मातृ	36. जीवाजीव विभक्ति

(उत्तराध्ययन सूत्र)

280. दशवैकालिक सूत्र के 10 अध्ययन

1. **द्रुमपुष्पिका** - धर्म प्रशंसा एवं साधु की गौचरी पद्धति माधुकरी वृत्ति
2. **श्रामण्यपूर्वक** - संयम की पूर्वभूमिका संयम की स्थिरता हेतु धैर्य की साधना.

3. **क्षुल्लकाचार कथा** - बावन प्रकार का अनाचार का विवेक.
4. **षड् जीव निकाय** - जीव संयम व आत्मसंयम की प्रधानता प्राप्त करने का पालन.
5. **पिंडैषणा** - शरीर के पोषण हेतु निर्दोष आहार की प्रधानता.
6. **महाचारकथा** - अढारा स्थान द्वारा साधक हेतु महा आचार का निरुपण.
7. **वाक्यशुद्धि** - भावा, विवेक, हित मित प्रिय निरवद्य भाषा का उपयोग.
8. **आचार प्रणिधी** - आचार का खजाना, चित को आचार में स्थिर करना.
9. **विनयसमाधि** - विनय की प्रधानता, अविनय का त्याग उसके लाभ - अलाभ ।
10. **सभिक्षु** - श्रेष्ठभिक्षु - साधु की महत्ता बताने वाला वाक्य व अभ्यंतर स्वरुप.
11. **रतिवाक्य चूलिका** - संयम में अस्थिर होने वाले साधु को स्थिर करने की प्रधानता.
12. **विवक्ति चर्या चूलिका** - विवेक युक्त आचरण की प्रधानता व एकत्व भावना.

(दश वैकालिक सूत्र)

281. दशवैकालिक सूत्र के छठे अध्ययन के 18 आचार

1. अहिंसा का पालन
2. जूठ बोलना नहि.
3. चोरी करना नहि.
4. ब्रह्मचर्य का पालन करना.
10. वायुकाय का संयम
11. अकल्प्य आहार का त्याग
12. गृहस्थ भाजन में भोजन नहि.
13. हाथबनावट कुंर्सी पलंग में बैठना नहि.

5. संन्निधी रखना नहि.
6. रात्रिभोजन का त्याग
7. पृथ्वीकाय का संयम
8. अप्काय का संयम
9. तेउकाय का संयम
14. गृहस्थ के घरमें बैठना नहि.
15. स्नान का त्याग
16. वनस्पति का संयम
17. त्रसकाय का संयम
18. विभूषाका त्याग

(दशवैकालिक सूत्र)

282. पुत्री ब्राह्मी की 18 प्रकार की लीपी

1. हंस लीपी
2. भूत लीपी
3. यश लीपी
4. राक्षस लीपी
5. उडी लीपी
6. यावनी लीपी
7. तुरकी लीपी
8. कीरी लीपी
9. कावडी लीपी
10. सेथवी लीपी
11. मालधी लीपी
12. नडीलीपी
13. नागली लीपी
14. लाटि लीपी
15. पारसी लीपी
16. अनिमित लीपी
17. वाणिकी लीपी
18. मूलदेवी लीपी

(ऋषभदेव चरित्र)

283. प्रभु वीर का घोर तप

	तप का नाम	तपके उपवास	तप कितनी बार	कुल उपवास
1.	छ मासी तप	180	1	180
2.	पांच दीन न्यून छ मासी तप	175	1	175
3.	चौमासी तप	120	9	1080

4.	त्रिमासिक तप	90	2	180
5.	द्वि मासिक तप	60	6	360
6.	डेढ मासिक तप	45	2	90
7.	ढाई मासी तप	75	2	150
8.	मासक्षमण तप	30	12	360
9.	अर्धमासिक तप	15	72	1080
10.	भद्र प्रतिमा	2	1	2
11.	महाभद्र प्रतिमा	4	1	4
12.	सर्वतो भद्र प्रतिमा	10	1	10
13.	अट्ठम तप	3	12	36
14.	छट्ठ तप	2	229	458
15.	उपवास	1	1	

कुल = 4166 उपवास

284. कायोत्सर्ग के 19 दोष

1. **घोटक दोष** - घोडे की तरह एक पैर मोड के खडा रहना.
2. **लता दोष** - लता की तरह शरीर को कंपाना.
3. **स्तंभदोष** - स्तंभ या दीवार का सहारा लेना.
4. **मालदोष** - छत के उपर मस्तक को टच करके रहना.
5. **शबरीदोष** - दोनो हाथ गुप्तस्थान के आगे रखना.
6. **वधुदोष** - कुलवधुकी तरह मुंह नीचा रखना.
7. **निगडदोष** - दौनो पेर फैला के या बंध करके खडा रहना.
8. **लंबुत्तरदोष** - अविधीसे कपडे को लटकते रखना.

9. **उर्ध्वकादोष** - पैर के अंगुठे इकट्ठे करके एडी फैला के रखना.
10. **स्तनदोष** - मच्छर के भयसे छाती (सीने) का भाग ढक कर खडा रहना. (पुरुष को)
11. **संयतिदोष** - स्त्री की तरह पुरे शरीर को ढककर रहना.
12. **खलिन दोष** - लगाम की तरह चरवला आगे रखना.
13. **वायस दोष** - कौए की तरह चारो तरफ देखते रहना.
14. **कपित्थ दोष** - वस्त्र मलिन हो जायेंगे उस हेतु वस्त्र संकोच के रखना.
15. **शिरकंप दोष** - भूत की तरह मस्तक धुनाते रहना.
16. **मूक दोष** - मूंगे की तरह हुं हुं करना.
17. **मदिरा दोष** - दारु पीधेल की तरह डब डब करना.
18. **भुतितांग्रली दोष** - अंगुली घुमाना, आंख की पांपण चलाना.
19. **प्रेक्ष्यदोष** - बंदर की तरह जहां तहां देखते रहना. (**आवश्यक सूत्र**)

285. असमाधि के बीस स्थान

साधु साध्वीजी प्रतिदिन श्रमण सूत्र में बोलते है वीसाए असमाहिठाणेहिं यानि असमाधि असमाधि के बीस स्थान है एसे कार्यो का संयमी आत्मा या पोषध धारी आत्मा को त्याग करना चाहिए. ।

1. जल्दी जल्दी चलना.
2. अंधेरे में देखे बिना चलना.
3. उपयोग बिना चलना.
4. अमर्यादित शय्या आसन रखना.
5. रत्नाधिक गुरु के सामने बोलना
6. स्थविर साधु का अपमान करना.

7. प्राणी का घात करना.
8. मन में रोष से जलते रहना.
9. क्रोध करना कटुवचन बोलना.
10. निंदा कुथली
11. बार बार निश्चयात्मक भाषा बोलना.
12. नये नये क्लेश का वातावरण खडा करना.
13. क्षमापना देकर वापिस झघडा तैयार
14. अकाल स्वाध्याय करना.
15. सचित का स्पर्श करना.
16. रात्रि में बडे अवाज से बोलना.
17. संघ में फाट फूट करना.
18. क्लेश में बढोतरी करना.
19. सुबह से शाम तक भोजन करते रहना.
20. अनेषणीय आहार ग्रहण करना. **(दशाश्रुतस्कंध)**

286. छ आवश्यक में पंचाचार का पालन

1. **सामायिक** - चारित्राचार का पालन - सावद्ययोग विरति
2. **चउवीसत्थो** - दर्शनाचार का पालन - उत्कीर्तन
3. **वांदणा** - ज्ञानाचार का पालन - गुणवान विनय प्रतिपत्ति.
4. **पडिक्कमणुं** - वीर्याचार का पालन - स्खलना (भूल) की निंदा.
5. **कायोत्सर्ग** - चारित्राचार का पालन - व्रण चिकित्सा
6. **पच्चक्खाण** - तपाचार का पालन - गुणधारणा **(आवश्यक सूत्र)**

287. प्रतिक्रमण के 8 पर्यायवाची शब्दार्थ

1. **प्रतिक्रमण** - दिन व रात्रि के पापो से पीछे हटना वो प्रतिक्रमण.
2. **प्रतिचरण** - चारित्र धर्म के सामने जाना वो प्रतिचरण.
3. **परिहरणा** - पापो का परिहार यानि पाप कर्म को छोडना वो परिहरणा.
4. **वारणा** - आते हुए कर्म को रोकना वो वारणा.
5. **निवृत्ति** - धर्म की प्रवृत्ति व पाप की निवृत्ति करना वो निवृत्ति.
6. **निंदा** - लगे हुए पाप कर्मो की निंदा करना वो निंदा.
7. **गर्हा** - गुरु के सामने जाकर पापो को प्रगट करना वो गर्हा.
8. **शुद्धि** - पाप कर्मो की आलोचना लेकर शुद्ध होना वो शुद्धि

(आवश्यक सूत्र)

288. दश अच्छेरे का सामान्य अर्थ

1. **उपसर्ग** - मानव, देव व तिर्यञ्च के द्वारा उपसर्ग होते है. भगवान महावीर को तीर्थंकर अवस्था में गौशालक की तेजोलेश्या के कारण तीर्थंकर को दश मास तक लौहीखंड झाडे हुए वो एक आश्चर्य जानना. क्यों की तीर्थंकर को एसा होता नहि मगर हो गया वो आश्चर्य जानना ।

(भगवती सूत्र) (श. 15)

2. **गर्भ संक्रमण** - सामान्य रुप से तीर्थंकर क्षत्रियकुल में ही उत्पन्न होते है मगर पूर्वक्रम के कारण प्रभु वीर का च्यवन देवानंदा की कुक्षी में हुआ. हरिणेग मेषी देव ने देवानंदा की कुक्षी में से त्रिशलामाता की कुक्षी में हुआ. हरिणेग मेषी देव ने देवानंदा की कुक्षी में से त्रिशलामाता की कुक्षी में गर्भ संक्रमण कीया. एसा कभी होता है मगर प्रभुवीर के लिये हुआ वो आश्चर्य जानना. । **(भगवती सूत्र)**

3. **स्त्रीतीर्थंकर** - सामान्य रुप से तीर्थंकर पुरुष होते है नगर मिथिलापति कुंभराजा की पुत्री मल्लीकुमारी उन्नीसवें तीर्थंकर बने. मायासेवन से स्त्री वेद का बंध हुआ. इसलिये स्त्री तीर्थंकर की घटना एक आश्चर्य रुप हुयी । **(ज्ञाता धर्म कथा अ. 8)**

4. **अभावित पर्षदा** - तीर्थंकर की देशना सुननेवाले श्रोताओ को परिषद कहते है प्रभु की देशना सुनकर कोई महाव्रतधारी कोई व्रतधारी बनते है मगर प्रभु वीर की देशना में कोई श्रावक - श्राविका न होने से देशना निष्फल गई. क्योंकि उसमें देव देवी हाजर थे. कीसी ने व्रत स्वीकार न किया उसके कारण प्रभु की देशना निष्फल हुयी वोभी आश्चर्य कारी घटना है । **(ठाणांग सूत्र वृत्ति)**

5. **कृष्ण वासुदेव का अपरकंका में गमन** - सामान्य रुप से एक क्षेत्र में एक ही वासुदेव होते है मगर अपरकंका नगरी में पद्मनाभ राजा ने देव की सहायता से दौपदी का हरण कीया नारद मुनि द्वारा समाचार प्राप्त होते कृष्ण पांडवो को साथ लेकर बडा समुद्र पार करके अपरकंका नगरी में गये । पद्मनाभ राजा को हराकर भरतक्षेत्र की तरफ जाते समय शंखनाद कीया । उस समय वहां पर रहनेवाला कपिल वासुदेव ने भी भगवान मुनिसुव्रतस्वामी को पूछा यह शंखनाद किसने कीया ? तब उन्होंने कहा कृष्ण वासुदेवने कीया. तब कपिल वासुदेव ने भी शंखनाद कीया. परस्पर दोनो वासुदेव का शंखनाद का मिलन कभी होता नहि है मगर हो गया वो आश्चर्य जानना । **(ज्ञाता धर्म कथा)**

6. **चंद्र सूर्य विमान का नीचे आना** - चंद्र - सूर्य के विमान की आकाश में परिभ्रमणा होती है मगर कभी नीचे नहि आते है एकबार प्रभुवीर की देशना सुनने हेतु मूल विमान के साथ नीचे आये व संध्या समय तक

नीचे रहे एसा कभी बनता नहि मगर हो गया वो आश्चर्यकारी घटना.

(दशवेकालिक टीका)

7. **हरिवंश कुलोत्पत्ति** - भरतक्षेत्र के उत्तर में हरिवर्ष नामका क्षेत्र है जो युगलिक भूमि कहलाती है युगलिको की वंश परंपरा नहि होती. साथ में जन्म साथ में मृत्यु होता है मगर हरिवर्ष के एक युगलिक हरि राजा हरिणी राणी ने चंपानगरी में राज्य कीया और हरिवंश प्रणाट कीया वो अच्छेरा जानना ।

8. **चमर उत्पात** - असुर कुमार चमरेन्द्र ने देवलोक में सोधर्मेन्द्र के पास जाकर उत्पात मचाया. शकेन्द्र ने गुस्से मे आकर वज्र फेंका तो चमरेन्द्र सूक्ष्म रुप बनाकर प्रभुवीर के चरणों में जाकर शरण स्वीकार कर लीया. शकेन्द्र को मालूम पडते ही चार अंगुल दूर सेही वज्र वापिस खींच लीया वीर प्रभु के चरणे होने से चमरेन्द्र की क्षमा मांगी एसा कभी होता नहि मगर हो गया वो आश्चर्य जानना **(भगवती सूत्र श. 2)**

9. **एक समय में उत्कृष्ट अवगाहनवाले का 108 सिद्ध** - 500 धनुष की अवगाहना वाले एक साथ दो जीव मोक्षमें जाते है मगर ऋषभदेव भगवान के शासन में उत्कृष्ट अवगाहनावाले भगवान के 99 पुत्र 8 पौत्र व प्रभु का एक साथ निर्वाण यानि एक साथ मोक्ष हुआ. उसी समय ऐरवत क्षेत्र के तीर्थंकर का निर्वाण हुआ. एसा कभी होता नहि मगर हो गया वो अच्छेरा **(ठाणांग सूत्र वृत्ति)**

10. **असंयमी की पूजा** - आरंभ व परिग्रह से युक्त असंयमी व्यक्ति पूजा व सत्कार के योग्य नहि है मगर इस अवसर्पिणी में शीतलनाथ तीर्थंकर के शासन में असंयमी की पूजा होने लगी वो भी एक आश्चर्य है ।

(ठाणांग सूत्र वृत्ति)

289. 500 हलका प्रमाण

- उपासक दशांग आगम मे प्रभुवीर के 10 श्रावको की बात बतायी है उसमें जब 500 हल प्रमाण क्षेत्र की मर्यादा बतायी है वो इस तरह

- 10 हाथ = 1 वांस	1 हल = 2000 वांस
- 20 हाथ = 1 निवर्तन	2000 वांस = 4000 धनुष
- 2000 वांस = 140 निवर्तन.	4000 धनुष = 2 कोष
- 100 निवर्तन = 1 हल	500 हल = 1000 कोष

1000 कोष = 7000 की.मी प्राय जानना.

290. चन्द्रगुप्त राजा के 16 स्थान स्वप्न का अर्थ

➡ चन्द्रगुप्त राजा जैन धर्मी था उन्होने एक बार पोषध धारण करके रात्रि में संथारा कीया तब 16 स्वप्न देखे. उस समय भद्रबाहु श्रुत केवली वहां पधारे और अपने मुख से 16 स्वप्न के अर्थ कहे.

1. **प्रथम स्वप्न** - कल्पवृक्ष की शाखा भांगी - आज के पास जो राजा होगा वो कभी संयम नहि लेगा.
2. **द्वितीय स्वप्न** - अकाले सूर्यास्त हुआ - मनः पर्यवज्ञान व केवलज्ञान का अस्त हुआ.
3. **तृतीय स्वप्न** - चालणी जैसा चंद्र - जैन धर्म में मत - मतांतर ज्यादा होंगे.
4. **चतुर्थ स्वप्न** - चौटे के उपर भूत नाचते है - दृष्टिरागी श्रावक कुगुरु की सेवा करेंगे.
5. **पांचवा स्वप्न** - बारफणवाला सर्पदेखा - बारह साल तक दुष्काल गिरेगा.

6. **छठ्ठा स्वप्न** - देव विमान वापिस आरहा है जंधाचारण - विद्याचरण साधुओ का विच्छेद होगा.

7. **सातवा स्वप्न** - उकरडे में कमल उत्पन्न हुआ. उंच नीच कुल का भेद भाव बढेगा.

8. **आठवा स्वप्न** - आगीया का प्रकाश दिखेगा - जेन धर्म का प्रभाव कम रहेगा.

9. **नवमां स्वप्न** - दक्षिण दिशामें सरोवर भरा हुआ देखा - दक्षिण प्रदेश में कुछ जैन धर्म रहेगा. जंहां जहां परमात्मा के कल्पाणक वहां वहां धर्म का विच्छेद होगा.

10. **दशवां स्वप्न** - सुवर्णथाली में कुत्ता खीर खा रहा है । - उत्तम घर की लक्ष्मी व कन्या नीच घर में जाएगी.

11. **अग्यारवां स्वप्न** - हाथी के उपर बंदर बैठा - मिथ्यामति वाला राजा बनकर जैन धर्म का विच्छेद करेगा.

12. **बारवां स्वप्न** - समुद्र मर्यादा छोड रहा है - ठाकुर नेता आदि जुठ सत्य बोलकर जूठा न्याय करेंगे, कुड व कपटी बनकर मर्यादा से बहार जायेगे.

13. **तेरवां स्वप्न** - बडा रथ बछडे से चलाया - वृद्धावस्था में संयम कम लेंगे बाल दीक्षा ज्यादा उसमें गुरु को छोडकर जानेवाले ज्यादा मिलेगें.

14. **चौदवा स्वप्न** - झांखे रत्न को देखा - मुनिवर गुण से युक्त कम मिलेंगे.

15. **पंदरवा स्वप्न** - राजकुमार वृषभ उपर बैठेंगे - सगे संबंधी के साथ प्रेमभाव वेरभाव बढेगा व मित्र के साथ प्रेमभाव बढेगा.

16. **सोलवां स्वप्न** - काले हाथी झघडते दिखेंगे - संयमी ओ परस्पर झघडा करेंगे - बनीये व्यापार में कपट करेंगे मगर पेट नहि भरेंगे ।

(ज्ञान विमल सूरि)

291. आगम-ग्रंथ को पढने हेतु 14 संख्या का परिणाम

1. **पर्यवसंख्या :** पर्याय एवं गुण की संख्या ।
2. **अक्षर संख्या :** अकार आदि अक्षरो की संख्या-गणना । जैसे नवकार मंत्र के 68 अक्षर है ।
3. **संघातसंख्या :** दो अक्षर के संयोग को संघात कहते है उसकी गिनती ।
4. **पद संख्या :** क्रियापद अंत में हो वैसे पदो की संख्या, उसकी गिनती ।
5. **पाद संख्या :** श्लोक के चतुर्थ भाग को पाद कहते है उसकी गिनती ।
6. **गाथा संख्या :** प्राकृत भाषा में लिखे हुए छंद वो गाथा उसकी गिनती ।
7. **श्लोक संख्या :** संस्कृत भाषा में लिखे हुए छंद वो श्लोक, उसकी गिनती ।
8. **वेष्टक संख्या :** दो-चार-छ श्लोक के साथ वाक्य की पूर्ति करना ।
9. **निर्युक्ति संख्या :** युक्तिपूर्वक निश्चय करना या शब्दो की व्युत्पत्तिपरक व्याख्या ।
10. **अनुयोगद्वार संख्या :** सूत्र के साथ अर्थ का जोडाण होना वो अनुयोग ।
11. **उद्देशक संख्या :** विषयो की विभाजित करना ।
12. **अध्ययन संख्या :** संपूर्ण विषय का एक भाग । इस सभी विषयो को विभाजीत करना जैसे ज्ञाताधर्म कथा के 19 अध्ययन ।
13. **श्रुतस्कंधन संख्या :** अध्ययन का समूह वो श्रुत स्कंध - उसका विभाजित करना । जैसे आचारांग सूत्र ।
14. **अंग संख्या :** गणधरो द्वारा रचित आगम की रचना वो अंग ।

(अनुयोगद्वार सूत्र)

292. सूत्र बोलने समय 32 दोष का त्याग

1. **अलीक दोष** - सूत्र में असत्य वचन बोलेतो.
2. **उपघात जनक दोष** - पीडा उत्पन्न हो जाय एसा वचन बोलेतो.
3. **निरर्थक दोष** - जरुर बिना ज्यादा बोले तो.
4. **अपार्थक दोष** - असंबद्ध अर्थवाचक शब्द बोले तो.
5. **छल दोष** - माया युक्त शब्द बोले तो.
6. **कहित दोष** - पाप व्यापार पोषक युक्त सूत्र शब्द बोले तो.
7. **निस्सार वचन दोष** - युक्ति बिना सार विना के शब्द बोले तो.
8. **अधिक नयन दोष** - जो सूत्र के शब्द बताये उससे ज्यादा बोले तो.
9. **उनदोष** - जो सूत्र के शब्द बताये उसमें कुछ कम बोले तो.
10. **पुनरुक्त दोष** - एक शब्द को बार बार बोले तो.
11. **व्याछत दोष** - पूर्व वचन से उत्तरवचन का भंग करे तो.
12. **अभ्रक्त दोष** - सूत्र को मनमें न रखकर कुछ ने कुछ बोले तो.
13. **क्रमभिन्न दोष** - जो क्रम बताया है उनको छोडकर बोले तो.
14. **वचन भिन्न दोष** - जो वचन बताया है उसमें से हिन वचन - बहुवचन बोले तो.
15. **विभक्ति भिन्न दोष** - सूत्र की प्रथमा आदि विभक्ति है उससे भिन्न बोले तो.
16. **लिंग भिन्न दोष** - पुलिंग स्त्रीलिंग के उपयोग बिना बोले तो.
17. **अनभिक्त दोष** - स्व सिद्धांत में जो पदार्थ नहि है उसका उपदेश दे तो.
18. **अपदोष** - स्वर - व्यंजन, अनुस्वार के उपयोग बिना बोले तो.

19. **स्वभाव हीन दोष** - आत्म स्वरुप की रमणता छोडकर बोले तो.
20. **व्यवहित हिन दोष** - जिसकी व्याख्या करनी है उसको छोडकर अन्य व्याख्या करे तो.
21. **कालदोष** - सूत्र का स्वाध्याय काल वेला में करे तो.
22. **यतिदोष** - अनुचित स्थान पर विराम लेना रुके तो.
23. **छविदोष** - अलंकार - काव्यालंकार के उपयोग बिना बोले तो.
24. **समय विरुद्ध दोष** - आगम विरुध सूत्र उच्चार करे तो.
25. **वचन मात्र दोष** - अशुद्ध उच्चार से सूत्र बोले तो.
26. **अर्थापति दोष** - सूत्र बोलते समय अर्थका उपयोग न रहेतो.
27. **असमास दोष** - समास का ध्यान दिये बिना बोले तो.
28. **उपमा दोष** - शास्त्र कार ने जो उपमा दी है उनको छोडकर बोले तो.
29. **रुपक दोष** - जो सूत्र का अर्थ बताया है उसी तरह न विचारे तो.
30. **निर्देष दोष** - शास्त्र आज्ञा विरुद्ध बोले तो.
31. **पदार्थ दोष** - जो सूत्र के पदार्थ बताये है उन पदार्थ को छोडकर उपयोग करे तो.
32. **संधि दोष** - संधि आदि का ध्यान दिये बिना न बोलेतो.

(अनुयोग द्वार सूत्र)

293. सूत्र के आठगुण

1. निर्दोष
2. सारवाला
3. हेतु युक्त
4. अलंकार युक्त
5. उपनीत (दृष्टांत)
6. सविचार
7. मित.
8. मधुर

(अनुयोग सूत्र)

294. सूत्र शिखने के छ लक्षण

1. **संहिता** - पद का स्पष्ट उच्चार वो संहिता सूत्र प्राकृत व संस्कृत में होते है बोंलते समय ह्रस्व दीर्ध अनुस्वार आदि का ध्यान रखना चाहिए.
2. **पद** - एक एक पद को स्पष्ट रुप से बोलना जैसे नमुत्थुणं, अरिहंताणं.
3. **पदविग्रह** - पद में सामासिक विग्रह है उन सामासिक पद को अलग करके बोलना.
4. **पदार्थ** - अलग होने वाले पदो का अर्थ विचारणा करना. नमो - नमस्कार त्थुणं थाओ.
5. **चालना** - जिज्ञासावृत्ति से प्रश्न उठाकर जानकारी प्राप्त करना.
6. **प्रत्यव स्थान** - प्रश्न का सही समाधान द्वारा पद का तात्पर्य जानना

(अनुयोग द्वार सूत्र)

295. सूत्र उच्चार के १७ गुण

1. **शिक्षितम्** - सूत्र का अभ्यास करते समय शब्द व अर्थ साथ में करना.
2. **स्थितम्** - शिखने के बाद भूल न जाय स्वाध्याय द्वारा स्थिर करना.
3. **जितम्** - सूत्र के आदि से अंत तक रुके बिना बोलना.
4. **मितम्** - सूत्र के पद-संपदा-गुरु-लधु अक्षर का ध्यान देकर बोलना.
5. **परिजितम्** - आनुपूर्व्वी, पश्चानुपूर्न्वी द्वारा स्वाध्याय करना यानि प्रथम शब्द से अंतिमपद तक अंतिम से प्रथम पद तक
6. **नामसमम्** - अपने नाम की तरह सूत्र को याद करना.
7. **घोषसमम्** - उदात्त, अनुदात्त, स्वरित तीन प्रकार के घोष है उसको शुद्ध उच्चार के साथ घोष पूर्वक बोलना.

8. **अहीनोक्षरम्** - सूत्र एवं पद में एकभी अक्षर रहना नहि चाहिये.
9. **अनत्यक्षरम्** - सूत्र में जितने अक्षर है उतने ही बोलना ज्यादा नहि.
10. **अव्याविद्धाक्षरम्** - टेडे-मेडे मरोड कीये बिना शुद्धस्पष्ट अक्षर बोलना.
11. **अस्खलितम्** - जहां पर रुकने का है वहां पर रुक के बोलना.
12. **अमिलितम्** - सूत्र के एक दूसरे अक्षर को इक्कट्ठा नहि करना.
13. **अव्यत्याम्रिड़ितम्** - सूत्र को बहोत मरोड व मार के नहि बोलना मगर आगे पीछे कीये बिना क्रम पूर्वक बोलना ।
14. **प्रतिपूर्णम्** - सूत्र के शब्द - अक्षर - ह्रस्व - दीर्घ का ध्यान देकर पूर्ण अक्षर बोलना॥
15. **प्रतिपूर्ण घोषम्** - जब स्वाध्याय करो तब भी शब्द का उच्चार स्पष्ट रुप से बोनना (जोर सें) घोष मे नये सूत्र की बात है इसमे स्वाध्याय.
16. **कंठोष्ठ विप्रमुक्तम्** - गले व होठ को खुल्ला रखकर कंठ्य वर्ग का उच्चार बराबर करना. तालव्य, दन्त्य, मूर्धन्य, ओष्ठय आदि के स्थानो से उच्चार बोलना.
17. **गुरुवाचनोपगतम्** - गुरु के पास विनम्रपूर्वक वाचना सूत्र बोलना ।

(अनुयोगद्वार सूत्र)

296. इहलोक विरुद्ध कार्य का त्याग

1. सभी जनो की निंदा
2. गुण समृद्ध आचार्यादि की निंदा.
3. लोक में पूजनीय राजा-मंत्री आदि की निंदा

4. सभीजन विरुद्ध लोगो की निंदा.
5. देश, जाति, कुल आदि उत्तम मर्यादा का उल्लंघन
6. उद्‌भट वेष उद्‌भट भोगो का धारण.
7. दानादि कार्यो को बहोत प्रसिद्ध करना.
8. उत्तम पुरुषो की पीडा में आनंद लेना.
9. शक्ति - सामर्थ्य धर्मी व्यक्ति की मजाक करना.

(जय वीयराय सूत्र)

297. 24 दंडक के नाम

1. सात नारकी के जीवो का एक दंडक 1
2. दश भवनपति देवो के दश दंडक..... 10
3. पांच स्थावर काय के पांच दंडक..... 5
4. तीन विकलेन्द्रिय के तीन दंडक 3
5. तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय जीवो का एक दंडक..... 1
6. गर्भज मनुष्य का एक दंडक 1
7. वाणव्यंतर देवो का एक दंडक 1
8. ज्योतिष, देवो का एक दंडक..... 1
9. वैमानिक देवो का एक दंडक..... 1

कुल दंडक.....24

➡ चोवीश दंडक को दूर करने हेतु 24 अंगुल की डंडी रखी जाती है.

(भगवती सूत्र नैरयिक अ.)

298. वृक्ष के 10 विभाग धर्म के 10 गुणो से संयोजित

1.	मूल	–	विनय
2.	कंद	–	धीरजता
3.	स्कंध	–	ज्ञान
4.	त्वचा	–	शुभभाव
5.	शाखा	–	अनुकंपा
6.	प्रतिशाखा	–	महाव्रत की भावना
7.	पल्लव	–	धर्मध्यान
8.	पत्रो	–	निर्लोभता क्षमा
9.	पुष्पो	–	वासना का नाश
10.	फल	–	मोक्षफल

(दशवैकालिक सूत्र)

299. आगम पंचांगी की भावना

1. **मूलसूत्र** – गणधर भगवंत रचित अंगसूत्र तीर्थंकर शिष्य रचित पयन्ना सूत्र विशिष्ट पूर्वधर आदि महापुरुषो द्वारा रचित
उपांग मूलसूत्र चूलिका आदि जो प्राकृत भाषा में है सूत्र, अध्ययन श्रुतस्कंध आदि सभी मूलसूत्र कहलाते है ।

2. **टीका** – टीका का निर्माण संस्कृत भाषा में होता है गणधर भगवंत व पूर्वधर रचित आगम ग्रंथो के उपर सरलभाषा में विस्तार करना वो ही टीका. जैसे अंग की टीका अभयदेवसूरिने की. और बाकी के ग्रंथ – आगम की टीका मलयगिरिजी, हरिभद्र सूरिजी, शांतिसूरि आदि विद्वान आचार्यो ने टीका बनायी है. टीका – वृत्ति – विवृत्ति– विवेचन –

विवरण - व्याख्या - वार्तिक - दीपीका - अवचूरि - पंजीका आदि विविध नाम टीका के बनाये है ।

3. **निर्युक्ति** - युक्ति के साथ व्याख्या का निश्चय करना वो निर्युक्ति. निर्युक्ति को व्याख्या शैली निक्षेप पद्धति उपर आधारित है. एक पद के जितने अर्थ होते है उतने बताकर उसमें ग्राह्य अर्थ का सूचन करके अप्रस्तुत का निरासन भी करने में आता है. निर्युक्ति के रचयिता भद्रबाहुस्वामी पूर्वधर कहलाते है ।

4. **भाष्य** - सूत्र के गूढ रहस्य को स्पष्ट करने के लिये थोडे विस्तार के साथ प्राकृत भाषा में पद्यात्मक व्याख्या लिखनेमें आए उसको भाष्य कहते हैं जैसे हरिभद्र सूरि, शांतिसूरि, संधदास गणि आदि भाष्य रचने में प्रसिद्ध है ।

5. **चूर्णि** - संस्कृत मिश्रीत प्राकृत में गद्यात्मक व्याख्या लिखने में आये उसको चूर्णि कहते है इस साहित्य अनेक दृष्टांत एवं कथाओ के माध्यम द्वारा मूल विषय को स्पष्ट करने में आता है. जिनदासगणि, अगस्त्यसिंह स्थविर, पुण्यविजयजी आदि चूर्णीकार है.

6. **टबा** - 18 वी शताब्दि में हो गये है एसे ज्ञानविमलसूरि पायचंदसूरि आदि भगवंतो ने गुजराती व राजस्थानी मिश्र भाषा में टबाओ की रचना की थी संस्कृत - प्राकृत जो श्लोक होते है उनके नीचे प्रचलित अर्थ स्थानिक भाषा में लिखना वो टबा

7. **बालावबोध** - जो प्राकृत संस्कृत श्लोक होते है उनमें बाल जीव भी समज में आ जाए इस तरह सरलभाषा में मिश्र भाषा में मारवाडी भाषा में रचना होती है वो बालावबोध सोमसुंदरसूरिजी, ज्ञानविमलसूरिजी आदि ने उपदेशमाला आदि का बालावबोध रचा था.

300. आगमो के उपनाम

1. **गमिकश्रुत** - जिस श्रुत में आदि मध्यम व अंत में विशेषता के साथ वापिस उसी शब्दो का वाक्य का उच्चारण करना जैसे-पक्खीसूत्र ।
2. **अगमिकश्रुत** - जिसके पाठ एक जैसे न हो समान वाक्य की जिसमें बहुलता न हो वो अगमिकश्रुत जैसे - आचारांगसूत्र
3. **अंगप्रविष्ट** - गणधर भगवंतोने जिसकी रचना की है वो अंग प्रविष्ट आचारांग से दृष्टिवाद तक.
4. **अंगबाह्य** - अंग बिना के जो भी आगम है वो उपांग जो अंगबाह्य कहलाते है स्थविर - पूर्वाचार्य आदि उनकी रचना करते है.
5. **पयन्नासंग्रह** - प्रत्येक तीर्थंकर के शिष्य पयन्ना की रचना करते है जैसे प्रभुवीर के 14000 शिष्य थे तो 14000 पयन्ना रचे थे. सभी 45 आगम में 10 पयन्ना प्रसिद्ध है चतु:शरण पयन्ना की रचना वीरप्रभु के शिष्य वीरभद्र गणि क्षमाग्रमण ने की है.

301. अरिहंत परमात्मा की चार उपमाएँ

1. **महागोप** - छ काय स्वरुप गोकुल समूह को पालने वाले होने से.
2. **महामाण** - जगत में दया का पडह बजाने वाले होने से जगत के ज्ञात ।
3. **महानिर्यामक** - संसार समूह से पार उतारने वाले होने से भाव निर्यामक ।
4. **महासार्थवाह** - जगत के जीवो को मोक्षमार्ग बताने वाले होने से

302. महाविदेह में जघन्य - उत्कृष्ट तीर्थंकर संख्या ।

➡ महाविदेह क्षेत्र में जधन्य से बीस तीर्थंकर होते है उन तीर्थंकरो का जन

एक लाख पूर्व का समय जब पूर्ण होता है तब दूसरे तीर्थंकर का जन्म या च्यवन कल्याणक होता है इस तरह 84 पूर्व के आयुष्य में 84 तीर्थंकर दूसरे होते है इस तरह 84 × 20 विहरमान गुनने से 1680 तीर्थंकर होते है जिस समय उत्कृष्ट से 170 तीर्थंकर गिने जाए तो 160 × 84 13.340 तीर्थंकर होते है उसमें भी पांच भरत पांच एरवत क्षेत्र 10 तीर्थंकर को साथ में जोडते 13450 उत्कृष्ट तीर्थंकर होते है ।

(अढीद्वीप नक्सा हकीकत)

303. महाविदेह में सहचारी 84 तीर्थंकर की परंपरा

- वीश विहरमान का जन्म कुंथुनाथ व अरनाथ स्वामी के बीच में होगा.
- वीश विहरमान की दीक्षा मुनिसुव्रतस्वामी व नमिनाथ के बीच में हुयी थी.
- वीश विहरमान 1000 साल तक छद्मस्थ अवस्था पूर्ण करके एक साथ केवलज्ञान को प्राप्त करते है.
- वीश विहरमान आगामी चोवीशी में सातवे व आठवे उदय के समय में पेढाल तीर्थंकर के शासन में मोक्ष प्राप्त करेंगे.
- प्रत्येक विहरमान की 500 धनुष काया 84 गणधर, 10 लाख केवली 10 करोड साधु 100 करोड साध्वीजी का परिवार है ।
- महाविदेह के वीस विजय में एक एक तीर्थंकर के साथ दूसरे 83 सहचारी तीर्थंकर मिल के 84 तीर्थंकर के जीव वहां पर मौजूद है उसमे एक तीर्थंकर के जीव को केवलज्ञान व बाकी के 83 वें तीर्थंकर में कोई राजा, कोई युवान, कोई बाल इस तरह विविध अवस्था में मौजूद है सभी का आयुष्य 83 लाख पूर्वका है.

➡ चौराशी तीर्थकर में से जब एक का मोक्ष गमन होता है तब 83 वें तीर्थंकर को केवलज्ञान होता है. उस समय इनका नाम 84 तीर्थंकर में सम्मिलित होता है. क्योंकि उसी समय एक तीर्थंकर का जन्म होता है इसी तरह 84 की संख्या वहां पर फिक्स रहती है बीस विजय के ये शाश्वत भाव इसी प्रकार के होते है इसलिये महाविदेह में एकसाथ 84 तीर्थंकर होते हैं तत्व केवलिगाम्य । **(अढीद्वीप नक्सा)**

304. सीमंधरस्वामी की मुख्य विशेषता

1. सीमंधरस्वामी का जन्म उतराषाढा नक्षत्र व धनु राशि है.
2. इनके शरीर की उंचार 500 धनुष की व लंछन वृषभ है.
3. इनका आयुष्य 84 लाख पूर्व व रुप असाधारण है.
4. इनकी शादी रुकमणी के साथ हुयी व 83 लाख पूर्व तक स्वयं गृहस्थावस्था में रहे.
5. इनके शासन में महाव्रत की संस्था चार है व वस्त्र विचित्र होते है.
6. इनके श्रमण को राजपिंड कल्पता है तपस्या का प्रमाण आठ मास है.
7. इनके परिवार में 100 क्रोड साधु 10 क्रोड साध्वी व 10 लाख केवली है.
8. सीमंधर स्वामी जिस नगरी में है उनको छोडकर दूसरी सात नगरी में आज भी तीर्थंकर है.
9. उनकी अंतिम अंगुली में अनंत इन्द्रो का बल होता है ।
10. सीमंधर स्वामि आदि वीश विहरमान का कल्याणक
    1. च्यवन कल्याणक - अषाढ वद -1
    2. जन्म कल्याणक - चैत्र वद - 10

3. दीक्षा कल्याणक - फागण सुद - 3
4. केवालज्ञान कल्याणक - चैत्र सुद - 13
5. निर्वाण कल्याणक - श्रावण सुद - 3

एक पूर्व के कितने साल ?

➠ चोराशी लाख को चोराशी लाख से गुणाकार करने से एक पूर्व होता है 84.00.00 × 84.00.000 = 70.450.00.00.00000 यानि सित्तेर लाख क्रोड, छप्पन हजार क्रोड वर्ष का एक पूर्व होता है ।

305. चौद पूर्वी भी अनंत भव कर सकते है

➠ **सुअकेवली आहाराग** - उज्जुमइ उवसंतगावि उपमाया । हिडंति भवमणंतं तदनंतर मेव चउ गइया ॥1॥

➠ **भावार्थ :** श्रुतकेवली आहारकलब्धिवाले रुजुमति मनःह पर्यव ज्ञानी व उपशांत मोह (यानि ॥ गुण ठाणा वाले) प्रमाद के योग से उसी भव के पश्चात् चारो गतिमे होकर अनंत भव भ्रमण करते है ।

(गुण स्थानक क्रमारोह)

306. विजय देवसूरि का इतिहास

➠ **जन्मस्थान** - इडर (गुजरात) वि. सं. 1634 पो. सुद - 13

➠ **माता** - रुपादेवी - पिता - थीराशेठ

➠ **पुत्र** - वासण

➠ **दादागुरु** - जगतगुरु हीर सूरीश्वरजी म.सा.

➠ **गुरुदेव** - आचार्य देव श्री विजयसेनसूरिजी

- **दीक्षा** - वि. स. 1643 पाटण - 9 साल की उम्र
- **आचार्यपद** - सं. 1656 खंभात 700 मुनिवरो की हाजरी
- **भट्टारकपद** - सं. 1657 पाटण - पारेख सहस्त्रवीर ने 50.000 द्रव्य को खर्चा.
- **महातपा विरुद** - सं. 1674 मांडवगढ जहांगीर बादशाह ने परीक्षा करके महातपा का विरुद्र अर्पण कीया.
- **तप** - प्रतिदिन एकासणा का तप 15 द्रव्य द्वारा.
- **स्वाध्याय** - संयम जीवन काल में 5 करोड गाथा का स्वाध्याय.
- **शासनदेव** - अढारा शासनदेव इनकी सेवा में हाजर थे.
- **प्रवचन** - सूरिपद के समय शांतिनाथ परमात्मा के पांच गुणो का विवेचन यानि सकलकुशलवल्ली की रचना.
- **परिवार** - 25 उपाध्याय, 500 पंन्यास, 2500 साधुओ, 500 साध्वीजी, सातलाख श्रावक श्राविका.
- **साधर्मिक वात्सल्य** - आचार्य भगवंत की प्रेरणासे 1.59.000 श्रावको को भोजन कराया.
- **गुरुभक्ति** - गुरुदेव की प्रेरणा से गोरधनदास श्रावक ने 84 गच्छ के साधु - साध्वीजी की भक्ति की थी.
- **प्रतिष्ठा** - शत्रुंजय महातीर्थ के उपर आदीश्वर दादा के जिनालय पास श्रीमाली वाछा ने प्रतिष्ठा करायी थी. उसके पश्चात पाटण, खंभात, अंतरीक्षजी बीजापुर (कर्ना.) सालडी, इडर, मेडता, सोनगढ, नडियाद आदि अनेक गांवो में प्रतिष्ठा करायी थी.
- **स्वर्गवास** - वि.स. 1713 अषाढसुद - 11 उण (गुजरात)

307. बीजापुर (कर्णाटक) का प्राचीन इतिहास

- बीजापुर का पूर्वे विंध्यनगर नाम था. आचार्य देव श्री विजय देव सूरिजी विहार करते बीजापुर में पधारे थे.
- वि. सं. 1687 से 1692 के बीच में चार चातुर्मास बीजापुर एक औरंगाबाद व एक बुरहानपुर में कीया.
- बादशाह इदलशाह ने देवसूरि को बीजापुर में बहोत समय रुकाकर उनकी प्रेरणा से गोवध - हिंसा आदि बंध कराये.
- आचार्य देवसूरिजी, आचार्य सिंहसूरिजी दोनो आचार्य ने बीजापुर में प्रथ प्रतिष्ठा 1697 के आसपास करायी थी. बीजापुर के श्रावक वीरचंद वेलचंद के पुत्र देवचंद ने प्रतिष्ठा में 16000 द्रव्य का व्यय कीया था.
- वि. स. 1697 में दूसरी प्रतिष्ठा बीजापुर में व तीसरी प्रतिष्ठा 1701 में करायी. उस समय देवचंद श्रावक ने 8000 द्रव्य का व्यय कीया था.
- आचार्य देव श्री विजयप्रभसूरि की पन्यास पदवी बीजापुर में हुयी थी.
- आचार्य देवसूरिजी बीजापुर संध के साथ कराड पार्श्वनाथ व कलिकुंड पार्श्वनाथ की यात्रा की थी ।
- दक्षिण्यांच कन्नडी बिजापुरे पुरे तथ । प्रतीच्यां च कच्छ देशे. प्रतिष्ठा येन निर्मम ॥ **(विजयप्रशस्ति)**

308. विजय देवसूरिके शिष्यभाव विजयजी

- **पिता** - राजमलजी ओसवाल
- **माता** - मूलीबाई राजमलजी

- **पुत्र** - भानीराम राजमलजी
- **जन्म** - वि. सं. 1645 सांचोर (राजस्थान)
- **गुरु** - आचार्य देव श्री विजयदेवसूरिजी
- **दीक्षानाम** - मुनि जी भावविजयजी
- **उपद्रव** - जोधपुर से पाटण की तरफ जाते समय भयंकर गर्मी के कारण आंखो की रोशनी चली गई.
- **स्थिरता** - पाटण में स्थिरवास कीया गुरु ने जो जाप दिया वो चालू रखा.
- **देव प्रसन्न** - जाप के प्रभाव से देव ने स्वप्न में अंतरीक्षजी तीर्थ का महिमा बताया.
- **विहार** - संध के साथ अंतरीक्षजी पहोंचकर अट्ठम का तप व स्तुति की आंखो की रोशनी वापिस आ गई.
- **जीर्णोद्धार** - अंतरीक्षजी में रहकर जिनालय का जीर्णोद्वार कराया.
- **विहार** - वहां से विहार करके बिजापुर पधारे चातुर्मास कीया वि.स. 1708 आसोसुद - 10 के दिन बीजापुर में चंपकमाला चरित्र की रचना की ।
- **प्रतिष्ठा** - वहां से विहार करके अंतरीक्षजी पहोंचे वि.सं. 1715 में वहां की प्रतिष्ठा करवायी. देवसूरीजी व भावविजयजी की चरण पादुका वहां स्थापना की.
- **ग्रंथरचना** - उतराध्ययन सूत्र की टीका रची.
- अंतरीक्ष पार्श्वनाथ की प्रथम प्रतिष्ठा मलधारी अभयदेवसूरिने करायी थी ।

(जैन परंपरा इति भा. 4)

➡ वि.सं. 2071 में श्री बुद्धि-तिलक-शांतिचंद्रसूरि समुदाय के आचार्य देवश्री रत्नाकरसूरिजी की निश्रामें उपाध्यायश्री रत्नत्रय विजयजी म.सा. की प्रेरणा से बीजापुर संघ के रत्न मुनि श्री रत्नदर्शनविजयजी के हाथो से कोल्हापुर चातुर्मास में श्री बीजापुर जैन संघ (कर्नाटक) को मुनि श्री भावविजयजी रचित चंपकमालाचरित्र हस्तलिखित में लिखाकर अर्पण किया था । जो चरित्र आजभी बीजापुर संघ के पास मौजूद है ।

309. कौन से संघयण वाले कौन सी नरक में

1.	वज्रऋषभ नाराच	- मोक्ष तक	- सातवी नरक
2.	ऋषभनाराच	- अच्चुत देवलोक	- छठी नरक
3.	नाराच	- प्राणत देवलोक	- पांचवी नरक
4.	अर्धनाराच	- सहस्रार देवलोक	- चोथी नरक
5.	कीलीका	- लांतक देवलोक	- तीसरी नरक
6.	छेवट्ठु	- प्रथम चार देवलोक	- प्रथम नरक

310. चोसठ इन्द्र के नाम

भवनपति देव - 20

1-2	असुरकुमार	-	चरम व बलि
3-4	नागकुमार	-	धारण व भूतानंद
5-6	विद्युत्कुमार	-	हरि व हरिषद
7-8	सुवर्णकुमार	-	वेणुदेव व वेणुदाहि
9-10	अग्निकुमार	-	अग्निशिख व अग्नि महाषक
11-12	वायुकुमार	-	वेलब व प्रभंजन
13-14	स्तनितकुमार	-	सुघोष व महाघोष

15-16 उदधिकुमार - जलकांत व जलप्रभ

17-18 द्वीपकुमार - पूर्ण व वरिष्ठ

19-20 दिक्कुमार - अमितगति व अमितवाहन

➡ दो श्रेणी के दो दो इन्द्र होने से भवनपति के 20 इन्द्र हुए.

व्यंतर के 16 इन्द्र

21-22 किन्नर - किन्नर व किंपुरिस

23-24 किंपुरुष - सत्पुरुष व महापुरुष

25-26 महारोग - अतिकाय व महाकाय

27-28 गांधर्व - गीतरति व गीतयश

29-30 यक्ष - पूर्णभद्र व माणिभद्र

31-32 राक्षस - भीम व महाभीम

33-34 भूत - सुरुप व प्रतिरुप

35-36 पिशाच - काल व महाकाल

वाण व्यंतर के 16 इन्द्र

37-38	अप्रज्ञप्तिक	-	अन्निदित	-	समान
39-40	पंच प्रज्ञासिक	-	धाता	-	विधाता
41-42	ऋषिवाहित	-	ऋषि	-	ऋषिपाल
43-44	भूत वाहित	-	इश्वर	-	महेश्वर
45-46	कंदित	-	सुवत्स	-	विशाल
47-48	महाकंदित	-	हास	-	हारदति

49-50	कुष्मांड	-	श्वेत	-	महाश्वेत
51-52	पतक	-	पताक	-	पतकपति

ज्योतिष के दो इन्द्र

53 चन्द्र : चन्द्र-सूर्य असंख्य है उसके देव भी

54 सूर्य : असंख्य है मगर इधर दो गिने गये है

वैमानिक के 10 इन्द्र

55	सौधर्मेन्द्र	56	इशानेन्द्र
57	सनत्कुमार	58	माहेन्द्र
59	ब्रह्मलोक	60	लांतक
61	महाशुक्र	62	सहस्त्रार
63	प्राणतेन्द्र	64	अच्युतेन्द्र

कुल - भवनपति के - 20

व्यंतर के - 16

वाणव्यंतर के - 16

ज्योतिष के - 2

वैमानिक के - 10

कुल 64 इन्द्र

311. प्रमाद के आठ प्रकार

➡ **प्रमादऽज्ञान संशय, विपर्यय रागद्वेष स्मृतिभ्रंश ।**
योगदुष्प्रणिधान, धर्मानादरभेदा दशविधः ॥

1. **अज्ञान** - हिताहित विवेचन शक्ति का अभाव
2. **संशय** - शुभ प्रवृत्ति के अंतिम परिणाम में संदेह
3. **विपर्यय** - ध्येय - उद्देश्य का विस्मरण
4. **राग** - नाशवंत पदार्थो के उपर आसकित भाव
5. **द्वेष** - पौदगलिक पदार्थो के कारण मनोव्याक्षेप
6. **स्मृति भ्रंश** - मानसिक धारणा का अभाव
7. **योग दुष्प्रणिधान** - मन - वचन - काया की अशुभप्रवृति
8. **धर्मानादर** - साधना करने योग्य हितकारी प्रवृत्ति तरफ बेदरकारी

(योगशास्त्रवृत्ति)

312. प्रमाद के पांच प्रकार

मज्जं विषय-कषाया-निद्रा विकहा पंचमी भणिया ।
ए ए पंच पमाया, पाडंति घोर संसारे ॥

1. **मद्य** - कीसी भी पदार्थ का व्यसन के रुप में गाढ आसक्ति का सेवन
2. **विषय** - इन्द्रिय को पुष्ट करने वाली वृत्ति का सेवन.
3. **कषाय** - कर्म बंधन को गाढ करने वाली मोहधेलछाभरी वृत्ति.
4. **निद्रा** - इन्द्रिय व मन की सुस्ती भरी प्रवृत्ति
5. **विकथा** - चार प्रकारकी कथा में आसक्त बनना। **(सूयगडांग टीका)**

313. प्रमाद व वीर्य की व्याख्या

पमायं कम्म माहंसु, अप्पमायं तहाऽवरं ।
तब्भावादेसओवावि, बालं पंडियमेव वा ॥

➡ **भावार्थ :** सूयगडांग आगम के वीर्याधिकार में प्रमाद को कर्म व अप्रमाद को अकर्म कहा है प्रमाद से बालवीर्य व अप्रमाद से पंडितवीर्य उत्पन्न होता है पांच प्रकार के प्रमाद से युक्त वो बालवीर्य जो अप्रमादी है और पंडितवीर्य कर्म तोडनेवाला है अभव्य का बालवीर्य अनादि अनंत और भव्य जीवो का बालवीर्य अनादि सांत व पंडितवीर्य सादिसांत कहा है।

➡ **नेयाउयं सुयक्खायं, उवादाय समीहिए ।**
भुज्जो भुज्जो दुहावासं, असुहत्तं तहा तहा ॥

➡ **भावार्थ :** तीर्थकरो ने ज्ञान - दर्शन - चारित्र को नेता कहा है विद्वान पुरुषो इसमें उद्यम करते है बालवीर्य जैसे जैसे बढता जाता है वैसे दुःख बढता है ।

➡ हेय उपोदय की बुद्धि जिसमें रही है वो पंडितवीर्य.

➡ प्रमाद में जिसकी प्रीति है वो बालवीर्य. ।

314. शादी के प्रसंग में श्रावक को क्या करना ?

विवाह व्ययाद्यनुसारेण च सादरं स्नात्रमह-महापूजा रसवती ढोकन चतुर्विध संघ सत्कारद्यपि सत्यापयेद भवहेतु विवाहदेरप्येवं पुण्यैं सफली भवनात् ।

➡ **भावार्थ :** - जितना खर्च शादी में होता है उसी तरह आदरपूर्वक स्नात्र महोत्सव, शांतिस्नात्र महापूजा, रसोई का थाल, चतुर्विध संघ का सत्कार, आदि अनुष्ठान कराना चाहिए जिसके कारण अपनी बुद्धि संसार की वृद्धि न बनकर धर्म की वृद्धि में जीवन पूर्ण होना चाहिए ।(**श्राद्ध विधी**)

315. कठोर वचन का त्याग ।

➡ **फरुसवयणाभिआंगो न संजओ सुद्ध धम्माणं ।**
फरुस वयणेण दिन तवं, अद्विक्खिवंतो वि हणइ मासतवं ।
वरिस तवं सवमानो, हणइ हणन्तोऽवि सामन्तं ॥

➡ **भावार्थ :** - कठोर वचन द्वारा आज्ञा करना वो शुद्ध धर्मवाले के लिए योग्य नहि है साधु या श्रावक दोनो के लिये अयोग्य है क्यों कि इससे अपने धर्म की लघुता होती है ।

➡ कठोर वचन के द्वारा एक दिन का तप नाश होता है.

➡ आक्षेप करने से एक मास का तप नाश होता है.

➡ श्राप देने से एक साल का तप नाश होता है.

उपाध्याय यशोविजयजी म.सा. 350 गाथा के स्तवन में कहते है कठोर वचन नुं जल्पन जेह धर्मीने नहि सम्मत नेह गौतम रास में भी कहा है उत्तम मुखे मधुरी भाषा श्रमण या श्रावक जीवन को उज्जवल बनाने हेतु कठोर वचनका त्याग.

316. तंदुलिया मच्छयानि क्या ?

➡ तंदुलिया मच्छ की काया चावल के दाणे जितनी होती है वो सातवी नरक में से निकलकर 500 योजनप्रमाण मछ्ले के आंख के पांपण में उत्पन्न होता है जब बडा मच्छ अपने मुख में से बहोत सारे माछ्ले को छोड देता है उस समय तंदुलिया मच्छ विचार करता है कि इस स्थान पर मैं होता तो एकभी मच्छ जाने नहि देता. एसी हिंसक भावना से अंतर्मुहर्त समय में आयुष्य पूर्ण करके सातवी नरक में जाता है. तंदुलीया मच्छ गर्भज संज्ञि पंचेन्द्रिय होता है प्रथम संधयण व प्रथम संस्थान होता

है. यह तंदुलीयामच्छ सातवीनरक में 33 सागरोपम प्रमाण आयुष्य पूर्ण करके मच्छ बन के वापिस सातवी नरक में जाता है इस तरह 66 सागरोपम नरक का आयु भोगवता है यानि कितना दुःख सहन करता है ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बंध मोक्षयोः ।

क्षणेन सप्तमीं याति, जीवस्तण्डुल मत्स्यवत् ॥

➡ भावार्थ : मानव का मन बंध एवं मोक्ष का कारण है क्यों कि तंदुलीया मत्स्य मानसिक दुःख के कारण अंतःमुहर्त में वापिस सातवी नरक में जाता है । **(उपदेशमाला टीका)**

317. परमात्मा के अशोक वृक्ष की उंचाई

	नाम	काया	अशोक वृक्ष
1.	ऋषभदेव	500 धनुष	6000 धनुष
2.	अजितनाथ	450 धनुष	5.400 धनुष
3.	संभवनाथ	400 धनुष	4.800 धनुष
4.	अभिनंदनस्वामी	350 धनुष	4.200 धनुष
5.	सुमितनाथ	300 धनुष	3.600 धनुष
6.	पद्मप्रभ स्वामी	250 धनुष	3000 धनुष
7.	सुपार्श्वनाथ	200 धनुष	2400 धनुष
8.	चंद्रप्रभस्वामी	150 धनुष	1800 धनुष
9.	सुविधीनाथ	100 धनुष	1200 धनुष
10.	शीतलनाथ	90 धनुष	1080 धनुष
11.	श्रेयांसनाथ	80 धनुष	960 धनुष

12.	वासुपूज्यस्वामी	70 धनुष	840 धनुष
13.	विमलनाथ	60 धनुष	720 धनुष
14.	अनंतनाथ	50 धनुष	600 धनुष
15.	धर्मनाथ	45 धनुष	540 धनुष
16.	शांतिनाथ	40 धनुष	480 धनुष
17.	कुंथुनाथ	35 धनुष	420 धनुष
18.	अरनाथ	30 धनुष	360 धनुष
19.	मल्लीनाथ	25 धनुष	300 धनुष
20.	मुनिसुव्रतस्वामी	20 धनुष	240 धनुष
21.	नमिनाथ	15 धनुष	180 धनुष
22.	नेमिनाथ	10 धनुष	120 धनुष
23.	पार्श्वनाथ	9 धनुष	108 धनुष
24.	महावीरस्वामी	7 धनुष	84 धनुष

318. सत्तर संडासा यानि सांधा की प्रमार्जना ।

3. पैर के पीछे के भाग की तीन प्रमार्जना चरवला से.
3. पैर के आगे के भाग की तीन प्रमार्जना चरवला से.
3. पैर के आगे जो भूमि है उसकी तीन प्रमार्जना चरवला से.
2. दोनोहाथ की मुहपत्ति द्वारा दो प्रमार्जना.
3. चरवले के उपर तीन प्रमार्जना मुहपति द्वारा
3. खडे होते समय पीछे के भूमि की तीन प्रमार्जना चरवला से.
17 इस तरह 17 वार पूंज के खमासंमणा देना (धर्म संग्रह)

319. श्रावक के मार्गानुसारी के 35 गुण

1. **न्यायसंपन्नवैभव** - जिसने अपनी संपत्ति न्यायपूर्वक प्राप्त की हो.
2. **शिष्टाचार प्रशंसा** - शिष्ट पुरुष की प्रवृत्ति देखकर प्रशंसा करे.
3. **शील** - कुल - गोत्र संबंध - जिसका कुल समान न हो शीलवान हो व उच्चगोत्र हो उसके साथ शादी का संबंध करना.
4. **पापभीरु** - संसार में रह कर पाप करे मगर मन में डर रहे.
5. **देशाचार आचरण** - जैसा देश वैसा आचार होना चाहिए.
6. **अवर्णवादत्याग** - कीसी भी का अवर्णवाद यानि निंदा नहि करना.
7. **जयणागृह** - जिस घर में हवा प्रकाश हो, जयणा का पालन हो पाडोशन अच्छे हो व नीचा घर न हो वो जयणागृह
8. **सत्संग** - जो प्रतिदिन सदाचारी पुरुष का संग में रहता हो.
9. **मात पिता की पूजा** - जो भक्ति पूर्वक मात पिता का सत्कार करे.
10. **उपद्रवस्थान त्याग** - दुर्भिक्ष, रोगचाला, लडाई एसे स्थान का त्याग
11. **लोग विरुद्धच्चाओ** - देश काल जाति की अपेक्षा से निंद्य प्रवृत्ति का त्याग.
12. **प्रमाणोपेत खर्च** - जैसी व्यापार में कमाई वैसा खर्च करना.
13. **उचित वेश** - अपनी संपत्ति के अनुसार पहेरवेश होना चाहिए.
14. **बुद्धि के 8 गुण :** 1) अच्छी बात सुनने की इच्छा होना. 2) अच्छी बात को ध्यान से सुनना. 3) उसके अर्थ को बराबर समजना. 4) अच्छी बात व अर्थ को याद करना. 5) अर्थ के आधार पर तर्क वितर्क करना. 6) विरुद्ध अर्थ को दूर करना. 7) अर्थ के सच्चे अर्थ को ग्रहण करना. 8) तत्त्व का निर्णय करना ।

15. **धर्मश्रवण** - प्रतिदिन जिनवाणी का श्रवण करना.
16. **अजीर्णे भोजन त्यागी** - अजीर्ण होने पर भोजन का त्याग करना.
17. **सकाल भोजन** - भूख लगे तब समय अनुसार भोजन करना.
18. **त्रिवर्ग साधना** - धर्म. अर्थ. काम तीनों को बाधान पहोंचे इस तरह प्रवृत्ति साधना करना.
19. **अतिथि भक्ति** - अचानक आने वाले अतिथि साधु साध्वीकी यथाशक्ति भोजन करे.
20. **मिथ्यात्व त्याग** - अभिनिवेष, पूर्वग्रह; कदाग्रह आदि का त्याग.
21. **गुणपक्षपात** - जहां गुणवान देखे वहां नमस्कार करना.
22. **अदेश - अकाल - चर्चा का त्याग** - निषिद्ध देश में निषिद्ध समय का त्याग ।
23. **बलाबलजाण** - जो स्वयं का एवं दूसरे के बलाबल का जानने वाला.
24. **व्रतधारी पूजा** - व्रतधारी व ज्ञान वृद्ध उनकी योग्य पूजा करना.
25. **पोष्य वर्ग पोषण** - योग्य कुटुंब, परिवार का पोषण करना.
26. **दीर्घ दर्शी** - कीसी भी कार्य में लम्बा विचार करना.
27. **विशेषतापणुं** - विशेषज्ञ बनकर विवेक पूर्वक कार्य करना.
28. **कृतज्ञपणुं** - अपने पर जिसने उपकार कीया उसको याद करना.
29. **लोक वल्लभ** - लोक में प्रिय बनने हेतु सभी के साथ योग्य व्यवहार करना.
30. **सलज्जा** - जो लाज यानि मर्यादा वाला होता है
31. **सदय** - दीन दुःखी की परिस्थिति देखकर दया करना.
32. **सौम्य** - जो सौम्य आकृतिवाला यानि शांत स्वभाव वाला.
33. **परोपकार** - दूसरे के उपकार में तत्पर बनना.

34. . **षड् अंतरंग वर्ग त्याग** - काम, क्रोध, मान, लोभ, मद मत्सर आदि छ अंतरंग शत्रु का त्यागी बनना.

35. **इन्द्रियजय** - जो इन्द्रिय वश कर सके वो व्यक्ति गृहस्थ धर्म का पालन कर सकता है ।

320. जैन धर्म को प्राप्त करने हेतु श्रावक के 21 गुण

1. **अक्षुद्र** - क्षुद्र यानि गंभीरता विना का, जो स्व-पर के उपकार करने में तत्पर होता है.
2. **रूपवान** - संपूर्ण सांगोपांगवाला, पांचो इन्द्रिय संपूर्ण अच्छे संघयण वाला व रुपवान वो ही धर्म करने में समर्थ बनता है
3. **सौम्यप्रकृति** - जो स्वभाव से सौम्य होता है वो पाप में प्रवृत्ति नहि कर सकता वो ही उपशम का कारण बनता है.
4. **लोकप्रिय** - आलोक व परलोक के विरुद्ध कार्य न करनेवाला. दान, विनय शील गुणों से युक्त लोक प्रिय व्यक्ति दूसरे को बहुमान कराता है ।
5. **अक्रूर** - अक्रूर व्यक्ति कभी भी अयोग्य कार्य नहि कर सकता अक्रूरज धर्म के योग्य होता है ।
6. **पापभीरु** - आलोक व परलोक के कष्ट का विचार करे. अपयश के कलंक से डरने वाला, पापभीरु धर्म के योग्य है ।
7. **अशढ** - विश्वास करने योग्य प्रशंसा करने योग्य, विश्वासु शढ पुरुष का कभी विश्वास नहि करना. अशढ ज धर्म कर सकता है.
8. **दाक्षिण्य** - दाक्षिण्य गुण वाला अपने कार्य को छोडकर दूसरे

के उपकार करने वाला होता है.

9. **लज्जालु** - लज्जालु व्यक्ति अकार्य से दूर रहता है सदाचार का आचरण करता है अंगीकार व्रत को कभी नहि छोडता.

10. **दयालु** - धर्म का मूल दया है जिस धर्म में दया नहि वो धर्म नहि ।

11. **मध्यस्थ** - मध्यस्थ व्यक्ति गुणो को ग्रहण करे व दोष को दूर करे ।

12. **गुणानुरागी** - गुण रहित जन की उपेक्षा वाला. प्रत्येक व्यक्ति में सिर्फ गुण दृष्टि रखकर चलने वाला.

13. **सत्कर्मी** - अशुभ कथा के संगत से विवेक रत्न नाश होता है सत्कथावाला, सत्कार्यवाला धर्म का अर्थी बनता है विवेक प्राप्त होता है.

14. **सुपक्षयुक्त** - परिवार अनुकुल - धार्मिक, सदाचार वाला सुपक्ष होने पर विघ्न बिना धर्म क्रिया कर सकता है ।

15. **दीर्घदर्शी** - दीर्घ दृष्टि वाले का परिणाम सुंदर आता है क्लेश अल्प व लाभ ज्यादा व प्रशंसाकारी कार्य बनता है.

16. **विशेषज्ञ** - विशेषज्ञ पुरुष पक्षपात बिना का होता है प्रत्येक पदार्थ में गुण दोष देखकर धर्म का अधिकारी बनता है.

17. **वृद्धानुग** - वृद्ध व्यक्ति परिपक्व बुद्धि वाला होता है वो पाप के आचरण में प्रवर्तते नहि. जो वृद्ध का अनुसरण करता है वो गुणकारी कल्याणकारी बनता है.

18. **विनय** - सत्ज्ञान - दर्शन का मूल विनय है वो गुण मोक्ष का मूल है विनयवाला ज धर्माधिकारी बनता है ।

19. **कृतज्ञ** - कृतज्ञ व्यक्ति तत्त्व बुद्धि से उपकारी व्यक्ति के उपकार को अवश्य मानता है उसमें गुणों की वृद्धि होती हैं वो ही धर्म के योग्य है ।

20. **परहितार्थी** - परहित में रहने वाला पुरुष धन्य बनता है वो सम्यग प्रकार से धर्म के तत्त्व को जानता है उनका चित्त निःस्पृह होने से दूसरे को सन्मार्ग में स्थापन करता है ।

21. **लब्धलक्ष्य** - सामने जब लक्ष्य प्राप्त होता है तब वे अवश्य लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है मोक्ष को लक्ष्य में रखकर जो धर्म करता है वो अवश्य मोक्ष को प्राप्त करता है ।

(धर्मरत्न पू. शांतिसूरि)

321. श्रावक के चौद नियम

➡ श्रावक - श्राविका प्रतिदिन इस नियम को धारण करते है नियम धारण करने से श्रावक बहोत सारे निष्काम पापो से बच जाता है ।

1. **सचित्त** - दिन में जितनी बार सचित पदार्थ का सेवन करे उसकी संख्या व वजन तय करे.

2. **द्रव्य** - तरह तरह के नाम वाली या स्वाद वाली जितने पदार्थ खाना हो उसकी संख्या निश्चित करना.

3. **विगई** - घी, गुड, दूध, दही, तेल, कडा ये छ विगई है इसमें से निरंतर एक विगई का मूल या कच्ची विगई का त्याग करना.

4. **वाणह** - पैर में पहनने के चंपल, बुट, मोजे आदि की संख्या धारना.

5. **तंबोल** - सुपारी, एलची, चूरण, मुखवास आदि का प्रमाण धारना.

6. **वत्थं** - दिन में कुल कितने कपडे पहनना उसकी संख्या धारना.
7. **कुसुम** - सुंघने की वस्तु धारना.
8. **वाहन** - गाडी, घोडी, उंट, मोटर, ट्रेन, ट्राम, बस, विमान, नाव आदि वाहन जिसमें बैठते हो सफर करते हो वो धारना.
9. **शय्या** - आसन, गाडी, खुर्शी, टेबल, पलंग आदि की संख्या धारना.
10. **विलेपन** - शरीर में विलेपन करने का तेल, क्रीम, पाउडर आदि की संख्या धारना.
11. **ब्रह्मचर्य** - यथाशक्ति तिथि या दिन का तय करना.
12. **दिशा** - दसो दिशा में जाने का तय करना. कितनी बार.
13. **स्नान** - दिन में कितनी बार स्नान करना. (धर्म कार्य में जयणा)
14. **भत्तेसु** - भोजन पानी में वजन - माप धारना.

➡ पृथ्वीकाय - मिट्टी, नमक, खारा, चोक आदि का वजन धारना.

➡ अप्काय - पाणी पीने का. स्नान का पाणी सभी का प्रमाण धारना.

➡ वाउकाय - पंखा, हिंचोला, वस्त्र झापटना आदि प्रमाण धारना.

➡ वनस्पतिकाय - हरीसब्जी व तेल का प्रमाण धारना.

➡ त्रसकाय - नोकर, दास, पशु आदि प्रमाण धारना.

➡ असि - सुई, कैची, सूडी, छरी, चप्पू, तलवार आदि शस्त्र का प्रमाण धारना. किसको देना या नहि उसका भी प्रमाण रखना.

➡ मसि - खडि, पेन, पेन्सील, कलम. आदि को संख्या धारना.

➡ कृषि - हल, कुहाडा, पावडा, गैंती, कौस आदि का प्रमाण धारना.

322. चैत्यवंदन में रखने की तीन मुद्रा

1. **योगमुद्रा**

अन्नुनंतरिअंगुलि, कोसागारेहिं दोहिं हत्थेहिं ।
पिट्ठोवरि कुप्पर, संठिएहिं तह जोगमुद्दत्ति ॥15॥

➡ **भावार्थ :** कमलके डोडे की तरह अंगुलिओं को परस्पर जोडकर हाथ जोडना व कोणी को पेट के उपर रखना वो योगमुद्रा. इरियावहि. जंकिचि, नमुत्थुणं आदिमें यह मुद्रा का उपयोग होता है ।

2. **जिनमुद्रा**

चत्तारि अंगुलाइं, पुरओ उणाइं जत्थ पच्छिमओ ।
पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिनमुद्दा ॥16॥

➡ **भावार्थ :** तीर्थंकर परमात्मा जिस मुद्रा में काउसग्ग करते है उसी तरह दो पैर के बीच में चार अंगुल आगे के भाग में और पीछे के भाग में कुछ कम अंतर रखकर काउसग्ग करना वो जिनमुद्रा, सूत्र बोलते समय, प्रतिक्रमणमें जब भी खडे हो तब पैर में यही मुद्रा होनी चाहिये।

3. **मुक्तासुक्तिमुद्रा**

मुत्तासुत्तीमुद्दा, जत्थ समा दोवि गब्भिआहत्था ।
ते पुण निलाड़देशे, लग्गा अने अलग्गत्ति ॥17॥

➡ **भावार्थ :** मोती के छीप की तरह दोनो हाथ की अंजलि पोली करके ललाट के आगे रखना. वो मुक्तासुक्ति मुद्रा. जावंतिचेइआई. जावंत के वि साहू. जयवीयराय इन तीन सूत्र में यह मुद्रा अवश्य करना ।

(चैत्यवंदन भाष्य)

323. चौद राज का प्रमाण

➡ एक देव सौधर्म देवलोक से हजार भार प्रमाण लोहे के गोले को अपने समस्त बल से पृथ्वी के उपर फेंके तो छ मास, छ दिन, छ प्रहर, छ मुहुर्त, छ घडी, छ पल, जितना समय लगता है तब एक राज का प्रमाण बनता है इस तरह चौद राज का प्रमाण जानना ।

324. ढाइद्वीप में सूर्य चंद्र का प्रमाण

➡ जंबूद्वीप में - दो सूर्य - दो चंद्र ।

➡ लवण समुद्र में - चार चंद्र, चार सूर्य ।

➡ धातकी खंड में - बार चंद्र - बार सूर्य ।

➡ कालोदधिसमुद्र में - 42 चंद्र - 42 सूर्य ।

➡ अर्ध पुष्करवरद्वीप में - 72 चंद्र - 72 सूर्य ।

➡ इस तरह ढाई द्वीप में 132 चंद्र 132 सूर्य है ढाई द्वीप के बहार चंद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, तारा सभी स्थिर है, वो सभी एक ही स्थान पर रहते है उनका प्रकाश एक लाख योजन प्रमाण स्थिर है दिन. रात्रि का कालमान वहां पर नहि है. चंद्रसूर्य असंख्य व इन्द्र भी असंख्य है ।

(बृहत्संग्रहणी)

325. चार भावना का अर्थ

1. **मैत्रीभावना** - प्रत्येक जीव का कल्याण हो एसी भावना रखना.
2. **प्रमोदभावना** - गुण व गुणवान प्रति बहुमानभाव द्वारा हर्षित होना.
3. **करुणाभावना** - संसार से पीडा प्राप्त करने वाले प्राणी पर दया करना.
4. **माध्यस्थ भावना** - निवारण हो सके एसे दोषो तरफ उपेक्षा करना.

(शांत सुधारस)

326. भोजन के पांच प्रकार

1. **सिंहभोजन** - एक तरफ से भोजन करना.
2. **प्रतरभोजन** - जैसा मुंह में डाला वेसा उतार देना
3. **हस्तिभोजन** - उपेक्षा भाव से वापरना.
4. **काकभोजन** - थोडा थोडा भोजन करना.
5. **शृगालभोजन** - जहां तहां से भोजन करना.

पांच प्रकार के भोजन में से तीन प्रथम के उपादेय दो हेय है.

(शास्त्र के अंश)

327. बावीस परिबह के नाम ।

1. क्षुधा परिषह (भूख)
2. पिपासा परिषह (तरस)
3. शीत परिषह (ठंडी)
4. उष्ण परिषह (गर्मी)
5. दंश परिषह (मच्छर)
6. अचेल परिषह (जीर्णवस्त्र)
7. अरति परिषह (द्वेष)
8. स्त्री परिषह (कामविजेता)
9. चर्या परिषह (बिहार)
10. नैषेधकी परिषह (उपद्रव)
11. शय्या परिषह (अनिद्रा)
12. आक्रोश परिषह - (समता)
13. वध परिषह - (समभाव)
14. याचना परिषह - (आज्ञा)
15. अलाभ परिषह - (भातपाणी)
16. रोग परिषह - (अस्वस्थशरीर)
17. तृण स्पर्श परिषह - (विहारवेदना)
18. मल परिषह - (अस्नान)
19. सत्कार परिषह - (मानविजय)
20. प्रज्ञा परिषह - (स्व प्रशंसा त्याग)
21. अज्ञान परिषह - (ज्ञान एकाग्रता)
22. सम्यक्त्व परिषह - मिथ्यात्वत्याग

(नवतत्त्व सटीक)

328. विरतिधर आत्मा का गुण वेभव

1. विनयगुण - गौतमस्वामी
2. अनुशासन - सा.चंदनबाला
3. अल्पाहारी - धन्नाअणगार
4. करुणाप्रेमी - धर्मरुचि अणगार
5. आत्मशुद्धि - अईमुत्तामुनि
6. आत्मदृष्टा - बाहुबलीजी
7. आत्मालोचना - मृगावतीजी
8. उपदेशक - जंबूस्वामी
9. साहित्यप्रेमी - हरिभद्रसूरि
10. स्वाध्यायप्रेमी - माषतुष्मुनि
11. आगमलेखन - देवर्द्धिगणी
12. शासन प्रभावक - सोमसुंदरसूरि
13. भावशुद्धि - कुरगडुमुनि
14. टीकाकार - अभयदेवसूरि
15. प्रवचनप्रभावक - वज्रस्वामी
16. आगमसंरक्षक - पुण्यविजय
17. धर्मकथा - सर्वज्ञसूरि
18. वादीप्रभावक - मल्लवादीसूरि.
19. निमित्त प्रभावक - भद्रबाहुस्वामी
20. तप प्रभावक - काष्ठमुनि
21. विद्या प्रभावक - हेमचंद्राचार्य
22. सिद्ध प्रभावक - पादलिप्त सूरि
23. कवि प्रभावक - सिद्धसेनदिवाकर सूरि
24. वैराग्योपदेशक - नंदिषेणमुनि
25. अष्टापदयात्रा - वीरसूरि
26. कथाप्रभावक - सिद्धर्षिगणी
27. स्तवन भंडार - ज्ञानविमलसूरि
28. न्यायाचार्य - उपा.यशो विजयजी
29. अध्यात्मयोगी - आनंदधनजी
30. वादिवेताल - शांतिसूरिजी
31. वाचनाचार्य - आर्यरक्षित सूरि
32. तीर्थप्रभावक - विजयसिंहसूरि
33. तपागच्छ प्रसिद्धक - जगत्चंद्रसूरि
34. बादशाहप्रतिबांधव - हीर सूरिजी
35. पूर्वधर आचार्य - उमास्वातिजी
36. जैन रामायण कर्ता - विमलसूरि पूर्वधर

329. बत्रीस प्रकार के नाटक

1. अष्ट मंगल का आकार बनाकर नाटक करना ।
2. आवर्त प्रत्यावर्त, श्रेणी, प्रश्रेणी, पुण्यमान, वहेमान, मत्स्याकांड, मकरांडक, पुष्पावली, पद्मपत्र, सागर तरंग, पद्मलता आकार की तरह
3. इहामृग, ऋषभ, तुरंग, नर, मकर, विहग, व्याल, किन्नर, रुद्र, शरभ, चमर, कुंजर, वलता, पद्मलता के आकार की तरह.
4. एक तरफ चक्र, एक तरफ तलवार, एक तरफ चक्रवाल, द्विघा चक्रवाल, चक्रार्ध चक्रवाला के आकार की तरह.
5. चन्द्रवलयावलि, सूर्यवलयावलि, तारावलि, हंसावलि, एकावलि, मुक्तावली, कनकावली, रत्नावली की तरह नाटक करना.
6. चन्द्रोदय, सूर्योदय की तरह.
7. चन्द्र - सूर्य के आगमन की तरह
8. चन्द्र सूर्य के अवतरण के आकार की तरह
9. चन्द्र-सूर्य के अस्त की तरह.
10. चन्द्र - सूर्य, यक्ष, नाग, भूत, राक्षस, महारग, गंधर्व मंडल के आकार की तरह
11. ऋषभ, सिंह, ललित, अश्व, द्वधी के विलास की तरह, मदोन्मत्त घोडे, हाथी की तरह.
12. सागर - सरोवर के आकार की तरह.
13. नंद - चंपा के आकार की तरह
14. मत्स्य, अंडक, मकर अंडक, भ्रमर के आकार की तरह
15. क, ख, ग, घ, ङ के आकार की तरह.

16. च, छ, ज, झ, ञ् के आकार की तरह
17. ट, ठ, ड, ढ, ण के आकार की तरह
18. त, ध, द, ध, न, के आकार की तरह
19. प, फ, ब, भ, म, के आकार की तरह
20. अशोक, आम्र, जंबु, केशव, पदलव की तरह
21. पद्मनाग, अशोक, चंपकं, आम्रवन कुंद की तरह.
22. द्रुत की तरह
23. विलम्बित की तरह
24. द्रुत विलम्बित की तरह.
25. अंचित की तरह
26. रिभित की तरह
27. अंचित-रिभित की तरह
28. आरभर की तरह
29. भसोल की तरह.
30. आरभर भसोल की तरह
31. उत्पात, निपात, संकुचित प्रसारित, रेचक रचित, भ्रान्त संभ्रान्त की तरह.
32. तीर्थंकर का जीवन च्यवन से मोक्ष तक । (राजप्रश्नीय उपाग)

330. नवसारी के श्यामल पार्श्वनाथ

➡ **नवसारीपुरे प्रभुः पार्श्वः स्वप्नेऽभ्येत्य श्राद्धानां पुरः प्राह मामितटे भूतलात कर्षयन्तु भक्तः वर्यं भविष्यति । ततः तस्मात् भुवस्तलात्प्रभुः कर्षितो यदा यदा प्रभोः शरीरे चंदन पुष्पाणि अशुष्कितानि दृष्ट्वा लोकचमत्कृतः स्तुतिः चके । ततः पार्श्व प्रासादे स्थापित । ततोऽद्यापि**

चंदन पुष्पाणि न शुष्कंति । प्रभोः शरीरादभूतं गिरंति लोकानां चिन्तितं पूरयति श्रीश्यामल पार्श्वः ।

भावार्थ : नवसारी नगरमें पार्श्वनाथ प्रभु ने स्थान में आकार श्रावको को कहा कि मेरे को भूमि पर से खींचोगे तो तुम्हारा अच्छा होगा. श्रावको ने एसा किया तो प्रभु के उपर चन्दन-पुष्प वो एसे के एसे रहे एसा देखकर लोग चमत्कार पाकर स्तुति करने लगे. लोगो ने जिनालयमें पार्श्वनाथ परमात्मा को स्थापन किया. प्रभु के शरीर से अमृत झरने लगा. लोगो की चिन्ता श्यामल पार्श्वनाथ पूर्ण करते हैं ।

(प्रबंध पंचशती - 552)

331. शान्तनुं-मंत्री-पौषधशाला का संबंध ।

एक बार पाटण में जयसिंह नाम का राजा राज्य करता था. उसके शासन में सभी तरह के व्यापार में कुशल, 50, 000 घोड़े का अधिपति, श्रीमालीजाति का शांतु मंत्री ने 84,000 टंक का खर्च करके राजमहेल जेसा महेल बनाया. बहोत सारे लोग देखने आये. देवसूरि का परम भक्त शांतु मंत्री था. उसने गुरुदेव को कहा आप मेरे महेल में पधारो ! व प्रशंसा करो ! उस समय सौभाग्य के निधान छोटे साधु ने कहा है मंत्रीश्वर ! यदि एसी पौषधशाला होती तो गुरुदेव सामने से आते मगर पाप हेतु वाले महल की प्रशंसा नहि करते. क्योंकि घर था महल में पांच प्रकार के आरंभ समारंभ बताये है

खांडनी, पेषणी, चुल्ही, पाणीयारी, स्नानग्रह इन पांच वस्तु की प्रशंसा गुरुवर करते नहि है. उसी समय शन्तु मंत्रीने महेल को देवघर व धर्मराधना हेतु निर्णय कीया ।

332. भरतक्षेत्र नाम कैसे पडा ?

➡ तीसरे आरे के अंतिम समयमें भारत के प्रथम इक्ष्वाकु राज्यकुल में जन्म लेने वाले ऋषभदेव ने भारत•का उद्धार करके मोक्षगामी बने. उनके पुत्र भरत चक्री ने छ खंड पृथ्वी को जीतकर पद धारण कीया. उनकी राजधानी का मुख्य प्रदेश गंगा नदी के किनारे पर था. इन्द्र की आज्ञा से बनी हुयी अयोध्यानगरी में प्रभावशाली संस्कारी धर्म प्रदेश को भारत साम्राज्य की राजगादी भरतखंड के नाम से अमर स्थापना हुयी. उसके पूर्व भारत में साम्राज्य जैसा कुछ नहि था. पूर्व में सप्त - सैन्धव नाम था. गंगा - यमुना के तट उपर आर्याओ का निवास था. एवं पंजाब की पांचो नदीओ के साथ प्रदेश में भारत की प्रजा का निवासस्थान होने के कारण यह प्रदेश 'सप्त सेन्धव' नाम से प्रसिद्ध था ।

ग्रिकलोक सिंधु को इंद सु नाम से संबोधते. उपरोक्त कारण से भारत को इन्डिया के रुप में संबोधन का चालु हुआ. इन्डिया नाम विदेशी द्वारा प्राप्त हुआ था । (सम्राट संप्रति)

333. मगधदेश में राजगृही राज्य की विशिष्टता

➡ महाराजा श्रेणीक जहां राजा थे एसे मगध देश में 80,000 गांव आते है। प्रसेनजित राजा के समय में यह राज्य डुंगरो में गिरिव्रज के रुप में प्रसिद्ध था. मगर श्रेणीक राजा ने वैभारगिरि पर्वत की तलेटी राज्यादिक गृहस्थो को रहने का स्थान 'राजगृही' प्रसिद्ध हुआ. पिताजी के साम्राज्य में नगरकी दीवार व सभी राजमहेल लकडे के थे. श्रेणीक राजा ने राजगृही नगरी को 12 योजन लंबी व नौ योजन चोडी बतायी थी. बडे बडे पत्थर की शीला द्वारा दरवाजे, दीवार व महेलो का निर्माण करवाया. दक्षिण

दिशा में गंगा नदी कलकल कर रही थी. राज्य के व्यवहार हेतु 8,000 अग्र प्रजाजन नीमे हुए थे. उसके उपर 498 मंत्रीश्वर नियुक्त कीये थे। सभी अमात्यो के उपर अभयकुमार मंत्री की नियुक्त किये थे । अभय मंत्रीश्वर ने नीति शास्त्र द्वारा राज्य चलाया था. श्रेणीक राजाने अपने लश्करी साम्राज्य में 5000 लडायक हस्ति, 3 लाख लडायक सैन्य, 8000 रथीओ, 20,000 हथीयार धारी घुडसवार आदि की श्रेणीबद्ध व्यूह रचना होने से प्रजा जनोमे श्रेणीक नाम प्रसिद्ध हुआ. पहले उनका बिंबिसार नाम था । **(सम्राट संप्रति)**

334. मगध देशमें शिशुनाग वंश (नौनंद राजा)

➡ शिशुनाग वंश में पांच राजा श्रेणिक राजा के पूर्व हुए थे :

1) शिशुनाग 2) काक वर्ण 3) क्षेमवर्धन 4) क्षेमजीत 5) प्रसेनजित

➡ **शिशुनाग वंश की वंशावली**

1. नंदी वर्धन	वी. सं. 60 से 92	-	32 साल राज्य
2. महानंदी	वी. सं. 92 से 116	-	18 साल राज्य
3. महानंद	वी. सं. 110 से 147	-	37 वर्ष राज्य
4. सुमाली	वी. सं. 147 से 154	-	7 साल राज्य
5. बृहस्पती	वी. सं. 154 से 157	-	3 साल राज्य
6. धननंद	वी. सं. 157 से 161	-	4 साल राज्य
7. बृहदर्थ	वी. सं. 161 से 171	-	10 साल राज्य
8. सुदेव	वी. सं. 171 से 177	-	6 साल राज्य
9. महासेन	वी. सं. 177 से 210	-	33 साल राज्य

➡ 150 साल तक नंदवंश का राज्य मगध देश पर चला.

(सम्राट संप्रति)

335. सम्राट संप्रति की परंपरा

➡ राजगृही नगरी श्रेणिकराजा उसका पुत्र कोणिक उसका पुत्र उदायिराजा उनके पद उपर नो नंद उनके पद पर चन्द्रगुप्तराजा उनके पद पर बिंदुसार उनका पुत्र अशोक राजा हुआ. उसका पुत्र कुणाल उसका पुत्र संप्रति राजा हुआ ।

वीर निर्वाण संवत् 210 से 234 तक चंद्रगुप्त राजा हुआ.

वीर निर्वाण संवत् 234 से 259 तक बिंदुसार राजा हुआ.

वीर निर्वाण संवत् 259 से 295 तक अशोक सम्राट हुआ

(सम्राट संप्रति)

336. द्वादशांगी यानि क्या ?

➡ द्वादशांगी में 11 अंग व बारवां दृष्टिवाद मिलकर द्वादशांगी बनती है. गणधर भगवंत ज इनकी रचना करते है गणधर भगवंत भी तीर्थंकर परमात्मा के पास त्रिपदी सुनकर अंतर्मुहुर्त समय (48 मिनिट के अंदर) में रचना करते है ।

॥ बारह अंग के नाम ॥

1. आचारांग सूत्र
2. सूयागडांग सूत्र
3. ठाणांग सूत्र
4. समवायांग सूत्र
7. उपासक दशांग सूत्र
8. अंतगड दशांग सूत्र
9. अनुत्तरोववाई सूत्र
10. प्रश्नव्याकरण सूत्र

5. भगवती सूत्र
6. ज्ञाता धर्म कथांग सूत्र
11. विपाक सूत्र
12. दृष्टिवाद

बारह अंग में दृष्टिवाद का विच्छेद हो गया. अभी 11 अंग प्राप्त होते है वर्तमान में 11 अंग के मूल श्लोक की संख्या 35.659 की है. टीका 73.544. गाथा की. चूर्णी 22.700 श्लोक की निर्युक्ति. 700 श्लोक की. इस तरह 1.32.603 श्लोक अग्यार अंग के होते है. शीलांकाचार्य ने दो अंग की व अभयदेवसूरि ने 9 अंग की टीका बनाई. सभी की निर्युक्ति चौद पूर्वी भद्रबाहु स्वामी रचना करते है. चूर्णी महापुरुष रचते है ।

(सम्राट संप्रति)

337. जंबूस्वामी के पांच भव

1. **प्रथमभव** - सुग्रीव ग्राम, रावड़ नामका दरिद्र व्यक्ति, रेवती पत्नी पुत्र का नाम भवदेव. लज्जा के कारण दीक्षा लेकर 12 साल तक नागिला पत्नी के ध्यान में निकाले. फिर नागिला ने समजाया तो वापिस संयम में स्थिर बनकर शुद्ध चारित्र का पालन कीया.
2. **दूसरा भव** - शुद्ध चारित्र का पालन करके सात सागरोपम आयुष्य वाला सामानिक देव बना.
3. **तीसरा भव** - देव भव में से च्यवन होकर वीतशोका नगरमें पद्मरथ राजा - वनमाला राणी के घर पुत्र के रुप में उत्पन्न हुआ. शिवकुमार नाम 500 राजकन्या के साथ शादी करके महेल में बैठे बैठे मुनिवर को देखा नीचे उतरकर धर्म घोष सूरि के पास देशना द्वारा वैराग्य पाकर दीक्षा के लिये माता पिता के पास गये. माता पिताने मना कीया. इसलिये घर में रहकर छठ तप के पारणे आंबिल 12 साल तक कीया ।

4. **चतुर्थ भव** - गृहस्थावस्था में शुद्ध तप का पालन करके चार पल्योपम आयु वाला देव बना. जिसका नाम विद्युन्माली

5. **पांचवा भव** - राजगृही नगर, ऋषभदत्त, ब्राह्मण, धारिणी देवी. पुत्र जंबूकुमार हुआ. सुधर्मा स्वामी के पास देशना सुनकर घर जाता है बीच में बडी शिला गिरती है विचार कीया यदि मैं मर जाता तो क्या होता. उसी समय वापिस सुधर्मा स्वामी के पास जाकर चतुर्थ व्रत धारण कीया. माता पिता के अति आग्रह के कारण. इच्छा पूर्ण करने के लिये 8 कन्या के साथ शादी.... उसी रात्रि में 8 कन्या उनके माता पिता अपने माता पिता व 500 चोरो को उपदेश देकर सुधर्मास्वामी के पास दीक्षा ग्रहण की. (उपदेशमाला टीका)

338. जंबूस्वामी के 99 करोड की गिनती

➠ आठो कन्या अपने पिता के घरसे 9/9 करोड सुवर्ण मोहर लाये.

आठ कन्या के	-	72 करोड़
कन्या के मामा घरसे	-	8 करोड़
जंबुकुमार मामा घरसे	-	1 करोड़
जंबुकुमार के घर	-	18 करोड
कुल	-	**99 करोड** (उपदेशमाला टीका)

339. मथुरानगरी के कुबेर सेना वेश्या के 18 संबंध

➠ कुबेरदत्ता साध्वीजी अवधिज्ञान से देखकर मथुरा आकर बहोत सारे संबंध सुनाते है छोटा सा बालक रो रहा है उस समय कह रहे । हे पुत्र ! तेरे साथ मेरे छ संबंध है ।

1) तुं मेरा पुत्र होता है ।
2) तुं मेरे भाई का पुत्र होता है ।
3) तुं मेरा भाई भी होता है ।
4) तुं मेरा देवर भी होता है ।
5) तुं मेरा काका भी होता है ।
6) तुं मेरा पोत्र भी होता है ।

➡ **है पुत्र ! तेरे पिता के साथ मेरे छ संबंध है ।**

1) यह मेरा पति भी है ।
2) यह मेरा पिताभी होता है ।
3) यह मेरा बडा भाई भी है ।
4) यह मेरा ससुर होता है ।
5) यह मेरा पुत्र भी है ।
6) यह मेरा दादा भी है ।

➡ **है पुत्र ! तेरी माता के साथ मेरे छ संबंध है ।**

1) मेरे भाई की पत्नी होने से भाभी भी होती है ।
2) यह मेरी सौतेली माता है ।
3) यह मेरी माता भी है ।
4) यह मेरी सासु भी होती है ।
5) यह मेरी पुत्र वधु भी है
6) यह मेरी दादी भी है । **(उपदेशमाला टीका)**

340. श्री चंद्रप्रभस्वामी जिनालय - सुरत

➡ सैयदपुरा - श्रावक शेरी में चंद्रप्रभस्वामी का प्राचीन जिनालय है वि.सं. 1660 में सांकलचंद शेठ नामके श्रावक ने यह जिनालय का निर्माण कराया था. अंतिम उद्धार के बाद प्रतिष्ठा वि.सं. 1960 वै.सु. 10 के दिन धरमचंद उदयचंद पुत्रो ने करायी थी ।

➡ जिनालय के भोंयरे में मूलनायक संप्रति कालीन है नंदीश्वर द्वीप की रचना एवं पट देखने लायक है । लकडे की कारीगरी अति मूल्यवान है, एक पुराणा घंट है, उसके उपर 1960 का लेख है ।

"वेलमदरे देहरे धर्मनाथ नीह वोहेरा
बंगालालजी घंट भरा उसे श्री वैयह सेन सूरिभिः"

इस तरह घंट उपर उल्लेख है ज्ञानविमलसूरिने यहां पर प्रतिष्ठा एवं रोहिणी रास की रचना की है ज्ञान विमल सूरि की यहां चरण पादुका है परमात्मा आदिनाथ के गोद में भी भगवान है ।

(जैनतीर्थ सर्व संग्रहः)

341. शील (सदाचार) के छ लक्षण

1) **आयवण निसेवई** - धर्मी आत्मा का जहां मिलन होता है वो आसेवन कहलाता है जहां पर शीलवान हो, बहुश्रुत हो, चारित्र आचार संपन्न हो एसे व्यक्ति जहां रहते हो वहां श्रावक को निवास करना चाहिए ।

2) **परगृहतजे** - अच्छे कारण बिना दूसरो के घर कभी भी जाना नहि.

3) **अणज्जुउवेश** - उद्‌भट वेष यानि अनुचित वेष का त्याग करना. जिस देश में रहते है उस देश के योग्य मर्यादावाला वेष धारण करना. क्योंकि अयोग्य वेष अयोग्य कार्य करवाता है ।

4) **बालक्रीडा का त्याग** - मस्ती - मजाक - एवं छोटे बालक की तरह क्रीडा का त्याग करना चाहिए ।

5) **वचन विकारत्यजे** - दूसरे को विकार उत्पन्न हो जाय एसे शब्द, एसी क्रिया, ईशारा आदि कुछ नहि करना, हांसी, मजाक में वृद्धि हो एसे शब्द का उपयोग कभी नहि करना ।

6) **मधुरवचन** - कठोर वचन का त्याग करके हंमेशा दूसरो का कल्याण होवे एसे हितकारी मधुर वचन का उपयोग करना ।

➡ **उपा. यशोविजयकृत 350 गाथा स्तवन की कड़ी ।**

सेवे आयतन उद्देश परगृह तजे, अणब्भुडवेश.
वचनविकार त्यजे, शीशुशील, मधुर भणे बड्‌विध शील - 1

आयतण सेवे गुणपोष, परगृह गमने वाधे दोष.
उद्भट वेश न शोभा लाग, वचन विकारे जागे राग......... 2
मोहतणो शीशुलीलालिंग. अनर्थदंड एछे अंग.
कठिन वचन नुं जल्पन जेह, धर्मी ने नहि नेह 3

(350 गाथा स्तवन)

342. द्रव्य क्रिया को प्रधान बनाने के 4 लक्षण

1. **तदर्थालोचन** - छ आवश्यक के सूत्र बोलते समय उसके अर्थ की विचारणा करना उससे अपना दिल शुभ भाव से भर जायेगा. रहस्य समजे बिना क्रिया में आनंद कभी नहि आयेगा। उत्तम अर्थ के द्वारा गुणानुराग प्रगटता है ।

2. **गुणानुराग** - अर्थ की देशनादेने वाले अरिहंत ने सभी जीवों का हित वीतराग भाव में देखा है। सूत्र मोक्ष का कारण है व सूत्र की रचना करने वाले गणधर भगवंत दोनों महापुरुष के उपर गुणानुराग उत्पन्न करना. यानि उनके प्रति विनय, बहुमान रखना ।

3. **अप्राप्तपूर्व हर्ष** - अनादिकाल से घूमते घूमते दरिद्र को निधान की तरह मुझे द्वादशांगी की पेटी प्राप्त हुयी. आज तो मैं कृतार्थ बन गया. मेरा जन्म सफल हो गया. पहले कभी खुशी न हुयी एसी खुशी द्वादशांगी छ आवश्यक सूत्रो से प्राप्त होनी चाहिए ।

4. **विधिभंगेभवभय** - देव गुरु की कृपा से ज्ञानी गुरुभगवंत के द्वारा जो सच्ची विधी प्राप्त होने के बाद भी यदि अविधी हो जाय तो डर लगना चाहिए. अरे रे ! मेरे से अविधी हो गई मेरा संसार बढ जायेगा एसा पश्चाताप होना चाहिए आवश्यक मिलने पर भी प्रमाद किया ।

(उपदेश रहस्य)

343. बहुमान भाव के पांच लक्षण (चैत्यवंदन हेतु)

1. **तत्कथाप्रीति** - जिस व्यक्ति के प्रति ज्यादा प्रीति होती है वहां पर ज्यादा बैठने का मन होता है उसी तरह प्रभु के प्रति उत्पन्न होनेसे पूजा - दर्शन - चैत्यवंदन आदि क्रिया में बहुमान भाव प्रगट होगा. सूत्र बोलते समय भी ज्यादा आनंद आयेगा तो सूत्र व स्तवनादि में शुद्ध उच्चार आदि का लाभ प्राप्त होगा ।

2. **निंदा अश्रवण** - दर्शन - पूजा - चैत्यवंदन आदि के समय अपनी कोई निंदा करे. अरे ! इसको कितना समय लगता है जल्दी मंदिर से बहार नहि आता. स्तवन बोलते ही रहता है एसा सुनने पर भी अपने भाव को टिकाने के लिये इसका कुछ विचार नहि करना. मगर शुद्ध स्पष्ट शब्दोच्चार के साथ चैत्यवंदन करने रहना.

3. **निंदकपर दया** - यदि अपनी कोई ज्यादा निंदा करे तो गुस्सा नहि करना. मगर दया का चिंतवन करना. उपेक्षा भाव रखना. यह अज्ञानी है इसको सच्ची विधी एवं सूत्रार्थ के रहस्य की जानकारी भी नहि है. इसका क्या होगा. एसा उपेक्षा भाव रखना.

4. **चित्तन्यासः**- जब अपना मन बराबर क्रिया में लग जाता है तब परमात्मा की मूर्ति - सूत्र - अर्थ आदि के प्रति चित्त स्थिर बनता है चित्त स्थिर होगा तो बहुमान भाव जगेगा. 'तिद्दिशी निरिक्खण विरई' दर्शन. चैत्यवंदन में तीनों दिशा का त्याग बताया है ।

5. **पराजिज्ञासा** - जब अपना मन धर्म क्रिया में स्थिर होता है तब उनके रहस्य को समजने के लिये जिज्ञासा जगती है मन ने लगे तो जिज्ञासा

न जगे. सूत्रो के रहस्य को समजने के लिये, सच्चीविधी को जानने हेतु जिज्ञासा अति जरूरी है जिज्ञासा से जिनाज्ञा दृढ बनती है ।

बहुमान भाव बिना का अनुष्ठान निष्फल है । (ललित विस्तरा)

344. जिनवाणी श्रवण के आठ गुण

1. **शुश्रुषा** - सच्चे तत्त्व को सुनने की इच्छा होना. आत्मा का सच्चा लक्षण क्या ? आगम ग्रंथ में क्या बताया है ? मिथ्यात्व को केसे दूर करना. समकित की प्राप्ति कैसे करना ? इत्यादि.
2. **श्रवण** - विनयपूर्वक, योग्यमुद्रा के साथ संपूर्ण उपयोग के साथ एक एक शब्द को ध्यान से सुनना.
3. **ग्रहण** - तत्त्व भी समज में आ जाए एसे प्रवचन के रहस्य को ध्यान से ग्रहण करना ।
4. **धारणा** - ग्रहण कीये हुए तत्त्वो को पूर्वापर संबंध को मन में धारण करना.
5. **विज्ञान** - पहले जो अज्ञान भरा हुआ है. विपर्यय, संशय आदि का नाश करके शुद्ध ज्ञान प्राप्त करना.
6. **ऊह** - तत्त्व को सुनने के बाद मन में संदेह (प्रश्न) उत्पन्न होना चाहिए. यह कैसे बना ? इसमें हिंसा ज्यादा क्यों ? किसमें कम ? इस तरह विचार करना ।
7. **अपोह** - शंका उत्पन्न होने के बाद प्रवचन में या प्रवचन के बाद गुरु के पास जाकर निराकरण करके सच्चा तत्त्व प्राप्त करना.

8. **तत्त्वाभिनिवेष** - यह तत्त्व इसी रुप से सच्चा है इस पदार्थ का यही स्वरुप है तीर्थंकर व गणधरो ने इसी तरह स्वीकार कीया है इस तरह जानकर स्थिर निर्णय लेना ।

345. सात प्रकार के भय के कारण

1. **ईहलोकभय** - समान जाति वाले से डरना. जैसे पुरुष - पुरुष से डरना.
2. **परलोकभय** - अन्य जाति से डरना. मानव - तिर्यञ्च से डरना.
3. **आदानभय** - मेरी सामग्री कोई ले लेगा तो ?
4. **अकस्मातभय** - घर, बहार, रात, दिन, अचानक अकस्मात् का डर.
5. **आजीविकाभय** - मेरी आजीविका किस तरह चलेगी उसका डर.
6. **मरणभय** - मैं मर जाउंगा तो क्या होगा उसका डर.
7. **अपयशभय** - अशुभ कार्यो के द्वारा अपयश का डर.

346. तीन प्रकार के कारण ?

1. **यथाप्रवृत्ति करण** - जिस तरह पहाड उपर से पत्थर गिरने के बाद घूमता घूमता बहोत समय के बाद गोलाकार बनता है उसी तरह अनादिकाल से आजीवन भयंकर मिथ्यात्व मोह में घूमते घूमते कभी शुभ भावमें आना वो यथाप्रवृत्ति करण वाला जीव मोहनीय कर्म की 69 कोडाकोडि स्थिति वाला बनता है ।
2. **अपूर्वकरण** - पहले कभी भी न हुआ है । एसा अपूर्व कोटि का अध्यवसाय उत्पन्न होना वो अपूर्वकरण इसके द्वारा राग द्वेष की गांठ कम होती है।

3. **अनिवृत्तिकरण** - कभी एसा परिणाम जगता है जिसके कारण आत्मा सम्यग् दर्शन गुण प्राप्त कीये बिना नहि रहता. इस तरह विशिष्ट कोटि का अध्यवसाय वो अनिवृत्तिकरण । (**कर्मग्रन्थ**)

347. सात व्यसनों का स्वरूप

द्यूतमांस सुरा वेश्या, खेट चौर्य पराङ्गनाः ।
महापापानि सप्तेति-व्यसनानि त्यजेद् बुधाः ॥

➡ **भावार्थः** जुगार, मांस, दारु, वेश्यागमन, शिकार, चोरी, परस्त्रीगमन ये सातो व्यसन पापो से भरे हुए है तो सज्जनो को छोडना चाहिए ।

1. **जुगार** - फनफेर, रेस कोर्स, शेरबजार, सट्टा, क्रिकेटमेच, पोकरगेम, सोदाबाजी, पत्ताखेलना, ड्रो करना आदि जुगार है. जुगार के भयंकर व्यसनी पुण्य जागृत होते ही सिद्धर्षि गणी बने ।

2. **मांस** - योग शास्त्र ग्रंथ में मांस का भयंकर पाप बताया है पंचेन्द्रिय की हत्या बिना मांस प्राप्त नहि होता. नरक का भयंकर द्वार मांस का भोजन । भयंकर मांसाहारी कुमारपाल राजा बने ।

3. **दारु** - बुद्धि को नाश करने का साधन मदिरा पान है. नशीले पदार्थ के सेवन से सत्कार्य भी अकार्य बन जाते है दारु के व्यसनी कपर्दि शेठ नियम के कारण कपर्दियक्ष बने.

4. **वेश्यागमन** - आलोक, परलोक को बिगाडने वाला वेश्यागमन है तेजोलश्या से वेश्या ज्यादा दुःखदायी है क्योंकि तेजोलेश्या एक बार जलाती है वेश्या भवोभव बिगाडती है इसलिये वेश्यागमन भयंकर है. वेश्या के साथी स्थूलभद्र स्वामी का पुण्य जाग्रत होते ही 84 चौवीशी तक अमर रहा ।

5. **शिकार** - कीसी भी प्राणी का नाश करना यानि अपना नाश समजना. शिकारी व्यक्ति भवोभव दुःख प्राप्त करता है भव का अंत मुश्केल से आता है शिकार के भयंकर व्यसनी देवर्द्धि पुण्य जगते देवर्द्धि गणि क्षमाश्रमण बने.

6. **चोरी** - पूछे बिना कीसी की सामग्री लेना वो महापाप है आभव व परभव दोनों दुःखदायी बनते है 500 चोर का मालिक प्रभव चोर जंबूस्वामी के उपदेशसे वैराग्य पाकर 500 चोर के साथ दीक्षा ग्रहण की.

7. **परस्त्रीगमन** - भक्खणे देवदव्वस्स परत्थी गमणेण य सप्तमं नरकं जंति सत्तवाराउ गोयमा. है गौतम ! देवद्रव्य का भक्षण व परस्त्री गमन से जीव सात बार सातवी नरक में जाता है । **(जयवीयरायपुस्तक)**

348. उपकार किसका मानना ।

➡ **तिण्हं दुप्पाड़ियारं समणाउत्तो । तं जहा अम्मा पिउणो भट्टिस्स धम्मायरियस्म** - हे श्रमण ! आयुष्यमान् ! तीन व्यक्ति के उपकार का बदला कभी पूर्ण हो नहि सकता । 1) माता - पिता 2) नोकरी रखने वाले शेठ 3) धर्माचार्य **(ठाणांगसूत्र)**

349. अचितपाणी का काल ।

➡ जब गरम पाणी करते है उस समय तीन उकाला बराबर होना चाहिए तब पाणी अचित होता है.

➡ शाम को जब पाणी बढता है उसमे छास की आस जैसा लगे वैसा चूना डालना चाहिए. 24 प्रहर यानि 72 घंटे तक वो पाणी काम आता है.

➡ कच्चे पाणी में गुड - शक्कर डालने के बाद दो घडी के बाद अचित बनता है फिर पाणी के काल की तरह उनका समय जानना.

➡ त्रिफला चूर्ण डालने के बाद दो घडी के बाद एक (1) प्रहर तक खपता है। रख्या डालने के बाद दो घडी के बाद दो घडी तक खपता है.

350. 'भु - र्भुवः-स्वः' शब्द कौन से सूत्र में ?

➡ 1. ऋषिमंडल स्तोत्र 4. जिनसहस्त्रनाम स्तोत्र
2. सकलार्हत् स्तोत्र 5. पद्मानंद महाकाव्य
3. वर्धमान शक्रस्तव 6. गौतम स्तोत्र

1) भू र्भूवः स्वस्त्रयीपीठ, वर्तिनः शाश्वता जिनाः ।
तैः स्तुतैः वन्दिते र्दृष्टैर्यत् फलं तत् फलं स्मृतौ ॥

➡ **भावार्थ :** पाताल लोक में, पृथ्वीलोक में, व देवलोक में जीतनी भी शाश्वत प्रतिमाए है उन सभी की स्तुति वंदन, दर्शन से जो लाभ मिलता है उतना ही फल ऋषिमंडल स्तोत्र के स्मरण मात्र से होता है ।

(ऋषिमंडल स्तोत्र)

2) सकलार्हत् प्रतिष्ठान, मधिष्ठानशिवश्रियः ।
भुर्भुवः स्वस्त्रयीशान, मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥१॥

➡ **भावार्थ :** सकल अरिहंतो का निवास स्थान एसा मोक्ष लक्ष्मी रूप स्थान है जिसका एसे पाताल लोक, मानव लोक, देवलोकतीनो लोक के स्वामी एसे अरिहंत परमात्मा को नमस्कार करते है ।

3) ॐ नमोऽर्हते भू र्भूव स्वस्त्रयीनाथ मौलि मन्दार मालार्चितकमाय

➡ **भावार्थ :** पाताल लोक, मर्त्यलोक, देनलोक के स्वामी, इन्द्रो के मुकुट में रही हुयी कल्पवृक्षो के पुष्पमाला से पूजीत चरण युगल वाले परमात्मा को नमस्कार हो । **(वर्धमान शक्रस्तव)**

4) नमो भूर्भुवस्त्रयीशाश्वताय, नमस्ते त्रिलोकी स्थिर स्थापनाय ।
नर्मो देव मार्या सुराभ्यर्चिताय, नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमस्ते ॥

➡ **भावार्थ :** पाताल लोक, मानवलोक, देवलोक में रही हुयी शाश्वती प्रतिमा को नमस्कार हो, तीन लोक में स्थिर स्थापना रुप जिनेश्वर को मेरा नमस्कार हो. मानव, देव, असुरोसे पूजाने वाले को मेरा नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो नमस्कार हो । **(जिन सहस्त्र नामस्तोत्र)**

5) मुदाऽर्हामि तदार्हन्त्य, भूर्भुवः स्वस्त्रीश्वर : ।
यदाराध्य ध्रुवं जीवः स्यादर्हत् परमेश्वर ॥

➡ **भावार्थ :** तीन लोकमें प्रभुत्व को धारण करने वाले, एसे आर्हिन्य पद की मैं स्तुति करता हूं भव्य जीव जिन की उपासना करते करते स्वयं जिन रूप बन जाते है । **(पद्मानंद महाकाव्य)**

6) सज्जलान्न धनभोगधृतीनां लब्धिरद्भुतेह भव स्यात् ।
गौतम स्मरतः परलोके, भूर्भुवस्वरपवर्ग सुखानि ॥

➡ **भावार्थ :** अनन्त लब्धि के भंडार एसे गौतमस्वामी का नाम चमत्कारी है गौ-कामधेनु त-कल्पवृक्ष म-चिंतामणी इनके नाम से तीन लोक में परंपरा से मोक्ष प्राप्त होता है । **(गौतमस्तोत्र)**

7) नमः परस्तादुदितायैक, वीराय भास्वते ।
ॐ भूर्भुवः स्वरितिवाक्, स्तवनीयाय ते नमः ॥

➡ **भावार्थ :** चारों तरफ से उदित होने वाले, एसे एक वीर सूर्य रूप प्रभु को तीन लोक के शब्द द्वारा स्तुति करने योग्य को नमस्कार हो.

(हेमचंद्रसूरिकृत वर्धमान शक्रस्तव)

351. दान धर्म के 7 गुण

देवाणुअत्तिभत्तीपूआ, थिरिकरण सत्त अणुकंपा ।
आसोदय दाणगुणा, पभावणा, चेव तित्थस्स ॥५८३॥

1) **देवानुवृत्ति** - देव भी भगवान की पूजा करते है इसलिये दान देने से देवो का अनुकरण होता है ।

2) **भक्ति** - दान देने से भगवान की भक्ति का लाभ मिलता है

3) **पूजा** - दान देने से भगवान की पूजा का लाभ मिलता है

4) **स्थिरीकरण** - दान देनेवाला व लेनेवाले दोनो धर्म में स्थिर होते है ।

5) **सत्त्वानुकंपा** - समकित का लक्षण अनुकंपा, इसलिये अनुकंपा द्वारा समकित की प्राप्ति.

6) **शातोदय** - शातावेदनीय कर्म का बंध.

7) **तीर्थप्रभावना** - जिनशासन की प्रभावना होती है ।

(आवश्यक निर्युक्ति)

352. दानवीर भामाशाह

➡ जब महाराणा प्रताप हल्दीघाटी के युद्ध में हार गये और पहाडी जंगल में फिरने लगे तन भामाशाह उनके पास जाकर कह रहे है तो आप शूरवीर हो तो देश की सेवा करो ? तब राणा ने कहा सेन्य भी नहि, धन भी नहि कैसे देशकी रक्षा करुं ? उसी समय भामाशाह ने अपनी समस्त संपत्ति महाराणा को अर्पण कर दी. 12 साल तक 25,000 सेनिक अपना गुजरान चला सके. इतना धन दिया. एसे उदयपुर नगर के भामाशाह हो गये. इसी भामाशाह के स्मरण में केन्द्र सरकार ने 31 दिसम्बर 2000 के दिन ^ रुपये की टिकिट बहार प्रकाशित की थी.

353. दान के पांच भूषण व दूषण

➡ **पांच भूषण**

1. दान देते समय हर्ष के आंसु.
2. योग्य व्यक्ति देखकर आनंद होना.
3. सामने के व्यक्ति प्रति बहुमान भाव.
4. व्यक्ति के साथ प्रिय वचन का उपयोग.
5. योग्य व्यक्ति की वारंवार अनुमोदना.

➡ **पांच दूषण**

1. दान देते समय आदरभाव नहि होना.
2. दान देने में विलंब करना.
3. दान देते समय अरुचि होना.
4. सामने के व्यक्ति प्रति अप्रिय वचन उच्चारना.
5. दान देने के बाद पश्चाताप करना.

(उपदेश तरंगीणी)

354. गीतार्थ यानि क्या ?

गीयं भन्नई सुत्तं, अत्थो तस्सेव होई वक्खाणं ।
गीएण च अत्थेणय, संजुत्तो होई गीयत्था ॥

➡ **भावार्थ :** गीत यानि सूत्र, अर्थ यानि व्याख्या. जो सूत्रव अर्थरूप व्याख्या से युक्त होते है वो गीतार्थ. श्रमण योग्य सभी सूत्रो की जाणकारी अर्थ के साथ होनी चाहिए ।

355. पच्चक्खाणा पारने की छ शुद्धि

1. **फासिअं** - उचित समय पर विधी पूर्वक पच्चक्खाण प्राप्त कीया
2. **पालियं** - कीये हुए पच्चक्खाण को बारबार याद करना.
3. **सोहियं** - गुरु की भक्ति करके बढे हुए आहर से निर्वाह करना.
4. **तिरिअं** - पच्चक्खाण का समय पूर्ण होने पर थोडे समय बाद पच्चक्खाण पारना.
5. **किट्टिअं** - भोजन करते समय भूल न होवे उस लिये वापिस पच्चक्खाण को पुनः याद करना.
6. **आराहियं** - पांच प्रकार की शुद्धि का पालन शुद्धि पूर्वक करना.

(प्रबोधटीका)

356. तपचिंतवणी काउसग्ग विधी ।

तत्थय चिंतइसंजम जोगाणं न होइ जेण मे हाणी ।
तं पडिवज्जामि तवं, छम्मासं ता न काउमल ॥२३॥
इगाइगुणतीसूणयंपि न सहो न पंचमास मवि ।
एवं चउति-ति दुमासं न समत्थो एगामासं वि ॥२४॥
जा तंपि तेरसूणं, चउत्तीसइमाइआ दुःहाणीए ।
जा चउत्थं तो आयं बिलाइ, जा पोरिसि नमो वा ॥२५॥
जं सक्कं तं हियए, धरेतु पारेत्तु पेहाए पोतिं ।
दाउं वंदणमसढो, तं चिञ पच्चक्खए विहिणा ॥२६॥

➡ **भावार्थ :** मेरे संयम योग की हानि व न हो जाय उस प्रकार से मैं तप का आचरण करुंगा. उसमें मैं छ मास का तप करने को शक्तिमान नहि

हूँ. एक से लगाकर 29 दिन कम तप करने को समर्थ नहि हूँ. इस तरह पांच मास के तप की शक्ति नहि है. चार मास, तीन मास, दो मास, एक मास तप करने की शक्ति नहि है उसमें भी एक - दो करते तेरह उपवास कम करने की शक्ति नहि है उसके बाद 34 भक्त करने की शक्ति नहि उसमें भी दो दो भक्त कम करते चोथ भक्त तक यदि असमर्थ है आंबिल, एकासणा, बिआसणा, नवकारशी करने की शक्ति भी है परिणाम भी है फिर मुहपति पडिलेहण करके वांदणा लेना. ।

(योग शास्त्र प्रकाश-3)

357. प्रभावना शब्द का अर्थ

➠ जिससे धर्म का प्रभाव बढे या धर्म के प्रति आकर्षण बढे उस निमित्त से देनेवाली प्रभावना कहलाती है. अभी पूजा, प्रवचन, महोत्सव आदि में प्रभावना का महत्त्व बढ गया है कभी प्रभावना शब्द का अर्थ समज में न आए तो लोभकषाय में डुब सकते है

➠ **प्रभावना शब्द का सूक्ष्म अर्थ**

अपने में रही हुयी शुभभावना दूसरे में प्रवर्तन करना वो प्रभावना. जिस क्रिया से आत्मा का प्रभाव वधे वो प्रभावना

सम्यग् दर्शन ज्ञान चारित्र रत्नत्रयप्रभावेण आत्मनाप्रकाशना प्रभावनम्

सम्यग् दर्शन-ज्ञान-चारित्र द्वारा आत्मा को प्रकाशमान करना वो प्रभावना।

विज्जारहमारुढो मणोरहपएसु ममई जो वेदा ।

सो जिणणाणपहावी, सम्मदिट्ठा मुणेयव्वो ॥

➡ **भावार्थ :** जो आत्म विद्यारूपी रथ उपर आरूढ होकर ज्ञानरूपी रथ के मार्ग में भ्रमण करते है वो जिनेश्वर भगवान के ज्ञान की प्रभावना करने वाला सम्यक् द्रष्टि जीव कहलाता है ।

मोहारतिक्षतेः शुद्धः शुद्धाच्छुद्धतरस्ततः ।

जीव शुद्धतमः कश्चिदयस्तीत्यात्म प्रभावना ॥

➡ **भावार्थ :** मोहरूपी शत्रु का नाश करके शुद्ध में से शुद्धत्तर व शुद्धतर में से शुद्धतम भूमिका तक पहोंचने का पुरुषार्थ वो आत्मप्रभावना ।

(जिनतत्त्व)

358. आलोचना यानि क्या ?

आ अभिविधिना सकलदोषाणां लोचनो गुरुपुरतः प्रकाशना आलोचना

➡ **भावार्थ :** विधी पूर्वक जो दोष लगे हुए है उन सभी दोषो का गुरु के आगे प्रकाशन करना वो आलोचना । **(भगवती टीका)**

➡ **आलोचना लेते समय 10 प्रकार के अतिचार को दूर करना.**

1. **आकंपित** - गुरु आलोचना कम देंगे उस हेतु से गुरुकी सेवा करना. गुरु को प्रसन्न करना. फिर आलोचना मांगना.
2. **अनुमानित** - गुरु मेरे को कैसे प्रायश्चित कम देंगे एसा अनुमान करने के बाद प्रायश्चित मांगना. ।
3. **यद्दृष्ट** - मेरे दोष को कीसी ने देख लिया है इसलिये अब आलोचना लेनी पडेगी. दोष जो देखे उनकी आलोचना ले बाकी की नहीं ।
4. **आदर** - छोटे दोष की आलोचना से बचने के लिये बडे बडे दोषो की आलोचना मांगना.

5. **सूक्ष्म** - गुरु का विश्वास खडा करके सिर्फ सूक्ष्म दोषो की आलोचना लेना. बडे दोष की बडी आलोचना आयेगी. एसा विचार करके बडे दोष छुपा देना ।

6. **प्रच्छन्न** - बहोत बार साधक को अपने दोष बताने में शरम आती है भूल का एकरार करने में संकुचित होता है उसके लिये दूसरे का नाम देकर या इस दोष से क्या आलोचना आती है इस तरह आलोचना लेना.

7. **शब्दकाल** - लोगो को बताने के लिये मैं कितना शुद्ध हूँ इस तरह बताने के लिये जोर से बोलकर आलोचना मांगना.

8. **बहुजनपृच्छा** - एक आचार्य के पास आलोचना लेने के बाद अपनी प्रशंसा हेतु दूसरे के पास जाकर वापिस आलोचना लेना.

9. **अव्यक्त** - कोई आचार्य छोटी उम्र के हो, या उनके पास अल्पज्ञान हो, या उनको प्रायश्चित की पूर्ण जाणकारी न हो. उनके पास अज्ञानता का लाभ उठाने आलोचना मांगना. जो दोंगे वो चलेगा. ।

10. **तत्सेवी** - पासत्था मुनि के पास आलोचना लेना. जो दोष गुरु सेवते है वो दोष का सेवन खुद भी करता हो तो आलोचना कम मिलेगी एसे भाव से आलोचना मांगना ।

➠ आलोचना लेते समय गुरु और स्वयं दो ही होने चाहिए. लगे हुए सभी दोषो की शुद्धि करके विधीपूर्वक आलोचना लेना जिसको 'चतुष्कर्णा आलोचना' कहते है । **(भगवती सूत्र)**

359. समयं गोयम मा पमायए

➠ महावीर स्वामी व गौतम स्वामी का 30 साल से लगातार संबंध था. प्रभुवीर ने भी गौतम स्वामी को ध्यान में लेकर साथ में दूसरे जीव भी

प्रमाद में नहि गिरे उसके लिये बार बार '**समयं गोयम मा पमायए**' इन चार शब्द व अग्यार अक्षर का उच्चार करते थे. हाल उत्तराध्ययन सूत्र के 10 वें अध्ययन के प्रत्येक गाथा का अंतिम चरण यही है. इस शब्द को परमात्माने 2500 साल पहले बोला था तो भी ये शब्द आज अपने कान में गुंज रहे है. क्योंकि परमात्मा का एक ही निषेध रूप उपदेश है क्या क्या नहि करना चाहिए. जीवन में आत्म विकास की यह एक हित शिक्षा है. इसी हित शिक्षा के द्वारा जीव केवलज्ञान तक पहोंच सकता है. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, और योग ये चार प्रमाद में महत्व का भाग बता रहे है. इन चारों को छोडने के लिये यह हित शिक्षा है. क्योंकि समये - समये क्षणे क्षणे एसी अप्रमत्त अवस्था प्राप्त होनी अति दुर्लभ है. सम्यग् चारित्र प्राप्त करने के बाद दर्शन-ज्ञान की आराधना में एक क्षण का भी प्रमाद नहि करना चाहिए. एसी हित शिक्षा प्रभु वीर की है पंचाचार का चुस्त रुप से पालन करने वाला चौदपूर्वी चार ज्ञान के मालिक, गणधर गौतम स्वामी को प्रभु ने एसा उपदेश बार बार दिया तो अपने को खास विचारना चाहिए । (**उत्तराध्ययन सूत्र**)

360. क्रिया अवश्य करना

अविहिकयां वरमकयं, अस्सुअ वयणं वयति सव्वाणु ।
पायच्छितं जम्हा अकए, गुरुअं कए लहुअं ॥

➡ **भावार्थ :** अविधी से करना उससे न करना श्रेष्ठ है एसे वचन को सर्वज्ञ उत्सूत्र वचन कहते है. क्योंकि नहि करनेवाले को बडा प्रायश्चित व अविधी से करनेवाले को छोटा प्रायश्चित आता है ।

361. अनुकंपा - दान किसको दिया जाता है

➡ दीन, अनाथ, बांधव बिनाका, रोगी, जेलर, विदेशी मुसाफर, व्यसनो में आसक्त, अंध, पंगु, ठुंठा, कुबडा, वासणा, बाल, वृद्ध, भूख, तृषा वाले, इस तरह दुःखी प्राणीओ को करुणा के सागर जिसको दान देते है उनको केवली अनुकंपा कहते है । (हितोपदेश)

362. स्वाध्याय शब्द की व्याख्या

1. **स्वस्य आत्मनः अध्ययनम्-स्वाध्याय =** अपने आत्मा का अध्ययन वो स्वाध्याय ।
2. **अध्ययनमध्यायः सु सुन्दरोऽध्यायः स्वाध्याय :** सुंदर अध्ययन यानि सत् शास्त्र का मर्यादा के साथ अध्ययन करना वो स्वाध्याय ।
3. **शोधनं आ मर्यादया अधीयते इति स्वाध्याय :** विधि के अनुसार मर्यादा के साथ, श्रुत का अनुसरण अध्ययन करना वो स्वाध्याय. (ठाणांगसूत्र)
4. **सुष्ठु आ मर्यादा अधीयते इति स्वाध्याय :** सत् शास्त्र का मर्यादा के साथ अध्ययन करना वो स्वाध्याय. .
5. **स्वाध्याय स्तत्त्वज्ञाननस्याध्ययन मध्यापनं स्मरणं च** - तत्त्वज्ञान को पढना, पढाना, और स्मरण करना वो भी स्वाध्याय ।
6. **ज्ञानभावनालस्य त्यागः स्वाध्याय**- प्रमाद का त्याग करके ज्ञान की भावना व आराधना करना वो भी स्वाध्याय.
7. **बारसंगं जिणक्खदं सज्झायं कथितं बुधैः**- बार अंग जो परमात्मा ने बताये है उनको पंडितजन स्वाध्याय कहते है । (ठाणांगसूत्र)

363. स्वाध्याय किसको कहते है

➠ स्व यानि आत्मा - गणधर भगवंत रचित और महापुरुष रचित ग्रंथो यानि आगम, ग्रंथ, चरित्र, पुस्तक आत्मा को उपकारक हो वो स्वाध्याय. दूसरे धर्म के पुस्तक, शायरी, जोक्स, पेपर, सामाजिक, राजनेतिक आर्थिक आदि साहित्य को पढना वो स्वाध्याय नहि है. । जो अध्ययन अपने जीवन को बहिर्मुख बनाता है. अपने जीवन में रही हुयी अशुद्धि, मिथ्यात्व, मलिनता को दूर करता वो स्वाध्याय है । चिंता वाला व्यक्ति भी यदि धर्म का चिंतन करे तो चिंता भी दूर हो जाती है.

➠ **स्वाध्याय व चिंतन से होने वाले फायदे**

1) जिसके द्वारा चंचल मन भी वश होता है
2) जिसके द्वारा पूर्व उपार्जित अशुभ कर्म का नाश होता है.
3) जिसके द्वारा संसार वृद्धि के सभी कर्म रुक जाते है.
4) जिसके द्वारा तीर्थंकर, गणधर के उपर बहुमान भाव बढता है.
5) देव-गुरु-धर्म, दर्शन, ज्ञान-चारित्र के उपर श्रद्धा भाव बढता है. जिनवाणी का श्रवण - वाचना वो भी स्वाध्याय है

364. मलयगिरिजी की टीका व श्लोक

1. भगवती शतक-2 - 3,750	11. पिंडनि. टीका- 6,700
2. राजप्रश्नीय टीका- 3,700	12. ज्योतिष्करंडक- 5,000
3. जीवाजीवाभिगमटीका- 16,000	13. धर्म संग्रहणी- 10,000
4. प्रज्ञापनांग टीका- 16,000	14. कर्म प्रकृति टीका- 8,000
5. चंद्रप्रज्ञप्ति टीका- 9,500	15. पंच संग्रह टीका 18,500

6. सूर्यप्रज्ञप्ति टीका - 9,500
7. नंदीसूत्र टीका - 7,732
8. व्यवहारसूत्र टीका - 34,000
9. बृहत्कल्प टीका - 4,600
10. आवश्यक वृत्ति - 18,000
16. षडशीती टीका - 2000
17. सप्ततिका वृत्ति - 3,780
18. लघुसंग्रहणी टीका - 5,000
19. बृहत्क्षेत्र समास - 9,500
20. शब्दानुशासन - 5000

(रायपसेणी - 77)

365. जैन आगम में वांजीत्र के नाम

1. कच्छपी
2. कच्छृपी
3. कलशिका
4. कुस्तुम्बर
5. झाल्लरी
6. तुम्बवीणा
7. तृण
8. परह
9. परिली
10. बद्धक
11. बद्धिसग
12. वल्लकी
13. मृदंग
14. लतिय
15. वीणा
16. वंश
17. शंख
18. श्रृंग
19. मड्डक
20. हुड्डक

(रायपसेणी सूत्र)

366. नमो तित्थस्सयानि क्या ?

तीर्थंकरा हि सर्वतः सन्मुखा एव, न तु पराङ्मुखा क्वापि ।

➡ तीर्थंकर चारो तरफ सामने मुख रखकर बैठते है मगर दूसरी तरफ मुख नहि रखते. समवसरण में बिराजमान होने के बाद देशना देने से पूर्व सबसे पहले नमोतित्थस्स बोलकर तीर्थ को नमस्कार करते है तीर्थ यानि चतुर्विध संघ. परमात्मा खुद तीर्थंकर बनने के बाद भी संघ को महान् मानते है. संघ पूजनीय है पूजनीय की पूजा होनी चाहिए. 'नमोतित्थस्स'

शब्द बोलते ही इनके हृदय में विनयगुण व संघ महात्म्य का दर्शन होता है. भगवती सूत्र में 'नमो सुयस्स' शब्द लिखा है उसका भी अर्थ तीर्थ है द्वादशांगी यानि श्रुतज्ञान उनके प्रति विनयभाव दर्शाने हेतु श्रुत को नमस्कार करते है ।

367. स्वाध्याय से कर्म निर्जरा

➠ जिस तरह अग्नि मे तपाने से सुवर्ण चांदी का मेल नाश होता है उसी तरह स्वाध्याय में लीन होने से शुद्ध अंतःकरण वाले और तप में अनुरक्त साधु पूर्व उपार्जन कर्म मेल नष्ट होने से विशुद्ध होते हैं ।

(दशवैकालिक सूत्र)

➠ **बहुभवेसंचियं खलु सज्जाणा खणे हवई**- अनेक भवो के संचित कर्मो का स्वाध्याय द्वारा क्षणभर में नाश हो सकता है इसमें भी विशेष करके ज्ञानावरणीय कर्म का नाश होता है ।

➠ **सज्झाएणंभंते ! जीवे किं जणयइ ? – सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खपेइ** – जब जब प्रभु का पूछने में आता तब एक ही जवाब देते है स्वाध्याय करने से जीव ज्ञानावरणीय कर्म को खपाता है ।

(उत्तराध्ययन सूत्र)

➠ **प्रज्ञातिशय- प्रशक्ताध्यवसायः परमसंवेगस्तपो वृद्धिऽ तिचार विशुद्धिस्त्येव माद्यार्थः** - प्रज्ञा में अतिशय लाने के लिये अध्यवसाय को प्रशस्त बनाने के लिये, परम संवेग हैतु, तप वृद्धि व अतिचार शुद्धि हैतु स्वाध्याय तप आवश्यक है । (सर्वार्थसिद्धि)

सवणे नाणेय विन्नाणे, पच्चक्खाणेय संजमे ।
अन्नहए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धि ॥

1. साधु के संग से धर्म का श्रवण
2. धर्म श्रवण से तत्त्वज्ञान
3. तत्त्वज्ञान से विज्ञान (विशिष्ट बोध)
4. विज्ञान से प्रत्याख्यान
5. प्रत्याख्यान से संयम
6. संयम से अनाश्रव (नये कर्मो का अभाव)
7. अनाश्रव से तप
8. तप से व्यवधान (चीकने कर्मका नाश)
9. कर्मनाश से मोक्ष

(भगवती सूत्र)

368. धर्म कथा के प्रकार

➡ जो कथा सुनते सुनते श्लोक मन में अतिशय आनंद उत्पन्न होना, साथ में धर्म का बोध होना वो 'धर्मकथा'

1. आक्षेपणी कथा के चार प्रकार

1. आचार आदि का वर्णन करने वाली आचार क्षेपणी कथा.
2. प्रमाद से लगे हुए दूषणों को दूर करने हेतु प्रायश्चित लेने रुप व्यवहार क्षेपणी कथा.
3. श्रोता के मन के संशय को मधुरवचन द्वारा दूर करनेवाली प्रज्ञाप्याक्षेपणी कथा.
4. सुनने वाले को भी पसंद पडे एसे नय - दृष्टिकोण से तत्त्व का निरुपण करनेवाली दृष्टिवादाक्षेपणी कथा.

2. विक्षेपणी कथा के चार प्रकार

1. अपने सिद्धांत के साथ साथ अन्य के सिद्धांतो का समजाना.
2. दूसरे के सिद्धांत के साथ साथ स्व सिद्धांत समजाना.
3. समवाद समजाते मिथ्यावाद समजाना.
4. मिथ्यावाद समजाते समवाद समजाना.

3. संवेगनी कथा के चार प्रकार

संसार की असारता समजाकर त्याग वैराग्य उत्पन्न होवे उसके चार प्रकार (1) आलोक संबंधी (2) परलोक संबंधी (3) पर शरीर संबंधी (4) स्व शरीर संबंधी.

4. निर्वेदनी कथा के चार प्रकार

1. आलोक में कीए हुए शुभाशुभ कर्मो का फल आलोक में मिले वैसी कथा.
2. आलोकमें कीए शुभाशुभ कर्मो का फल परलोक में मिले वैसी कथा.
3. परलोक में कीए शुभाशुभ कर्मो का फल आलोक में मिले वैसी कथा.
4. परलोक में कीए शुभाशुभ कर्मो का फल परलोक में मिले वैसी कथा.

धर्मकथा मिलने से जीव सौभाग्यशाली व कर्म निर्जरा का भागी बनता है । **(जिन तत्त्व)**

369. मानव जन्म की दुर्लभता बतातें पाठ

1. **माणसत्तं भवेमूलं, लाभो देवगइ भवे ।**
मूलच्छेएण जीवाणं, णरगतिरिखत्तणं भुवं ॥

भावार्थः- मनुष्य जन्म प्राप्त करना वो मूल धन की रक्षा है देवत्व प्राप्त करना वो लाभ स्वरुप है नरक गति - तिर्यञ्चगति में जन्म लेना वो मूल धन को नाश करने बराबर है । **(उत्तराध्ययन)**

2. **चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहा इह जंतुणो ।**
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि अवीरीअं ॥

➡ **भावार्थः** - प्राणी को चार अंग प्राप्त होने अति दुर्लभ है । (1) मनुष्य का अवतार (2) धर्म का श्रावण (3) धर्म मे श्रद्धा (4) संयम आचरण मे शक्ति । **(उत्तराध्ययन)**

3. **छ ठाणाइं सव्वजीवाणं दुलभाई भवंति**
माणुस्सएभवे आरिए खित्तेजम्मे, सकुले पच्चायति ।
केवलिपन्नतस्स धमस्स सवणया, सुयस्स वा सद्दणया

➡ **भावार्थः** - सभी जीवो के लिये 'छ' वस्तु अति दुर्लभ है ।
1. मनुष्य भव 2. आर्यक्षेत्र 3. उत्तमकुल 4. केवली भाषित धर्म का श्रवण 5. धर्म के पर श्रद्धा 6. धर्म की आचरण **(ठाणांग सूत्र)**

4. **चउहिं ठाणाहिं जीवा मणुसत्ता एकम्मं पगरेंति तंजहा ।**
पराइभडभयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरियाए ॥

➡ **भावार्थः** - इन चार कारणो से जीव मनुष्य गति का आयु बांधता है.
1. सरलस्वभाव 2. विनीतप्रकृति ३. दया भाव 4. इर्ष्या का अभाव
(ठाणांग सूत्र)

5. **अनुलोमो विनीतश्च दयादानरुचिर्मृदुः ।**
सहर्षो मध्यदर्शीय मनुज्यादागतो नरः ॥

➠ **भावार्थः**- जो सभी के साथ अनुकुल बनकर रहता हो. विनयवान हो, दान के प्रति प्रीतीवाला हो, स्वभाव से कोमल हो, मध्यमदृष्टि वाला हो व्यक्ति मनुष्यगति मे आया हुआ जानना. **(धर्मकल्पद्रुम)**

6. **यः प्राप्य मानुषं जन्मं, दुर्लभं भवकोटिभिः ।**
धर्म शर्म करं कुर्यात्, सफलं तस्यजीवितम् ॥

➠ **भावार्थः** करोडो भव होने के बाद भी जो प्राप्त न हो सके एसा दुर्लभ मानव भव प्राप्त करके जो जीव कल्याण धर्म आचरता है उसका जीवन सफल है ।

7. **स्वर्णथाले क्षिपति सरजः पाद शौचं विधत्ते, पीयूषेण प्रवरकारिण, वाहयन्तेन्धभारम् ।**
चिन्तारत्नं विकरित कराद् वायसोड्डायनार्थं, यो दुष्प्राप्यं गमयति मुधा, मर्त्य जन्म प्रमत्तः ॥

➠ **भावार्थः**- जो व्यक्ति प्रमाद को वश होकर दुष्प्राप्य एसे मनुष्य जन्म को व्यर्थ (फोगट) कर देता है वो अज्ञानी व्यक्ति सुवर्ण की थाली में मिट्टी भरने जैसा है अमृत से पैर धोने जैसा है हाथी के उपर लकडे भरने जैसा है व चिंतामणी रत्न के द्वारा कौए को उडाने जैसा है ।

(सिंदूर प्रकरण)

370. विनय शब्द की व्याख्या

1. **विशेषेण नयतीति विनयः** - जो विशेषता तरफ ले जाता है वो विनय

2. **विनीयन अपनीयते कर्म येनस विनयः**- जिसके द्वारा कर्म का विनयन (कर्मो का क्षयोपशम) करने में आवे वो विनय

3. **पूज्येषु आदर विनयः**- पूज्यो के प्रति आदरभाव वो विनय.

4. **गुणाधिकेषु नीचैर्वृतिः** - अधिक गुणवालो के प्रति नीचे नमन करने का भाव वो विनय

5. **रत्नत्रयवत्सु नीचैर्वृत्तिः विनयः** - रत्नत्रय के धारक को नमन करने का भाव वो विनय.

6. **कषाय - इंन्द्रिय - विनयनं विनयं** - कषाय और इन्द्रिय का जो विनियन (मंद) करे वो विनय.

7. **विशिष्टो - विविधो वा नयो विनय** - विशिष्ट व विविध प्रकार के जो नय (सिद्धांत) वो विनय.

8. **विनयं नयति कर्ममल इति विनयः**- जो कर्म को विलय (नाश) तरफ ले जाय वो विनय.

9. **विनयति क्लेशकारकं अज प्रकारं कर्म इति विनयः** - आठ प्रकार के क्लेश कारक कर्मो का जो विनयन (नाश) करे वो विनय.

10. **अनाशातना बहुमान करणे च विनयः** - आशातना छोडकर बहुमान करना वो विनय. जहां नमस्कार का भाव वहां पर विनय.

11. **कर्मणा दाग विनयाधिन यो विदुषां मत मतः अपवर्ग फलाढस्य मूलं धर्म तरोश्यम ।** - विनय कर्मो का त्वरित विनयन करता है उसके उपर मोक्षरुपी फल उगता है. एसे धर्मरुपी वृक्ष का मूल विनय है ।

(द्वात्रिंशद्वात्रिंशिका)

12. **विणय संपण्णदाए चेव 'तित्थयर नामं कम्मं बंधर्ति** - विनय संपन्नता से तीर्थंकर नामकर्म का बंध होता है ।

13. विनय से मोक्ष की परम्परा

1. विनय का फल - गुरुसेवा
2. गुरु सेवा का फल - श्रुतज्ञान
3. श्रुतज्ञान का फल - विरति
4. विरति का फल - आश्रवनिरोध
5. आश्रव निरोध का फल - तपोबल
6. तपोबल का फल - कर्म निर्जरा
7. कर्म निर्जरा का फल - क्रियानिवृत्ति
8. क्रिया निवृत्ति का फल - अयोगित्व.
9. अयोगित्व का फल - मोक्ष **(प्रशमरति प्रकरण)**

➡ इस तरह विनय मोक्ष तक पहोंचाता है ।

371. 1296 गुण आचार्य भगवंतके

बारसे छन्नु गुणे गुणवंतो, सोहम जंबू महंता ।
आयरिय दीठे ते दीठा, स्वरुप समाधि उल्लसंता ॥

पूर्वाचार्य ने छत्तीस छत्तीसी आचार्य भगवंत के गुणों की गुरुगुण षर त्रिंशत षट त्रिंशिका नाम के ग्रंथ में बतायी है हरिभद्र सूरिने भी संबोध प्रकरण ग्रंथ में छत्तीस छत्तीसी बतायी. 36 × 36 गुणाकार करते 1296 गुण होते है।

1. **प्रथम छत्तीसी** - देशना - 4 कथा - 4 धर्म-4 भावना-4 स्मरणादि-4 आर्तध्यान-4 रौद्रध्यान-4 धर्मध्यान-4
शुक्लध्यान-4 = 36

2. **दूसरी छत्तीसी** - सम्यक्त्व - 5 चारित्र - 5 महाव्रत - 5 व्यवहार - 5 आचार - 5 समिति - 5 स्वाध्याय - 5 संवेग -1 = 36

3. **तीसरी छत्तीसी** - प्रमाद - 5 आश्रय - 5 निद्रा - 5 कुभावना - 5 इन्द्रिय - 5 विषय - 5 जीवनिकाय- 6 = 36

4. **चतुर्थ छत्तीसी** - लेश्या - 6 आवश्यक - 6 द्रव्य - 6 दर्शन - 6 भाषा - 6 वचनदोष - 6 = 36

5. **पंचम छत्तीसी** - भय - 7 पिंडैषणा - 7 पानैषणा - 7 सुख - 7 मद - 8 = 36

6. **षष्ठ छत्तीसी** - ज्ञानाचार - 8 दर्शनाचार - 8 चारित्राचार - 8 गुण - 8 बुद्धि - 4 = 36

7. **सप्तम छत्तीसी** - कर्म - 8 अष्टांगयोग - 8 योगदृष्टि - 8 महा सिद्धि - 8 अनुयोग - 4 = 36

8. **अष्टम छत्तीसी** - तत्व - 9 ब्रह्मचर्य - 9 नियाण्त - 9 कल्प - 9 = 36

9. **नवम छत्तीसी** - असंवरत्याग - 10 संक्लेशत्याग - 10 उपघात - 10 हास्यादि - 6 = 36

10. **दशवी छत्तीसी** - समाधिस्थान - 10 सामाचारी - 10 कषायात्याग - 16 = 36

11. **अग्यारवी छत्तीसी** - प्रतिसेवना - 10 शोधिदोष - 10 विनयसमाधि - 4 श्रुतसमाधि - 4 तपसमाधि - 4 आचार समाधि - 4 = 36

12. **बारवीं छत्तीसी** - वैयावच्च - 10 विनय - 10 क्षमाधर्म - 10 अकल्पनीय परिहार - 6 = 36
13. **तेरवीं छत्तीसी** - अंग - 12 उपांग - 12 रुचि - 10 शिक्षा - 2 = 36
14. **चौदवी छत्तीसी** - श्रावक प्रतिमा - 11 व्रतोपदेश - 12 क्रिया स्थान - 13 = 36
15. **पंदरवी छत्तीसी** - उपयोग - 12 उपकरण - 14 प्रायच्छित्त - 10 = 36
16. **सोलवी छत्तीसी** - तप - 12 भिक्षुप्रतिमा - 12 भावना - 12 = 36
17. **सत्तरवी छत्तीसी** - गुण स्थानके - 14 सूक्ष्मोपदेशी - 8 प्रतिरुपादिगुणयुक्त - 14 = 36
18. **अढारवी छत्तीसी** - योग - 15 गौरव - 3 शल्य - 3 संज्ञा - 15 = 36
19. **उन्नीसवी छत्तीसी** - उद्गमदोष - 16 उपादान - 16 अभिग्रह - 4 = 36
20. **वीसवी छत्तीसी** - वचनविधिज्ञ - 16 संयम - 17 विराधना - 3 = 36
21. **इक्कीसवी छत्तीसी** - नरदीक्षादोषपरिहार - 18 पाप स्थानक परिहारन - 18 = 36
22. **बाईसवी छत्तीसी** - शीलांग सह सुधारक - 18 ब्रह्मभेद - 18 = 36
23. **तेइसवी छत्तीसी** - कायोत्सर्गदोष - 19 मरणप्रकार - 17 = 36
24. **चोवीसवी छत्तीसी** - असमाधिस्थान त्याग - 20 एषणादोष - 10 ग्रासैषणा - 5 मिथ्यात्व - 1 = 36
25. **पच्चीसवी छत्तीसी** - सबलस्थानत्याग - 21 शिक्षाशील - 15 = 36
26. **छवीसवी छत्तीसी** - परिषह सहन - 22 अभ्यंतर ग्रंथी - 14 = 36

27. **सतावीसवी छत्तीसी** - वेदिका दोष त्याग - 15 आरभटादिदोष - 6 प्रतिलेखना - 15 = 36
28. **अठ्ठावीसवी छत्तीसी** - अणगार गुण - 27 कोटि विशुद्धि - 9 = 36
29. **उन्तीसवी छत्तीसी** - लब्धि - 28 प्रभावक - 8 = 36
30. **तीसवी छत्तीसी** - पापश्रुतवर्जन - 29 शोधिग्रहण - 7 = 36
31. **एकतीसवी छत्तीसी** - महामोहबंध स्थान सर्जन - 30 अंतरंगारि वर्जन - 6 = 36
32. **बत्तीसवी छत्तीसी** - सिद्धगुण - 31 ज्ञान अकीर्तन - 5 = 36
33. **तेत्रीसवी छत्तीसी** - जीवरक्षक - 32 उपसर्ग विजेता - 4 = 36
34. **चोतीसवी छत्तीसी** - वंदन दोष परिहार - 32 विकथा - 4 = 36
35. **पैंतीसवी छत्तीसी** - आशातनावर्जी - 33 वीर्याचार - 3 = 36
36. **छत्तीसवी छत्तीसी** - गणिसंपदा - 32 विनय - 4 = 36

(गुरु गुण षट्त्रिंशत् षट् त्रिंशिता)

372. तीर्थ किसको कहते है

तीर्यते संसार समुद्रो तेनेति तीर्थम् ।
तत्त्व प्रवचनाधारः चतुर्विध संघः प्रथमगणधरो वा ॥

➡ जिसके द्वारा संसार रुपी समुद्र तरा जाय वो तीर्थ.

1. साधु साध्वी - श्रावक - श्राविका ये चारो का मिलन वो तीर्थ.
2. प्रथम गणधर वो भी तीर्थ कहलाता है.
3. द्वादशांगी को भी तीर्थ कहते है.
4. जहां परमात्मा के कल्याणक हुए हो या परमात्मा विचरे हो या 100 साल पुराना जिनमंदिर वो तीर्थ कहलाता है ।

चारो को नमोतित्थरस कहकर स्वीकार करना चाहिए ।

➡ चतुर्विध संघ में प्रधानता पुरुष यानि श्रमण भगवंत की है

➡ तीर्थ की स्थापना करनेवाले तीर्थंकर अचिन्नय प्रभाववाले होते है प्रकृष्ट पुण्य संचित तीर्थंकर नाम कर्म के उद्यम से तीर्थ की स्थापना करते है।

(ललित विस्तरा)

373. साधु के प्रवचन के गुण

➡ प्रभु का वचन यानि प्रवचन जिसमें प्रभु का वचन कहा जाता वो है प्रवाचन । इस तरह निर्ग्रन्थ का प्रवचन होता है ।

1. **सच्चं** - परमात्मा का वचन छ काय जीवो के हितकारी एवं जगतके जीवो को कल्याण मार्ग बताने वाला सत्य है ।
2. **अनुत्तरं** - अनुत्तर यानि अतिश्रेष्ठ यथावस्थित जीवादि सभी पदार्थो का प्रतिवादक है इसलिए यह प्रवचन सर्व श्रेष्ठ है ।
3. **केवलिअं** - केवलिअं यानि अद्वितीय इनकी तुलना में एसा कोई प्रवचन यानि दर्शन नहि है ।
4. **पडिपुन्नं** - यह प्रवचन मोक्ष तक पहोंचा शके इस तरह गुणों से भरपूर है. जगत के सभी विषय इसमें मरे हुए है इसलिये प्रतिपूर्ण प्रवचन है.
5. नेआउयं न्यायनिष्ठ है प्रभु के वचन में अंशमात्र भी अन्याय नहि है. जगत का संपूर्ण न्याय भरा हुआ है ।
6. **संसुद्धं** - प्रभु के वचन संपूर्ण रुप से शुद्ध है कहीं पर अशुद्धि का कालंक का नाम निशान नहिं. कष - छेद - ताप तीनो परीक्षा में त्रिकोटी शुद्ध है ।
7. **सल्लगत्तणं** - तीन शल्य, माया, नियाण, मिथ्यात्व को छोडकर प्रवचन

होता है क्यों कि ये तीनो मोक्ष मार्ग के अवरोधक है प्रभु वचन मोक्ष मार्ग है ।

8. **सिद्धिमग्गं** - जिससे हित की प्राप्ति होती है और अंत में सिद्धि की प्राप्ति.
9. **मुत्तिमग्गं** - अहितकार्य से छोडानेवाले दोनो मोक्ष के मार्ग है ।
10. **निज्जाणमग्गं** - सबसे श्रेष्ठ स्थान यानि मोक्ष स्थान सर्व श्रेष्ठ है ।
11. **निव्वाण मग्गं**- निर्वाण यानि निवृत्ति आठो कर्म की निवृत्तिवाला प्रवचन ।
12. **अवितहं** - जो पदार्थ जो स्वरुप में है उसी स्वरुप में कहना.
13. **अविसंधि** - प्रभु के शासन में प्रवचन का कीसी भी स्थान में विच्छे नहि है महाविदेह में भी सतत प्रवचन है ।
14. **सव्वदुक्खप्पहीणमग्गं** - सभी दुःखो का नाश करनेवाला प्रवचन से दुःखो का अंत आता है ।

374. समवसरण में पर्षदा का प्रवेश

1. प्रथम गणधर भगवंत व मुनिवर पूर्व दिशा में से प्रवेश करके तीन प्रदक्षिणा देकर 'नमोतित्थस्स' शब्द बोलकर अग्नि कोणे में बैठते है.
2. निरतिशयवाले मुनिवर पूर्वदिशा में से प्रवेश करके प्रदक्षिणा देकर नमोतित्थस्स अईसेसिआणं बोलकर अतिशयधारी मुनिओ के पीछे बैठते है ।
3. वैनानिक देवीओ पूर्वदिशा में से आकार प्रभु को तीन प्रदक्षिणा देकर नमो तित्थस्स, नमो अइसेसिआणं, नमो साहूणं बोलकर निरतिशय मुनिओके पीछे खडी रहती है ।
4. साध्वीजी भी पूर्वद्वार से आकर प्रभुको तीन प्रदक्षिणा देकर 'नमोतित्थस्स'

नमो अईसेसिआणं, नमोसाहूणं बोलकर वैमानिक देवी के पीछे खडी रहती है। दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशा में से देव मानव, देवी, स्त्री आदि आकर क्रमपूर्वक बैठते है व खडे रहते है।

बैठने वाले यथाजात मुद्रा में व खडे रहने वाले जिनमुद्रा में हाथ जोडकर खडे रहते है. दूसरे किल्ले में तिर्यञ्च व तीसरे किल्ले में वाहन प्रवेश करते है। (समवसरणस्तव)

375. देशना के बाद बलि उछालने की विधि

➠ देशना के बाद जाहोजहाली - परमात्मा प्रथम प्रहर तक देशना देते है उसके बाद नगर के राजा आदि दुर्बल महिला के द्वारा खांडे हुए व सामर्थ्य के साथ छंडे हुए अखंड कलम जाति के उंचे आढक प्रमाण चावल से बनेहुए सुगंध युक्त बलि बाकला को बाजे गाजे के साथ पूर्वद्वार से प्रवेश करते है। प्रभु के सन्मुख विनयपूर्वक उछालते है बलि भूमि के उपर गिरते ही देवता प्रथम से ही ग्रहण कर लेते है। आधा भाग देवता, आधा भाग गांव का राजा ले जाता है बलि का एक दाणा भी जिसके मस्तक उपर पडता है उनके रोग नाश हो जाते है. छ मास तक नये रोग भी नहि आते है फिर प्रभु देवछंदा में जाते है दूसरे प्रहर में गणधर भगवंत देशना देते है। (समवसरण स्तवन)

376. तित्थपर समो सूरि

कह्याविजिनवरिंदा, पत्ताअयरामरं पहं दाउं।
आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जह संपयं सयलं ॥१२॥

➠ **भावार्थ :-** तीर्थंकर दर्शन - ज्ञान - चारित्र का मार्ग बताकर मोक्ष प्राप्त

करते है । उनकी जब हाजरी नही होती है तब आचार्य भगवंत प्रवचन धुरा को व सकल संपदा को धारण करते है । (उपदेशमाला)

तित्थयर समो सूरि सम्मं जो जिणमयं पयासेइ

➡ **भावार्थ :** - जो जिनेश्वर मत को सम्यक रुप से प्रकाशित करते है वो आचार्य भगवंत तीर्थंकर समान है । (गच्छाचार पधन्ना)

उत्थमिए जिनसूरे केवलि चंदेवि जे पईवुव्व ।
पयडंति इह पयत्थे ते आयरिए नमंसामि ॥

➡ **भावार्थ :** जिनेश्वर परमात्मा रुपी सूर्य और केवलज्ञानी रुपी चंद्र का जब अस्त होता है उस समय दीपक की तरह प्रकाशमान होने वाले आचार्य भगवंत को मै नमस्कार करता हूं. (उपा यशोविजय)

जह दीवा दीवसयं पहुप्पई सो अ दिप्पइ जीवो ।
दीवसमा आयरिया दिप्पंति परंच दीवंति ॥

➡ **भावार्थ :** जिस तरह एक दीपक सैंकडो दीपक को प्रगट करते है और स्वयं भी प्रदीप्त रहते है दीपक जैसे सूरि भगवंत पंचाचार के पालन हार खुद झलहलते है व दूसरो को पंचाचार के ज्ञान द्वारा प्रकाशित करते है।

➡ **आ मर्यादया चरन्तीति आचार्याः**
जो मर्यादा के साथ विचरण करते है वो आचार्य

➡ **आचारेण वा चरन्तीति आचार्याः**
जो आचार के नियमानुसार विचरते है वो आचार्य.

➡ **पंचस्वाचरेषु ये वर्तन्ते परांश्च वर्तयन्ति ते आचार्याः**
पंचाचार का पालन खुद करते है व दूसरो को कराते है वो आचार्य.

➡ **आचार्य ते सेव्यते कल्याण कामैरित्याचार्यैः**
कल्याण की कामना द्वारा जिनकी सेवा होती है वो आचार्य.

➡ **रागदोस विमुक्को सीयधर समो च आयरिओ ।**

राग द्वेष से विमुक्त होनेवाले शीतधर समान आचार्य है । (**निशीथ भाष्य**)

377. आचार्य की आठ संपदा

1. **आचारसंपदा** - परमात्मा के शासन में आचार का बहोत महत्व है आचार्य खुद पंचाचार में दृढ व अप्रमत होते है व समस्त समुदाय को आचार संपन्न बनाने का प्रयत्न करते है ।
2. **श्रुतसंपदा** - आचार्य के पास श्रुत की संपदा विशाल होती है आचार्य हर प्रश्न का जवाब शास्त्राधार से देते है ।

➡ **श्रुत संपदा के चार प्रकार**

1. **बहुश्रुत** - आगमादि लोकोन्तर शास्त्र में प्रविण व शिल्पादि लौकिक शास्त्र काभी ज्ञान होना चाहिए ।
2. **परिश्रुत** - स्वयं ने जो शास्त्र का आगम का अध्ययन किया है उसका स्वाध्याय चाहिए क्यों कि अवसर आते ही शास्त्रपाठ याद आने चाहिए.
3. **विचित्रश्रुत** - आगम शास्त्र के साथ साथ परदर्शनी के हाथो काभी ज्ञान होना आवश्यक है ।
4. **घोष विगुहि उच्चार** - आचार्य भगवंत का आवाजस्पष्ट (पहाडी) होना चाहिए सिंह गर्जना की तरह सूरि भगवंत गजने चाहिए ।

3. **शरीर संपदा** - शरीर संपदा अच्छी होनी चाहिए यानि सूरि भगवंत के सभी अंगोपांग समर्थ उँचे व स्थूल शरीर होना चाहिए चले तब प्रभावशाली व्यक्ति आ रहा है एसा प्रभाव गिरना चाहिए ।
4. **वचन संपदा** - सूरि भगवंत की वाणी गुणों से युक्त होनी चाहिए जब सूरि भगवंत देशना देते है उस समय तीर्थंकर की देशना चल रही एसा लगना चाहिए. सत्य व प्रिय वचन होने चाहिए. वाणी में मधुरता होनी

चाहिए. सत्य व प्रिय वचन होने चाहिए. राग- द्वेष बिना की वाणी होनी चाहिए. सुनते ही कीसी को गुस्सा न आये या ज्यादा राग उत्पन्न हो न जाय उसका खास ध्यान रखना चाहिए प्रभुके वचन उपर सभी को श्रद्धा उत्पन्न होवे एसा प्रवचन होना चाहिए.

5. **वाचनासंपदा** - शिष्य समुदाय को वाचना देने वाले चाहिए शिष्य की योग्यतानुसार सूत्र - अर्थ वाचना देना. वाचना के बाद शिष्य की परीक्षा लेना स्वयं प्रमाद को छोडकर सभी शिष्य जिनशासन व जैन शास्त्र के अनुरागी किस तरह बने उसी भावना के साथ शास्त्र के सूक्ष्म अर्थ समजाना वाचना, पृच्छना आदि का क्रम समजाना, वाचना के बाद प्रश्नोतरी रखने से शिष्य की जिज्ञासावृत्ति बढती है ।

6. **मतिसंपदा** - सूरि भगवंत सद्बुद्धि वाले चाहिए. कोई आधा वाक्य बोलते ही उनके सार को समजने वाले चाहिए. जैसा प्रसंग होता है उस प्रसंग के अनुसार अनुष्ठान, प्रवचन आदि चाहिए. उनका चिंतन इतना सूक्ष्म होना चाहिए कि कौन सा व्यक्ति किस के लिये आया है व इसको क्या जवाब देना चाहिए ।

7. **प्रयोगसंपदा** - प्रयोग यानि प्रवर्तन सूरि भगवंत अवसरज्ञ होते है किसके साथ कैसा व्यवहार करना. किसको क्या जवाब देना. किसके साथ कैसी चर्चा करना आदि व्यवहार का ज्ञान होना चाहिए ।

8. **संग्रहपरिज्ञा संपदा** - अपना समुदाय अपनी आज्ञा में रहे उनको संयम जीवन उपयोगी उपकरण देने के लिये औचित्य के साथ संग्रह करे जिस तरह जरुर हो उसी तरह देते रहे. कोई शिष्य को परिग्रह का भाव न जगे व उपकरण के प्रति मूर्च्छाभाव कम करने का प्रयत्न कराए.

(दशाश्रुतस्कंध)

378. आचार्य भगवंत के चार विनय

1. **आचार विनय** - स्वयं पंचाचार का पालन शुद्ध रुप से करे व दूसरो को पंचाचार का पालन करावे - जो पालन करते है उनकी अनुमोदना करे. जिस दिन शिष्य ने ज्यादा स्वाध्याय कीया, ज्यादा गाथा, ज्यादा तप कीया, ज्यादा वैयावच्च की उनके उत्साह को टिकानेहेतु अवश्य अनुमोदन करे वो आचार विनय.
2. **श्रुतविनय** - सूत्र व अर्थ को समजाए. श्रुत यानि अग्यार अंग उनका अभ्यास कराए. नय निक्षेप से समजाए. ग्रंथ-चरित्र पढाए व बाद उनकी जिज्ञासा बढे उसके लिये परीक्षा भी रखे. ।
3. **विशेषण विनय** - उपदेश द्वारा मिथ्या दृष्टि को सम्यग्दृष्टि बनाए. अस्थिर को स्थिर करे. उनके अतिचार (दोष) को दूर करे.
4. **दोष निर्धानता विनय** - दोषो को दूर करना वो विनय. सूरिभगवंत अपने प्रभाव को बढाने हेतु चार कषाय को दूर करते है. दोष होते है वो प्रभाव से ढक जाते है उसके लिये राग द्वेष कषाय आदि दोष व अपने सूक्ष्म दोष दूर करने का प्रयत्न करे । **(दशा श्रुत स्कंध)**

379. आचार्य भगवंत को नमस्कार का फल

आयरिय नमक्कारो, जीवं मोएइ भव सहस्साओ ।
भावेण कीरमाणो दोइ, पुणो बोहिलाभाए ॥

➡ **भावार्थ :** जो व्यक्ति आचार्य भगवंत को भाव से नमस्कार करता है वो नमस्कार हजारो भवो से छुडाकर बोहिलाभ (समकित) को प्राप्त कराता है ।

आयरिय नमस्कारो सव्वपावपणासणो ।
मंगलणं च सव्वेसिं, तइअ हवई मंगलं ॥

➡ **भावार्थ :** आचार्य भगवंत को कीया हुआ नमस्कार. सभी पापो का नाश करने वाला है व सभी मंगलो में तृतीय मंगल है ।

न तं सुहं देह विया न माया, जंदिंति जीवाण सूरीस पाया ।
तम्हा हु ते चेव सया भजेह, जं मुक्ख सुक्खाइ लहु लहेह ॥

➡ **भावार्थ :** आचार्य भगवंतो के चरणो में जो सुख प्राप्त होता है वो सुख तो माता पिता भी दे नहि सकते. इसलिये आचार्य के चरण की सेवा जल्दी से मोक्ष प्राप्त कराती है । **(आचार्यपदपूजा)**

आयरिय नमुक्कारो, धन्नाण भवक्खय कुणंताणं ।
कि अयं अणुम्मुयंतो विसुन्ति यावारओ होई ॥

➡ **भावार्थ :** भव के क्षय करने की इच्छावाले धन्य व्यक्ति अपने हृदयमें नमस्कार करने का छोडते नहि है उनके दुर्ध्यान का निवारण वो अवश्य करता है ।

380. बाह्य व अभ्यंतर परिग्रह

➡ **1. बाह्य परिग्रह 9 प्रकारे**

1. धन - रोकडनाणा
2. धान्य - अनाज आदि
3. क्षेत्र - जमीन आदि
4. वास्तु - घर दुकानादि
5. रजत - चांदी आदि
6. कुप्य - बर्तन, फर्नीचर आदि
7. सुवर्ण - सोना - अलंकारादि
8. द्विपद - दो पैरावलि
9. चतुष्पद - चार पैर वाले

➡ **अभ्यन्तर परिग्रह 14 प्रकार**

1. क्रोध	8. भय
2. मान	9. शोक
3. माया	10. जुगुप्सा
4. लोभ	11. स्त्रीवेद
5. हास्य	12. पुरुषवेद
6. रति	13. नपुंसक वेद
7. अरति	14. मिथ्यात्व

381. परिग्रह किसको कहते है ?

न सो परिग्गहो वुत्तो, नायपुत्तेण ताईणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो, इई वुत्तं महेसिणा ॥

➡ **भावार्थ :** गणधर भगवंतो ने प्रभु महावीर के पास से सुना है कि निर्मम भाव से पदार्थो को रखना वो परिग्रह नहि है मगर उनके उपर का मूर्च्छा भाव परिग्रह है मूर्च्छा भाव यानि ममताभाव.

(दशवैकालिक अ. 6 सू. 21)

➡ **परिगृह्यत इति परिग्रहः**- परिग्रहण यानि स्वीकार जिसका स्वीकार करना वो परिग्रह ।

➡ **मूर्च्छा परिग्रहः**- मूर्च्छा भाव (ममता भाव) रखना वो परिग्रह है ।

➡ **लोभ कषायो दया द्विष येषु संग परिग्रहः**- लोभ कषाय के उदय से विषयो का संग करना वो भी परिग्रह है ।

➡ **ममेदं बुद्धिलक्षण परिग्रहः**- यह पदार्थ मेरा है एसी बुद्धि होना वो परिग्रह है ।

➡ **ईच्छा परिग्रहः**- कीसीभी पदार्थ की ईच्छा करना वो भी परिग्रह है ।

➡ **प्राज्ञस्यापि परिग्रहो ग्रह इव क्लेशाय नाशाय च** - होंशियार व्यक्ति के लिये भी परिग्रह ग्रह की तरह क्लेश व नाश का बडा निमित्त बनता है।

➡ **अतिलोभाभिभूतस्य चक्रं भमति मस्तके** - अतिलोभी व्यक्ति का मगज चक्र की तरह घूमता है कारण लोभ भयंकर दुर्गुण है ।

➡ **परिग्रह निविट्ठाणं वेरं तेसिं पवट्ढई** - जो व्यक्ति परिग्रह को बढाता है वो दूसरे के प्रति अपना वैर बढाता है ।

संसार मूल माराम्भास्तेषां हेतु परिग्रहः ।
तस्मादुपासकः कुर्यात् अल्पमल्प परिग्रहम् ॥

➡ **भावार्थः**- संसार का मूल आरंभ है आरंभ का मूल परिग्रह है इसलिये उपासक को कम से कम परिग्रह करना चाहिए ।

➡ **अपरिग्गहो अणिच्छो भणिव्वो**- अनिच्छा वो भी परिग्रह है ।

दोससयमूल जालं, पुव्वरिसि विवज्जियं जई वंतं ।
अत्थं वहसि अणत्थं, कीस अवत्थं तव चरसि ॥

➡ **भावार्थः**- सैंकडो दोषो का मूल मूर्च्छा जाल पूर्वऋषिने छोडकर वमन कीया है अर्थ यह अनर्थ का मूल है अनर्थकारी जो रखता है उसका तप संयम फोगट जाता है । **(उपदेशमाला-तत्त्वार्थ-सर्वार्थ सिद्धि)**

382. संवर तत्त्व के 57 भेद

➡ आत्मा में जो कर्मो का आवागमन होता है उसको रोकना वो संवरतत्त्व है समिति = 5 गुप्ति = 3 यतिधर्म-10 भावना-12 परिषहजय-22 चारित्र = 5 यानि 5 + 3 + 10 + 12 + 22 + 5 = 57 भेद है ।

(तत्त्वार्थ सूत्र)

383. कुंती-द्रौपदी का कार्योत्सर्ग ध्यान

➡ जंगली प्राणीओ से भरपूर जंगल में वास करनेवाले पांच पांडव व कुंती द्रौपदी एक बार सरोवर के थोडे दूर खडे थे. प्रथम पांडव सरोवर में स्नान करने गया वहां देव ने पकड लीया-इस तरह एक-एक बुलाने जाने वाले पांचो पांडव सरोवर में फंस गये. कुंती, द्रौपदी अकेले रह गये चिन्ता में गिर गये. द्रौपदी आक्रन्दन करने लगी. कुंती ने समजाकर धर्मोपदेश दिया. दोनों धर्म ध्यान में स्थिर बनकर कार्योत्सर्ग ध्यान में एसे स्थिर हुए कि कोई चलायमान न कर सके.

उस समय प्रहित नामके सेवक साथ में बैठकर विमान से जा रहे थे. विमान रुक गया. क्यों रुका तपास की दोनों काउसग्ग ध्यान में निश्चल है. पांडव के लिये कार्योत्सर्ग में है पांडव को शंखचूड ने नागपाश से सरोवर में बांध दिया है । छोडाकर सामने लाया फिर कार्योत्सर्ग पारा

(शत्रुंजय माहात्म्य)

384. गांभूतीर्थ की विशेषता

➡ गांभूतीर्थ अभी महेसाणा के पास में है वहां पर मूलनायक गंभीरा पार्श्वनाथ की अतिप्राचीन मूर्ति है. पाटण से पहले गांभूतीर्थ बसा हुआ है. भीनमाल के निन्नक पोरवाल भीनमाल छोडकर प्रथम गुजरात के गांभू गांव जाकर बसे थे. बाद में पाटण गये. वि.सं. 919 में शीलांचार्य ने आचारांग सूत्र की टीका वहां पर रची एवं प्राचीन बौद्ध ग्रंथ सुश्रुत की रचना भी वहां हुयी थी ।

शीलाचार्येण कृता गंभूतायां स्थितेन-टीकैष

385. नागार्जुन योगी

अत्थि सोरठदेशे घाउव्व सिद्धा ढकणगोपरि नागार्जुनो नाम वंदओ ।

➡ **भावार्थ :** सोरठ देश में स्वप्न से सूचित पुत्र को जन्म दिया. नागार्जुन नाम रखा. उन्होंने ढंकगिरि के उपर सुवर्ण सिद्धि प्राप्त की और अनेक औषधि को जाननेवाला बुद्धिशाली बना । (नागार्जुन प्रसंग)

386. गुरु-शिष्य उपमा की छत्तीसी

1. गुरु करे जिसका जतन, वो कभी न पाए पतन.
2. जो प्राप्त करे गुरु की गोद, वो कभी न पाए निगोद.
3. सूर्य के बिना दिन नहिं, गुरु के बिना तत्त्व नहिं.
4. जिसने देखा गुरु का मुखकमल, उसने पाया कर्ममल.
5. जिसने की गुरु की हांसी, उसका समकित गया नाशी.
6. गुरु की इच्छानुसार वर्तन करे, वो शिष्य का सौभाग्य.
   शिष्य की अनुसार वर्तन करे, वो शिष्य का दौर्भाग्य.
7. जिसने भाव से कीयां गुरु को वंदन, उसका जीवन बना चंदन.
8. जो गुरु के साथ करे विहार, वो कभी न पाए हार.
9. जो गुरु का हंमेशा करे समागम, उनको मालूम होवे आगम.
10. गुरु का बहुमान मोक्ष का कारण, अबहुमान नरक का कारण.
11. जो गुरु का हंमेशा करे स्वीकार, उनको गुरु देवे अधिकार.
12. जो गुरु का करे अनादर, वो कभी न पाए आदर.
13. पिता सेवा से पुत्र बना वारस, गुरुसेवा से शिष्य बना पारस.
14. जो गुरु के पास न ले शिक्षा, वो घर घर मांगे भिक्षा

15. जो ग्रहण करे गुरु की दृष्टि. उनके जीवन में अमीवृष्टि.
16. जो बने गुरु को समर्पण, वो बने महाप्रभावक.
17. गुरु का पता शिष्य का मस्तक, शिष्य का पता गुरु का चरण.
18. गुरु मारे शब्द की लाठी, शिष्य की अपराधी की मति नाठी.
19. जो शिष्य देखे गुरु की भूल. उनके जीवन में गिरि धूल.
20. जो गुरु बनाने के बाद भूलते है वो भवोभव घूमते है.
21. गुरु शिष्य को पाले पंपाले, शिष्य गुरु का सुने व ध्यान रखे.
22. गुरु आज्ञा का जो करे पालन. वो पाए केवलज्ञान.
23. गुरुपद की जो करे सेवा, वो पाए मोक्ष मेवा.
24. गुरु को दिया सुपात्र दान, उसने पाया शालीभद्र का मान.
25. जिसने की गुरु की भक्ति. उसने पायी अजोड शक्ति.
26. जिसने पाये सच्चे गुरु, उसके भव भ्रमण हुए दुर.
27. जिसने गुरु के चरण धरा शीष, वो पाया गुरु का आशिष.
28. जिसने गुरु के पास ली दीक्षा, उसने पायी आत्मा की समीक्षा.
29. लकडे की नाव समुद्र तराती है, गुरु शिष्य को भव समुद्र तराते है.
30. गुरु ज्ञान को जो पाया अबुध, वो शिष्य बना प्रबुद्ध.
31. सद्गुरु चरण की उपासना, भांगे कर्म की वासना.
32. जिसने पकडे गुरु के चरण, उसने पाया शुद्ध आचरण.
33. गुरु कुलवासे वसता शीष, पूजनीक होगा विशवावीश.
34. शिष्य इच्छा का हुआ चूरण, उसका भव भ्रमण हुआ पूरण.
35. गुरु के मन की प्रसन्नता, वो ही शिष्य की विकासता.
36. जहां देव वहां गुरु, जहां गुरु वहां देव इसलिये कहा है गुरुदेव.

(संग्राहक-उपा. श्री रत्नत्रय वि.)

387. हनुमान के पूर्व के सात भव

1. **प्रथमभव** - मंदिरपुर नगर प्रियनंदी शेठ, जया शेठाणी, पुत्र दमयन्त, मुनिवरो के पास धर्म सुनकर प्रासुक आहार पाणी वहोराकर कालधर्म पाया.
2. **दूसराभव** - देवलोक में देव बनकर उत्तमसुख प्राप्त कीया.
3. **तीसराभव** - हरिवाहन राजा, प्रियगुण लक्ष्मीराणी, सिंहचंद्रपुत्र, जिनधर्म वासितधर्म का आचरण करके कालधर्म हुआ.
4. **चतुर्थभव** - देवलोक के देव बनकर उत्तम सुख प्राप्त कीया.
5. **पंचमभव** - वैताढ्य पर्वत, सुकंठराजा, कनकोदरी के गर्भ मे सिंहवाहन नामका पुत्र जन्मा । अरुणपुर में लंबेकाल तक राज्य का सुख भोगकर विमलनाथ परमात्मा के शासन में लक्ष्मीधनमुनि के पास दीक्षा लेकर सुंदर चारित्र का पालन करके कालधर्म पाया ।
6. **छठाभव** - छठे देवलोक में देव बनकर उत्तम सुख प्राप्त कीया.
7. **सातवांभव** - देवलोकमें से आकर महेन्द्रराजा की पुत्री व पवनंजय की पत्नी अंजनादेवी की कुक्षी में पुत्ररुप से उत्पन्न हुआ. जो हनुमान दीक्षा लेकर मोक्षगामी बना । (पउमचरियम्)

388. अंजना सती का पूर्वभव

➡ अंजना पूर्वभव में कनकपुर में कनकरथ राजा को कनकोदरी नामकी पट्टराणी थी । उनके साथ दूसरी शोक्यराणी लक्ष्मीमती थी । वो लक्ष्मीमती सम्यक्त्व के कारण प्रतिदिन परमात्मा की पूजा-स्तुति आदि करती थी. स्तुति के आवाज के कारण कनकोदरी को गुस्सा आया और मूर्ति को वहां से उठाकर घर के बाहर वृक्ष नीचे रख दी. संयम श्री

नामके साध्वीजी प्रतिमा देखकर कनकोदरी को समजाकर प्रतिमा वापिस घर में रखवायी. वो प्रतिमा 22 घडी तक बहार रखी उसके लिये अंजना को 22 साल का पति वियोग रहा. कनकोदरी मरकर देवलोक में गई. वहां से च्यवन होकर महेन्द्रराजा-हृदयसुंदरी की पुत्री अंजना 100 पुत्रो के बाद एक अंजना पुत्री हुयी । (पउमचरियम्)

389. रावण-कुंभकर्ण-बीभीषण-हनुमान के अभिग्रह

➡ जब रावण लंका नगर में राज्य करता था तब एक बार रावण-बीभीषण-कुंभकर्ण-हनुमान चारों विमानमें बैठकर मेरुपर्वत के चैत्यालय में परमात्मा की स्तुति करके वापिस जा रहे थे उस समय मार्ग में विमानको रोक कर देखा तो वहां अनंतवीर्य केवली की देशना चल रही थी । तब चारो केवली भगवंत की देशना सुनने लगे । देशनाके बाद केवली की प्रेरणा से चारो ने अभिग्रह धारण कीया ।

1. **रावण** - दूसरे की स्त्री हो या मेरी स्त्री हो मगर उनका मन अप्रसन्न होगा तो मैं प्रार्थना नहि करुंगा. जीवन पर्यन्त यह अभिग्रह रहेगा.
2. **कुंभकर्ण**- आज से सूर्योदय के बाद स्तुति, पूजा, जिनाभिषेक, स्नात्रपूजा आदि का पालन जीवनपर्यन्त करुंगा ।
3. **बीभीषण**- कीसी भी प्रकार का अज्ञान या मिथ्यात्व रुपी पवन आयेगा तो सम्यक्त्वरत्न (देव-गुरु-धर्म) को कभी नहि छोडूंगा । जिस तरह मेरु पर्वत चलायमान नही होता उसी तरह मेरा व्रत अखंड रहेगा ।
4. **हनुमान**- हनुमानने बीभीषण के साथ बीभीषण जैसा सम्यक्त्व रत्न केवली भगवंत के पास ग्रहण कीया । (पउमचरियम्)

390. रावण का परिवार

पिता - रत्नश्रवा	मुख्य पत्नी - मंदोदरी
माता - कैकसी	कुल पत्नी - 18,000
दादा - सुमाली	पुत्र - इन्द्रजित, मेघवाहन
दादी - महाप्रीति	भाई - कुंभकर्ण, बीभीषण
परदादा - सुकेशी	भाभी - तडित्माला
बहन - चंद्रनखा	भाभी - पंकजश्री

➡ **रावण के तीन नाम** (1) दशमुख (2) दशानन (3) रावण

391. निंदा के भयंकर पाप

निंदक निश्चे नारकी, बाह्यरुचि मति अंध ।
आत्मज्ञाने जे रमे, तेहने तो नहि बंध ॥ २७ ॥

➡ **भावार्थः**- निंदा करने वाला निश्चय नरक में जाता है क्योंकि उस समय उसकी बुद्धि अंधी हो जाती है। जो आत्मा ध्यान में मस्त बनता है उनको कोई कर्म बंध नहि होता। **(यति धर्म बत्रीसी)**

➡ स्तुति नव कीजे आपणी, नव कीजे निंदाय ।
उपदेश माला इम कहे, तप जप संयम जाय ॥
मासक्षमण ने पारणे, एक सिक्त लइने खाय ।
पर निंदा नव तजे, निश्चये दुर्गति जाय ॥
पर निंदा पुंठे करे, वहेतो पातिक दूर ।
दुर्गति दशवैकालिके, कही सिज्जंभव पूर ॥ **(श्रषभदास कति)**

➡ थोडलो पण गुण तणो, सांभली हर्ष मन आणरे.
दोष लव निज देखतां, निर्गुण निज आत्मा जाणरे

➠ **भावार्थः**- दूसरे के अल्पगुण भी सुनकर जिसके हृदय में हर्ष उत्पन्न होता है व अपना थोड़ा भी दोष का जो विचार करता है वो आत्मा निर्गुणी बनता है ।

➠ निंदा करे ते थाय नीरकी रे, तपजय कीधु सहुजाय ।
निंदा करो तो करजो आपणी, जेम छुटकबारो थाय ॥ (**समयसुंदर उपा.**)

➠ पर निंदा बडा दोष है, इनसे नीच गोत्र का बंध होता है प्रत्येक भव में व करोडो भव में भी जिसका बंधन तूट न सके वैसा कर्म बंध होता है. कीसी भी जीव का अवर्णवाद अहितकारी है ।(**वाचक चक्रवर्ती**)

392. अध्यात्म विकास की 10 भूमिका

1. **श्रवण** - अध्यात्म साहित्य का श्रवण
2. **ज्ञान** - स्वाध्याय के पांच प्रकार का अध्ययन.
3. **विज्ञान** - हेय उपादेय का विवेकरुप विशिष्ट ज्ञान.
4. **प्रत्याख्यान** - छोडने लायक हेय वस्तु का त्याग.
5. **संयम** - इन्द्रिय और मन का संयम.
6. **अनाश्रव** - नये कर्मो का निरोध
7. **तप** - विशिष्ट प्रकार की शुभ प्रवृत्ति
8. **त्यवदान** - आत्मा के दोषो की शुद्धि.
9. **अक्रिया** - मन-वचन-काया की अशुभ प्रवृत्ति का विरोध.
10. **सिद्धि** - मोक्ष के लिये प्रयत्न । (**भगवती सूत्र**)

393. 100 साल के आयुष्य में पुरुष की दश दशा

1. **बाल दशा** - सुख दुःख अच्छे बुरे का बोध न होना । 1 से 10 साल.
2. **क्रीडा दशा** - खेलना कूदना व अभ्यास की प्रवृत्ति 10 से 20 साल.

3. **मंद दशा** - भोग-उपभोग आनंद प्राप्त करने की प्रवृत्ति 20 से 30 साल.
4. **बल दशा** - अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना, 30 से 40 साल.
5. **प्रज्ञा दशा** - कुटुंब का पालन, धनवृद्धि, प्रौढता आदि 40 से 50 साल.
6. **हायनी दशा** - शरीर की शक्ति-सामर्थ्य कमजोर होने लगे 50 से 60 साल.
7. **प्रपंचा दशा** - इन्द्रियो के उपर नियंत्रण कम होने लगे 60 से 70 साल.
8. **प्राग्भार दशा** - शरीर के उपर की करचली, शरीर टेडा मेडा होना व रोग. 70 से 80.
9. **उन्मुखी दशा** - वृद्धावस्था से पीडीत बनकर मृत्यु के मुख में प्रवेश करना 80 से 90 साल
10. **शायिनी दशा** - सोते रहना. स्वर कम होना, अति दु:खी अवस्था 90 से 100 साल ।

(तंदुल वैचारिक)

394. सुख के दश प्रकार

1. **आरोग्य** - जब तक शरीर में प्राण है तब तक निरोगी रहना.
2. **दीर्घायुष्य** - लम्बे समय तक जीना.
3. **धनसंपन्नता** - धन धान्य से समृद्ध बनना.
4. **काम** - शब्द-रुप आदि का सुख प्राप्त होना.
5. **भोग** - गंध-स्पर्श आदि का सुख प्राप्त होना.
6. **संतोष** - निर्लोभता, अल्पइच्छा, प्रत्येक पदार्थ में संतोष रखना.
7. **अस्ति** - जब जो पदार्थ चाहिए वो सुलभता से मिल जाय.
8. **शुभयोग** - सुंदर भोगो का संयोग, भोग छोडने हेतु गुरु का संयोग,
9. **निष्क्रमण** - दीक्षा लेने का योग होना
10. **अव्याबाध**- पीडा बिना आराधना द्वारा मोक्ष सुख प्राप्त करना.

(ठाणांग सूत्र)

395. दश प्रकार से दीक्षा की इच्छा

1. **छंदा** - अपनी इच्छा या दूसरे की प्रेरणा से दीक्षा लेना.
2. **रोसा** - क्रोधावेश में आकर दीक्षा लेना.
3. **परिजीर्णा** - दरिद्रता के कारण दीक्षा लेना.
4. **स्वप्ना** - स्वप्न के संकेत होने पर दीक्षा लेना.
5. **प्रतिश्रुता** - प्रतिज्ञा पूर्वक दीक्षा लेना.
6. **स्मारणिका** - जातिस्मरण ज्ञान पाकर दीक्षा लेना.
7. **रोगणिका** - रोगादि के कारण दीक्षा लेना.
8. **अनादृता** - अनादर प्राप्त होने पर दीक्षा लेना.
9. **देवसंसप्ति** - देव द्वारा उपदेश पाकर दीक्षा लेना.
10. **वत्सानुबंधी** - पुत्र के स्नेह से पुत्र साथ दीक्षा लेना. (ठाणांग सूत्र)

396. सूक्ष्मजीवो के आठ प्रकार

1. **प्राणसूक्ष्म** - कुंथु कंथवा आदि जीव.
2. **पनकसूक्ष्म** - पांच प्रकार की लीलफूग.
3. **बीज सूक्ष्म** - राजगरा - खस खस आदि के बीज.
4. **हरित सूक्ष्म** - बीज में से कोटा आदि फूटे वो.
5. **पुष्प सूक्ष्म** - वड-पीप्पल आदि के फूल.
6. **अंड सूक्ष्म** - मक्खी चीटी आदि के इंडे.
7. **लयन सूक्ष्म** - चीटी के दर आदि.
8. **स्नेह सूक्ष्म** - झाकल - धुम्मस आदि (ठाणांग सूत्र)

397. प्रश्न पूछने के छ प्रकार

1. **संशय प्रश्न**- अपनी शंका को दूर करने प्रश्न पूछना वो.
2. **व्युहद्ग्रह प्रश्न**- अभिमानी बनकर हराने हेतु प्रश्न पूछना वो.
3. **अनुयोगी प्रश्न**- सूत्र, अर्थ समजने हेतु प्रश्न पूछना वो.
4. **अनुलोम प्रश्न**- शुभभाव से कुशल समाचार पूछना वो.
5. **तथाज्ञान प्रश्न**- स्वयं को ज्ञान होने पर दूसरे के लिये पूछना वो.
6. **अतथाज्ञान प्रश्न**- स्वयं को जानकारी हेतु प्रश्न पूछना वो.

(ठाणांग सूत्र)

398. कर्म पुद्गल को ग्रहण करने की छ अवस्था

1. **चय**- कषाय की परिणति द्वारा जीव कर्म पुद्गल को ग्रहण करता है.
2. **उपचय**- ग्रहण कीये हुए कर्मो की बार बार वृद्धि होना.
3. **बंध**- चय-उपचय से संग्रहित कर्म पुद्गलो का आत्मा के साथ जोडाण.
4. **उदीरणा** - जब कर्म का उदय हो तब उनके फल का अनुभव करना.
5. **वेदन**- कर्म का उदय आने पर अच्छा-बुरा का फल प्राप्त होना.
6. **निर्जरा**- तप द्वारा कर्म का क्षय करके कर्म निर्जरा करना.

(ठाणांग सूत्र)

399. 384 प्रभुवीर के प्रथम चातुर्मासके अभिग्रह

1. जहां पर अप्रीती हो वहां पर बैठना नहि.
2. हर हंमेश कार्योत्सर्ग ध्यान में रहना.
3. प्रायः मौन धारण करना.

4. कर पात्र में भोजन करना ।

5. गृहस्थ का विनय करना नहिं । (कल्पसूत्र)

400. मेरु पर्वत के मेखला की लम्बाई

➡ 1. प्रथम मेखला - 500 योजन

2. द्वितीय मेखला - 62.500 योजन

3. तृत्तीय मेखला - 36.000 योजन

कुल - 99.000 योजना मेरुपर्वत है ।

➡ **मेरुपर्वत के उपर चार शिला**

1. पांडु कंबला 2. अतिपांडु कंबला 3. रक्त कंबला 4. अतिरिक्त कंबला इन चार शिला के उपर परमात्मा का जन्म अभिषेक होता है ।

401. मतिज्ञान के भेदो का स्वरुप

1. **श्रुतनिश्चित के चार प्रकार**

1. **अवग्रह** - जो ज्ञान, नाम, जाति, विशेषण आदि विशेषता बिना का सिर्फ कुछ है एसा जानना वो अवग्रह.
2. **ईहा** - अवग्रह से जाने हुए पदार्थ को विशेष जानने की इच्छा वो इहा.
3. **अपाय** - ईहा द्वारा जाने हुए पदार्थ को निश्चयात्मक रुप से निर्णय करना.
4. **धारणा** - अपाय के द्वारा जाने हुए पदार्थ वो ही है एसा दृढ निश्चय करना.

2. **अश्रुतनिश्रित के चार प्रकार**

1. **ओत्पातिकी** - हाजर जवाबी बुद्धि
2. **वैनयिकी** - वडिल के विनय द्वारा उत्पन्न होने वाली बुद्धि.
3. **कार्मिकी** - कार्य करते करते उत्पन्न होने वाली बुद्धि, शिल्पादि.
4. **पारिणामिकी** - परिपक्व उम्रवाले अनुभव से उत्पन्न होने वाली बुद्धि.

➡ **पांच इन्द्रिय व छठे मन के द्वारा उत्पन्न होने वाले मतिज्ञान के 12 भेद**

1. **बहुग्राही** - संख्या व परिमाण दोनो की अपेक्षा को जानने वाला.
2. **अल्प** - एक ही विषय के पर्याय को अल्पमात्रा में जाने.
3. **बहुविध** - एक ही द्रव्य के वस्तु को अनेक प्रकार से जानना.
4. **अल्प विध** - कीसीभी द्रव्य के पर्याय को अल्पमात्रा से भेद प्रभेद को जाने.
5. **क्षिप्र** - कीसी के भाव को शीध्र जान सके.
6. **अक्षिप्र** - बुद्धि की मंदता के कारण थोडे समय के बाद जाणे.
7. **अनिश्रित** - किसी भी प्रकार के हेतु निमित विना पर्याय गुण को जाणे.
8. **निश्रित** - कीसी भी हेतु - निमित द्वारा जाणे.
9. **असंदिग्ध** - कीसी भी द्रव्य - पदार्थ को निश्चय रुप से जाणे.
10. **ध्रुव** - इन्द्रिय व मन को सच्ची समज होने से विषय को रोज जाने.
11. **संदिग्ध** - शंका के साथ, संतोषबिना का ज्ञान.
12. **अध्रुव** - जो जान प्राप्त हुआ वो बदलाता रहे अस्थिर रहे.

(नंदी सूत्र)

402. मतिज्ञान के 28 भेद

1. श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह
2. घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह
3. जिहवेन्द्रिय व्यंजनावग्रह
4. स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह
5. चक्षुरिन्द्रिय व्यंजनावग्रह
6. घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह
7. श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह
8. जिहवेन्द्रिय अर्थावग्रह
9. स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रह
10. नो इन्द्रिय अर्थावग्रह
11. श्रोत्रेन्द्रिय ईहा
12. चक्षुरिन्द्रिय ईहा
13. घ्राणेन्द्रिय ईहा
14. जिहवेन्द्रिय ईहा
15. स्पर्शेन्द्रिय इहा
16. नो इन्द्रिय अपाय
17. श्रोत्रेन्द्रिय अपाय
18. चक्षुरिन्द्रिय अपाय
19. घ्राणेन्द्रिय अपाय
20. जिहवेन्द्रिय अपाय
21. स्पर्शेन्द्रिय अपाय
22. नो इन्द्रिय अपाय
23. श्रोत्रेन्द्रिय धारणा
24. चक्षुरिन्द्रिय धारणा
25. घ्राणेन्द्रिय धारणा
26. जिहवेन्द्रिय धारणा
27. स्पर्शेन्द्रिय धारणा
28. नो इन्द्रिय धारणा

403. श्रुतज्ञान के 14 भेद

1. **अक्षर श्रुत** - अक्षर की आकृति जो विभिन्न लीपी में लिखाती है वो संज्ञा अक्षर का जो उच्चारण होता है वो व्यांजनाक्षर, लब्धिधारी को अक्षर की प्राप्ति होती है वो लब्धि अक्षर इस तीन प्रकारे अक्षर है.
2. **अनक्षर श्रुत** - श्वास लेना, थुंकना, खांसी, छींक आदि द्वारा चेष्टा करना वो अनक्षर श्रुत.

3. **संज्ञी श्रुत** – जिसके अंतर्गत ईहा, अपाय, निश्चय मार्गणा, धारणा, चिन्ता – विचार विमर्श करने शक्ति, उपदेश द्वारा अव्यक्त या व्यक्त क्रिया करने की शक्ति वो संज्ञी श्रुत.

4. **असंज्ञी श्रुत** – जिसमे ईहा, अपोह, चिन्ता आदि का कोई विचार न हो वो असंज्ञी श्रुत जिसको विचारणा के साथ कीसी भी क्रिया प्रवृत्ति न हो.

5. **सम्यक श्रुत** – द्वादशांगी, गणिपीटक, चौद पूर्वधारीओ का जो ज्ञान अतीत, अनागत, वर्तमान के भाव को जानने वाले सर्वज्ञ, सर्वदर्शी तीर्थंकर प्रणीत देशना, गणधर रचित द्वादशांगी आदि सम्यक् श्रुत.

6. **असम्यक् श्रुत** – असम्यक् यानि मिथ्या श्रुत, मिथ्यादृष्टि द्वारा स्वच्छंदता से रचे हुए शास्त्र, या विपरीत बुद्धि, कल्पना द्वारा रचे हुए महाभारत, रामायण, भागवत, पतंजलि, व्याकरण आदि मिथ्या श्रुत है इसी ग्रंथ को कोईक सम्यक्तवी सम्यक् दृष्टि से ग्रहण करे तो सम्यक श्रुत बन शकता है बाकी का मिथ्याश्रुत.

7. **सादि श्रुत :** श्रुत ज्ञान का प्रारंभ तीर्थंकर व गणधर द्वारा होता है. जो श्रुत का प्रारंभ हुआ वो सादि श्रुत.

8. **अनादि श्रुत :** अभव्य का मिथ्या श्रुत अनादि काल से है सम्पक्तव प्राप्त होते ही उसका अंत आता है जब तक सम्यक्तव प्राप्त न हो तब तक का ज्ञान अनादिश्रुत.

9. **सपर्यवसितज्ञान** – सम्यक्तव का उदय होने से मिथ्याश्रुत चला जाता है इसके लिये जिसके पास सम्यकत्व है वो सपर्यवसित श्रुत.

10. **अपर्यवसित श्रुत** - जहां मिथ्यात्व का उदय होता है वहां सम्यक्त्व प्राप्त नहि होता जब तक मिथ्यात्व है तब तक का अपर्यवसित श्रुत.

11. **गमिक श्रुत** - एक जैसे आलावे बार बार जिस सूत्र में आते है वो गमिक श्रुत, जैसे पक्खी सूत्र, दशवैकालिक आदि.

12. **अगमिक श्रुत** - जिसमें एक जैसे आलावे न हो. एक जैसे वाक्य न हो वो अगमिकश्रुत अतिचार आदि.

13. **अंगप्रविष्ट श्रुत** - अग्यार अंगो का ज्ञान प्राप्त होना वो अंगप्रविष्ठ आचारांग से लगाकार दृष्टिवाद तक.

14. **अनंगप्रविष्ट श्रुत** - अग्यारा अंगो को छोडकर उपांग आदि आगमो का ज्ञान वो अनंगप्रविष्ट - 12 उपांग 10 पयन्ना आदि.

404. अवधिज्ञान के 6 भेद

1. **अनुगामिक** - जहां जाए वहां के पदार्थो को जानने वाला ।
2. **अननुगामिक** - जिस स्थान पर ज्ञान हुआ उस क्षेत्र के पदार्थो को जानने वाला.
3. **वर्धमान** - धीरे धीरे इस ज्ञान की वृद्धि होती है.
4. **हीयमान** - धीरे धीरे यह ज्ञान कम होता रहता है.
5. **प्रतिपाति** - जो उत्पन्न होने के बाद चला जाता है.
6. **अप्रतिपात** - जो उत्पन्न होने के बाद कभी नाश नहि होने वाला.

(नंदीसूत्र)

405. मनः पर्यव ज्ञान के दो भेद

1. **ऋजुमति** - जिसको ऋजुमति मनः पर्यवज्ञान होता है वो द्रव्य से - अनन्त प्रदेशिक स्कंधो को देखता व जानता है । क्षेत्र से-जधन्य से अंगुल के असंख्यातवे भाग को देखता है उत्कृष्ट से रत्नप्रभा नरकादि के उपरितन - अधस्तन क्षुल्लक प्रतर को देखता है. उपर ज्योतिष, चक्र के उपरितल को देखता है मनुष्य क्षेत्र में पर्याप्ता संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवो के मनोगत भाव को जानते व देखते है. काल से-पल्योपम के असंख्यात मे भाग को देखते है भाव से अनयोन्य भाव को देखते व जानते है ।
2. **विपुलमति** - जिसको विपुलमति ज्ञान होता है वो कृत्य से विपुल - विशुद्ध - निर्मल रुप से अनन्त प्रदेशिक स्कंधोको जानता व देखता है. क्षेत्र से ऋजुमतिवाला ने जो देखा है उसमे ढाई अंगुल अधिक विपुल विशुद्ध व तिमिर बिना का क्षेत्र देखता है काल से ऋजुमति से ज्यादा विपुल विशुद्ध तिमिर पणां से देखता है. भाव से विपुलमतिवाला ऋजुमति से कुछ ज्यादा विपुल विशुद्ध व निर्मलता रुप से देखता व जानता है । **(नंदीसूत्र)**

406. केवलज्ञान का एक प्रकार

➡ केवलज्ञान प्राप्त होने के बाद वो जगत के समस्त द्रव्यो को. परिणामो को एवं भाक्सता को वर्ण रस गंध आदि को भी जानते है अनन्त शाश्वत एवं अप्रतिपाति केवलज्ञान का एक ही भेद है । (नंदीसूत्र)

407. समकित प्राप्ति की 67 प्रकार के भोजन

➡ जैसे सम्यग दर्शन को प्राप्त करने के लिये 67 गुणो का वर्णन करने में

आता है उसी तरह 67 प्रकार के भोजन धरे जाते है ।

1.	चार श्रद्धा के लड्डु	-	4
2.	तीन लिंग की फेणी	-	3
3.	दश विनय के दीथरे	-	10
4.	तीन शुद्धि की सुंहाली	-	3
5.	आठ प्रभावक की बरफी	-	8
6.	पाँच दूषण की लापसी	-	5
7.	पाँच भूषण की जलेबी	-	5
8.	छ विधजयणां के खाजे	-	6
9.	पांच लक्षण के धेबर	-	5
10.	छ स्थान के गुंदवडा	-	6
11.	छ आगार के पेंडे	-	6
12.	छ भावना की पुरी	-	6
		=	**67**

(उपा. यशोवि. सज्जाय)

408. अवधिज्ञान व मन:पर्यव ज्ञान बीच का भेद

	अवधिज्ञान	**मन:पर्यव ज्ञान**
1.	विशुद्ध होता है	1. अधिक विशुद्ध होता है
2.	क्षेत्र तीन लोक का है	2. क्षेत्र सिर्फ ढाई द्वीप का होता है
3.	चारे गति के जीवो को होता है	3. सिर्फ मनुष्य को होता है
4.	मिथ्यात्व के उदयसे परिणित हो सकता है।	4. मिथ्यान्व का उदय नहि है
5.	आगामी भव में साथमें आता है	5. यह ज्ञान दस भव तक होता है.

409. संयमीओ की दश दशा

1. **प्रथमदशा** - असमाधि स्थान - संयमी जीवन के लघुत्तर या सामान्य दोषो को असमाधि स्थान कहते है असमाधि यानी मानसिक संताप चित्ता की अस्वस्थता जानना. इसके 20 प्रकार श्रमणसूत्र में आते है ।
2. **द्वितीयदशा** - शबलदोष - मूल गुण संबंधी बडे बडे दोष वो सबलदोष वो 21 प्रकार के है जो श्रमण सूत्र में आते है
3. **तृतीयदशा** - आशातना - आय यानि सम्यग् दर्शनादि गुणो का लाभ शातना यानि नाश होना. गुणो का नाश करना वो आशातना एसी ये तीस आशातना श्रमणसूत्र में आती है.
4. **चतुर्थदशा** - गणिसंपदा - साधु के नायक को गणि कहते है संपदा यानि वैभव. शिष्य समुदाय यह गणि की द्रव्यसंपदा ज्ञानादि गुणो द्वारा गणि बनना वो गणिसंपदा.
5. **पांचवी दशा** - चित्तसमाधिस्थान - द्रत्य - क्षेत्र - काल - भाव ये चार समाधि के स्थान है तीन को छोडकर चतुर्थ भाव समाधि में वर्तन करने का है. भाव समाधि प्राप्त करने के लिये रत्नत्रयी की आराधना व साधना बतायी है ।
6. **छठ्ठीदशा** - उपासकपडिमा - 12 व्रतधारी श्रावको का आचार है श्रमणो पासक तब ही बन सकते है जो व्रत - तप - अभिग्रह स्वीकार कर सकते हो. उस व्रत अभिग्रह में दृढ बनना वो प्रतिमा कहलाती है श्रावक की प्रतिमा चारित्र विकास के लिये है ।
7. **सातवीदशा** - भिक्षु प्रतिमा - संयमी आत्मा संयम में धैर्य सहिष्णुता ध्यान आदि गुणों की वृद्धि हैतु विविध प्रकार के तप अभिग्रह धारण

करना वो भिक्षु प्रतिमा 12 प्रकार की है.

8. **आठवी दशा** - पर्युषणाकल्प - पर्युषण कल्प यानि पर्युषण पर्व में जो कल्पसूत्र का पठन पाठन होता है वो कल्पसूत्र दशा श्रुत स्कंध का आठवी दशा होने से पर्युषणा कल्प कहलाता है. पीछे से कल्पसूत्र ने स्वतंत्र रुप धारण कीया. साधु साध्वी ने 50 दिन पूर्ण होते ही संवच्छरी करनी चाहिएस साधुओ के आचार का वर्णन इसमे आता है ।

9. **नवमीदशा** - मोहनीयबंधस्थान - जीव को विवेक शून्य बनाए वो मोहनीय कर्म, मोहनीय कर्म के स्थान 30 बताये है जो श्रमण सूत्र में आते है ऐसे बंधस्थान को जानकर त्याग करना.

10. **दशवीदशा** - निदान - निदान यानि छेदन करना, काटना, जिससे मोक्षमार्ग का छेदन हो वो निदान. यानि तप - संयम की आराधना करते करते भौतिक सुख की इच्छा करना वो निदान. (दशाश्रुतस्कंध)

410. नियाणा के नौ प्रकार

1. निर्गन्थो का पुरुष भोग हेतु नियाणा.
2. निर्गन्थो का स्त्री भोग हेतु नियाणा.
3. निर्गन्थो का स्त्री बनने हेतु नियाणा.
4. निर्गन्थो का पुरुष बनने हेतु नियाणा.
5. स्वपर विकसित देवी परिचारणा का नियाणा.
6. स्व विकसित देवी परिचारण का नियाणा.
7. स्वदेवी परिपारण का नियाणा
8. श्रावक बनने का नियाणा
9. साधु बनने का नियाणा (दशाश्रुत स्कंध)

411. समकित को प्राप्त करने हेतु चार श्रद्धा

1. **परमार्थ संस्तव** - जैन शास्त्रो में बताये हुए जीव अजीव आदि नौ तत्वो के उपर दृढ विश्वास रखना. क्यों कि संपूर्ण जगत की व्यवस्था समजने हेतु तत्व व्यवस्था सुंदर रुप से बतायी हुयी है नवतत्वो के उपर श्रद्धा वो प्रथम श्रद्धा.
2. **गीतार्थ सेवा** - सूत्र और अर्थ को जानने वाले गीतार्थ जिन्होंने नौ तत्व का स्वरुप बताया है ऐसे गीतार्थ की अवश्य सेवा विनय, बहुमान, भक्ति, वैयावच्च आदि करना वो दूसरी श्रद्धा.
3. **श्रद्धा भ्रष्टजन संसर्ग वर्जन** - कदाग्रह के कारण जिन्होंने सम्यक्त्व खो दिया है. यथावस्थित सभी पदार्थ को प्रमाणभूत जानने पर भी अनेक पदार्थ वस्तु के लिये दूसरा अभिप्राय देना. इस तरह श्रद्धा से नीचे उतरने वाले का परिचय भी नहि करना.
4. **पाखंडी परिचय वर्जन** - दूसरे धर्म वाले सांख्य, बौद्ध, वैष्णव आदि के साथ परिचय का त्याग करना. क्योंकि परिचय से कभी आगे भी बढ सकते है श्रद्धा भी बढजाती है. जिस तरह गंगा नदी का पाणी समुद्र में जाने के बाद खारा हो जाता है उसी तरह दूसरे धर्म का परिचय करने से सम्यक्त्व चला जाता है ।

412. समकित प्राप्ति के तीन लिंग

1. **शुश्रुषा** - धर्म सुनने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए. जिस तरह साकर - द्राक्ष कितनी मीठी लगती है. उसी तरह धर्मवाणी मीठी लगनी चाहिए. जिस तरह अपने घर पर समस्त परिवार के साथ सुंदर गीत सुनने का आनंद आता है उससे ज्यादा आनंद जिनवाणी में आना चाहिए।

2. **दृढराग** - जैसे भूखे ब्राह्मण को जंगल पार कराने के बाद घेबर का भोजन दिया जाता है कितना अच्छा लगता है उसी तरह धर्म के उपर दृढराग होना चाहिए ।

3. **देवगुरु सेवा** - जिस तरह बालक परीक्षा के समय रात दिन महेनत करता है और आलस (प्रमाद) करे तो फैल हो जाता है उसी तरह उल्लास व महेनत के साथ देव गुरु की सेवा करना गुरुने आज़ काम बताया व कल करुंगा एसी भावना वाला वैयावच्च की आशातना करता है ।

413. समकित प्राप्ति हेतु 10 प्रकार का विनय

1. **अरिहंत** - जिनालय में प्रदक्षिणा देना, प्रदक्षिणा में रही हुयी जिन प्रतिमा को नमो जिणाणं बोलना. तीन बार प्रणाम आदि दशत्रिक आदि करना वो विनय.

2. **सिद्ध** - सिद्ध भगवंत की जहां मूर्ति हो उसी तरह विनय करना. सिद्ध पद का काउसग्ग, खमासमणा आदि विधि करना, निगोद में से निकालनेवाले सिद्ध परमात्मा ही है ।

3. **जिनमंदिर जिनबिंब** - चैत्य की साफ सफाई करना, काजा आदि लेना अहोभाव द्वारा अष्टप्रकारी पूजा, बहुमान भाव द्वारा भाव पूजा आदि.

4. **सूत्र सिद्धांत का विनय** - ज्ञान भंडार का जीर्णोद्धार करना, पुठा लगाना, हस्तलिखित का लिव्यंतर व होल्डर से हस्तलिखित प्रते लिखना, आगम - ग्रंथ की पूजा आदि करना.

5. **क्षमादि 10 धर्म** - नवतत्व की 29 वीं गाथा में जो 10 प्रकार का धर्म बताया है उस धर्म का पालन, प्रचार व दृढ श्रद्धा करना.

6. **साधु भगवंत** - मोक्ष का प्रवेश द्वारा साधुपद है. पंचमहाव्रत को धारण करने वाले, संयमी ओ को सहाय करे. सहन करे वो साधु एसे साधु की वस्त्र - पात्र द्वारा भक्ति. आहार विहार निहार हेतु योग्य व्यवस्था करना वो विनय.

7. **आचार्य विनय** - पंचाचार का पालन करके पालन हेतु उपदेश देने वाले आचार्य भगवंत के पीछे चलना, चरणसेवा, प्रवचन मे आसनादि का प्रदान करना.

8. **उपाध्यायका विनय** - शिष्य को व संघ को विनय द्वारा ज्ञान का पठन पाठन कराने वाले उपाध्याय भगवंत हेतु ज्ञान के साधन उपलब्ध करना, वाचना, ग्रंथ लिखाना आदि.

9. **संध विनय** - साधु - साध्वी श्रावक - श्राविका चारो का मिलन वो संघ - संघ की भक्ति, संघ पूजा, संघ की पधरामणी विनय है.

10. **समकित विनय** - समकिती एवं समकित प्राप्त करने हेतु साधनो का विनय करना, प्रभावना, प्रचार सच्ची समज आदि विनय है ।

414. विनय करने की पांच पद्धति

1. **भक्ति** - बहार से सेवा आदि करना वो भक्ति.

2. **बहुमान** - हृदय का प्रेम, अंतर से प्रीति प्रगट करना वो बहुमान.

3. **गुणस्तुति** - गुणी जनो के गुणो की अवश्य प्रशंसा करना.

4. **हेलनात्याग** - अवगुण को ढंकने हेतु निंदा का त्याग करना.

5. **आशातना त्याग** - उपमान करना वो भी आशातना है उनका कुछ कम बोलना या उनसे अपना ज्यादा बोलना वोभी आशातना है ।

415. समकित की प्राप्ति हेतु तीन शुद्धि

1. **मन शुद्धि** - जिनेश्वर परमात्मा ने जो कहा वो सच्चा है बाकी असत्य है एसा निश्चय दृढ रुप से अपने मन में करना.
2. **वचनशुद्धि** - उंचाकार्य व उत्तम कार्य कितनी भी मुश्केलीओ से भरा हुआ हो, मगर वो कार्य जिनेश्वर के देव के अनुयायी से न हो सके वो दूसरे से कभी नहि होगा एसा वाक्य अपने मुख से निरुपण करना वो वचनशुद्धि.
3. **काय शुद्धि** - घायल हो गया हो, अंग उपांग का विच्छेद हुआ हो, बहोत सारे कष्ट या उपद्रव अपने जीवन में आये हो तो भी जिनेनश्वर देव को छोड के दूसरे के पास नहि जाना वो कायशुद्धि.

416. समकित प्राप्ति हेतु पांच दूषण का त्याग

1. **शंका** - जैन धर्म का उपदेश देनेवाले तीर्थंकर महाराजा समभाव वाले होते है उनके जीवन में कीसी भी प्रकार का स्वार्थ भाव नहि होता. वो कभी असत्य बोलते नहि. तो फिर उनके वचन में शंका क्यों करना ? शंका करना वो प्रथम दूषण है ।
2. **कांखा** - अपने सामने प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष आता है तो बावल का आश्रय क्यों लेना. संपूर्ण सचोट जिनधर्म मिलने के बाद दूसरे धर्म को जानने की इच्छा रखना वो दूसरा दूषण.
3. **विचिकित्सा** - धर्म आराधना करते करते जप - तप आदि करते करते मन मे यदि विचार आ गया कि इस आराधना का फल मिलेगा या नहि. एसा अविश्वास उत्पन्न होना. व मलिन साधु साध्वी की व मलिन शरीर

देखकर निंदा करना वो विचिकित्सा नामका दूषण

4. **पसंस (मिथ्यात्वी की प्रशंसा)** - उल्टे मार्ग पर चलनेवाले की प्रशंसा करने से उन्मार्गीओ की पुष्टि बढती है. इसलिये मिथ्यामार्ग की प्रशंसा करना. वो चोथा दूषण.

5. **संस्तव** - (मिथ्यामति परिचय) - दूसरे धर्म का परिचय होने से कभी अपन अपने सच्चे धर्म से चलित हो सकते है इसलिये अन्यधर्म का परिचय करना वो पांचवा दूषण.

417. समकित को प्राप्त करने वाले आठ प्रभावक

1. **प्रावचनिक** - जैन शास्त्र, आगम, ग्रंथ के संपूर्ण रहस्य जाननेवाले, जानने के बाद जैसा व्यक्ति वैसा उपदेश देनेवाले. गुण गण के प्रथमप्रभावक जानना जैसे - सर्वज्ञसूरि ।

2. **धर्मकथी** - चारित्र धर्म का उपदेश देनेमें कुशल, जिनके उपदेश से तुरंत चारित्र लेने का मन हो जाय. जंबूस्वामी व नंदिषेण मुनि जैसे चारित्र नहि होते हुए भी उपदेश देकर अनेको को दीक्षा दिलाने वाले दूसरे प्रभावक.

3. **वादी** - तर्कशास्त्र में होंशीयार होने के कारण जिस तरह बारीस में मेघ गरजता है उसी तरह राजसभा में जाकर मल्लवादी की तरह गर्जना करके परवादी को जीतनेवाले तृतीय प्रभावक.

4. **नैमित्तिक** - निमित के द्वारा राजा - महाराजा को धर्मबोध देने वाले नैमेतिक कहलाते है. जेसे भद्रबाह श्रुतकेवली ने निश्चित द्वारा वराहमिहिर को हराकर शासन प्रभावना करनेवाले चोथे प्रभावक.

5. **तपस्वी** - जिनेश्वर परमात्मा ने जो तप - अभिग्रह आदि बताये है उसी तरह शुद्ध किया के साथ शुद्ध तप करके आत्मा साधना करनेवाले -

जेसे धन्ना अणगार, खीमऋषि, आदि घोर तप व घोर अभिग्रह धारण करके शासनप्रभावना करनेवाले पांचवे प्रभावक.

6. **विद्यामंत्र प्रभावक** - विद्या व मंत्र को जाननेवाले जब शासनप्रभावना का कार्य हो. कोईभारी उपद्रव करना हो तो मंत्र विद्या का उपयोग करना. जेसे वज्रस्वामीने विद्या द्वारा लाखो फूल लाकर बौद्ध राजा को धर्म प्राप्त कराया. ये छठे प्रभावक

7. **सिद्धप्रभावक** - पूर्ण अंजन, आदि के प्रयोगसे शासन प्रभावना करना कालकाचार्य ने भी आंख में अजन डालकर जिनशासन की प्रभावना करने वाले सातवे प्रभावक जानना. ।

8. **कविप्रभावक** - अपनी कवित्व शक्ति के द्वारा राजा को इस तरह खुश करे के वो राज्य देने तैयार हो जाय. सिद्धसेन दिवाकर सूरि ने कल्याण मंदिर की कविता द्वारा प्रभु को प्रगट करके विक्रम राजा को प्रतिबोध देने वाले आठवें प्रभावक जानना.

418. समकित को निर्मल बनाने हेतु पांच भूषण

1. **कुशलता** - अपने जीवन में जो कुशलता है उसका उपयोग धर्म में करना चाहिए. जिनपूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चक्खाण आदि में कुशलता दिखाने से समकित की शोभा बढाए वो है कुशलता.

2. **तीर्थसेवा** - जो तारे वो तीर्थ, जिनशासन की नाव चलाने वाले गीतार्थ गुरुभगवंततीर्थ समान है. उनकी सेवा करने से उनके साथ निरंतर संबंध रखने से परिचय करने से उनके साथ निरंतर संबंध रखने से परिचय करने से संसार सागर पार उत्तर सकते है ।

3. **धर्म में दृढता** - देव, गुरु - धर्म के प्रति अपने मन को इतना दृढ बनाना है कि कोई भी चलायमान करने की कोशीश करे तों भी चलायमान नहि होना वो है समकित की शोभा. जेसे - सुलसा श्राविका.
4. **देवगुरु की भक्ति** - जहां जिनमंदिर जहां गुरुभगवंत देखो वहां मस्तक झुकाना, हाथ जोडना वो भी भक्ति है. और उनकी वैयावच्च के लिये जो जरुर हो वो लाकर देना. वो है सेवा. देव - गुरु की सेवा से तीर्थंकर की सेवा का लाभ मिलता है ।
5. **शासनप्रभावना** - जैन अजैन व्यक्ति भी अपने धर्म की प्रशंसा करे वैसे कार्य करना. जैसे भव्यातिभव्य जुलुस, अनुकंपा दान, वस्त्रदान आदि करने से समकित की शोभा बढती है ।

419. समकित है या नहि उनके पांच लक्षण

1. **उपशम** - कोई व्यक्ति अपना कार्य बिगाडे, या अपना बुरा बोले या कुछ हलका बोले या नुकसान करे तो भी उनका बुरा करने का मन नहि होना. उनके प्रति द्वेष भाव छोडकर उपेक्षाभाव रखना वो उपशम.
2. **संवेग** - देवलोक व मनुष्य लोक के जो सुख है उन को भी दुःखमय मानकर उत्तम प्रकार के वैराग्य में दृढ बनना. व मोक्ष की ईच्छा रखना.
3. **निर्वेद** - धर्म ही संसार से तारनेवाला है. और भौतिक सामग्री संसार को डुबानेवाली है. एसा सोचकर संसार की भौतिक सामग्री के प्रति मूर्च्छाभाव कम करना. उनके प्रति कंट्राला लाना, यह छोडने जैसा है
4. **अनुकंपा** - दीन दुःखी को देखकर हृदय में दया उत्पन्न होना. और उनके बाद यथाशक्ति भक्ति करना. वो द्रव्य अनुकंपा और जो धर्म में अस्थिर है उनको स्थिर करना वो भाव अनुकंपा.

5. **आस्तिकता** - जिनेश्वर परमात्मा ने जो कहा वो सच्चा है उसमें कुछ गलत नहि है. एसा दृढ विश्वास मन में उत्पन्न होना. एसे दृढ विश्वास से कुमति का भंग व मिथ्यात्व का नाश होता है ।

420. समकित की रक्षा हेतु छः जयणा

➡ दूसरे धर्मवाले धर्मगुरु हो. दूसरे धर्मवाले देव हो, था अपनी जिन प्रतिमा उनके मंदिर में देवरुप से स्थापना की हो. एसी प्रतिमा की जयणा छ प्रकार की है ।

1. **वंदन** - वंदन यानि दो हाथ जोडकर प्रणाम करना नहिं.
2. **नमन** - नमन यानि मस्तक झुकाकर नमस्कार करना नहि.
3. **दान** - मान सन्मान गौरव के साथ सुपात्रदान मानकर ईष्ट वस्तु अन्न-पाणी-वस्त्र आदि देना नहि.
4. **अनुप्रदान** - बार बार दान देने से पात्र बुद्धि से कुपात्र को दाव न देने में आये तो दोष लगता है. उसी दान को अनुकंपा दान नहि कहते है।
5. **संलाप** - बुलाये बिना सामने से जाकर उनके साथ वार्तालाप करना. उनके साथ आलाप करना उसका त्याग करना.
6. **आलाप** - उनकी तरफ ज्यादा राग होने से बार बार उनके पास जाकर बातचीत करने का मन होना वो संलाप उसकात्याग करना.

421. समकित से पतित न होने के लिये छ आगार

1. **राजाभियोग** - कदाचित् राजा - महाराजा का आदेश आ जाए कि अन्य देव के मंदिर में जाना है. मिथ्यात्वी ओ को भोजन कराना है तो उसमे मिथ्थाव नहि लगता. कार्तिक शेठ, गेरिकतापस की तरह ।

2. **गणाभियोग** - संपूर्ण गांव के व्यक्ति ओ का समूह द्वारा जो कार्य होता है उसको गणाभियोग कहते है कदाच उस समूह में जाना पडे तो मिथ्यान्व नहि लगता.

3. **बलाभियोग** - चोर लश्कर, लुंटारे द्वारा नगर के उपर ज्यादा दबाव आ जाए तो गांव छोडकर उनके साथ जाना हो तो मिथ्यात्व नहि लगता.

4. **देवाभियोग** - क्षेत्रपालादि देवो का दबाव हो, कुलदेवता का दबाव हो, उसमे कुछ कार्य करना हो तो देवाभियोग कहलाता उसमे मिथ्यात्व नहि लगता.

5. **महत्तर गुरु निग्रहाभियोग** - माता पिता या गुरु का बहोत आग्रह हो दबाव हो, उसके कारण मिथ्यात्व का सेवन करना हो तो मिथ्याव नहि लगता.

6. **भीषण कांतार वृत्ति** - आजीविका के लिये भयंकर मुश्केली आ जाय या भयंकर जंगल में मुश्केली आ जाय तो उसमें मिथ्यात्व का सेवन करना हो तो मिथ्यात्व नहि लगता. ।

शास्त्रकार कहते है कि देव-गुरु धर्म के प्रति दृढ मन रखना. बहुमान भाव रखना. यदि उपद्रव आ जाए तो आगार रखे है ।

422. समकित को दृढ बनाने हेतु छ भावना

1. **धर्म का मूल** - समकित यह धर्म का मूल है जो मूल नहि तो वृक्ष उगता नहि और फल मिलता नहि. जो समकित रुपी मूल नहि होगा तो मोक्ष रुपी फल मिलना दुर्लभ है ।

2. **धर्म नगर का द्वार** - समकित धर्मनगर का द्वार है. चाहे जितना धर्म करे मगर समकित प्राप्त नहि कीया है तो सच्चा प्रवेश धर्म रुपी द्वार में नहि हो सकता. इसलिये समकित धर्म का द्वार है ।

3. **धर्म मंदिरका पाया** - जैसे मकान का पाया मजबूत है तो कितनेभी मंजिल की बिल्डींग खडी हो सकती है उसी तरह धर्म का पाया समकित उसको दृढ करने से धर्म रुपी महेल कभी नहि गिरेगा.

4. **धर्म का भंडार** - जिस तरह माणेक - मोती - हीरे - पन्ने रखने हेतु भंडार चाहिये. उसी तरह सभी गुणों को टिकाने के लिये समकित भंडार जरुरी है. भंडार बिना राग-द्वेष - कषाय आदि चोर रत्न को लूंटने वाले तेयार है.

5. **धर्म का आधार** - जैसे सकल पदार्थो का आधार पृथ्वी है आधार के बिना कोई चीज टिकती नहि है उसी तरह इन्द्रियो का संयम आदि गुण को टिकाना है तो समकित का आधार जरुरी है.

6. **धर्म का पात्र** - जिस सिंहके दूध को टिकाने हेतु सुवर्ण पात्र चाहिए उसी तरह शास्त्र एवं सदाचार रुपी धर्म को टिकाना है तो समकित रुपी पात्र बहोत जरुरी है ।

423. समकित के मूलपाया समान छ स्थान

1. **आत्मा है** - आत्मा यानि चेतना की निशानी, यदि आत्मा नहि है तो धर्म कहां से होगा - और धर्म नहि तो मोक्ष कहां से होगा. इसलिये आत्मा समकित का मूल पाया है ।

2. **आत्मा नित्य है** - आत्मा नित्य होने के कारण अच्छे बुरे का विचार करके धर्म कर सकता है आत्मा अखंडित वो ही धर्म का पाया.

3. **आत्मा कर्म का कर्ता है** - आत्मा योगो के साथ रहकर उनकी सहायता से कर्म साथ संबंध बनाता है. इसलिये वो कर्ता कहलाता है कुंभार जिस तरह मटके को बनाता है उसी तरह आत्मा कर्म को बनाता है.

4. **आत्मा भोक्ता है** - आत्मा पुण्य पाप के फल को भुगतने वाला है इसलिये आत्मा जैसा कर्म करता है एसा ही भुगतना पडता है. इस तरह अपने जीवन में श्रद्धा उत्पन्न हो जाय तो मात्र धर्म करने से समकितका पायादृढ बनता है.

5. **आत्मा का मोक्ष होता है** - जगत में आधिरुप मन के दुःख है और व्याधिरुप शरीर के दुःख है उन सभी दुःखो का अंत होना वो ही आत्मा का मोक्ष जानना.

6. **मोक्षप्राप्ति का उपाय** - किसी भी प्रकार के उपाय बिना कार्य की सिद्धि होनी दुर्लभ है. यदि जो मोक्ष प्राप्त करना है तो सम्यग दर्शन - ज्ञान - चारित्र की आराधना करनी पडेगी ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः ज्ञान के साथ क्रिया जुडने पर मोक्ष मार्ग प्राप्त होता है इसलिए मोक्षमार्ग प्राप्त करने हेतु अवश्य उपाय करना चाहिए ।

424. समकित गुण का लाभ

- समकित की प्राप्ति होने के बाद संसार की सामग्री प्रति राग द्वेष कम कम होते है. अजीव तो क्या जीवप्रति भी राग द्वेष करने का मन नहि होगा ।
- जीवन में चारो तरफ अशांतिमय वातावरण है शांति लेने के लिये समकित गुण अति जरुरी है. क्यों कि उसको पता पडेगा सच्ची शांति इसमें है.
- समकित से अपना मन विशुद्ध बनता है. समभाव का सुख प्राप्त होता है. इस दुनिया में समकित गुण के समान कोई नहि आ सकता.
- समकित धारी आत्मा का आदर्श शुद्ध, आशयशुद्ध, मोक्ष का ध्येय,

नवतत्व के जाणकार, तत्वावबोध को जाननेवाले जगत को उपादेय द्वारा सन्मार्ग दर्शन कराने में आगेकूच होते है ।

425. समकित के 67 बोल का सामान्य वर्णन

1. **चार श्रद्धा** -
   1. नवतत्वो के उपर अटूट श्रद्धा
   2. तत्वबोध देने वाले गीतार्थ गुरु की सेवा.
   3. समकित से पतित होने वाला का त्याग.
   4. अन्यदर्शनी के साथ परिचय का त्याग.
2. **तीन लिंग** -
   1. धर्म सुनने की तीव्र इच्छा.
   2. धर्म के उपर दृढ राग.
   3. देव गुरु की वैयावच्च.
3. **दशका विनय** -
   1. अरिहंत प्रभुका
   2. सिद्ध भगवंत का.
   3. जिन प्रतिमा - जिन मंदिर का
   4. जैन सिद्धांत रुपी आगम का.
   5. दशप्रकार के मुनिधर्म का.
   6. साधु भगवंत का.
   7. आचार्य भगवंत का.
   8. उपाध्याय भगवंत का
   9. चतुर्विध संघ का
   10. सम्यक्त्व गुण गुणी का.
4. **तीन शुद्धि** -
   1. जिनवचन ही सच्चा है वो मन शुद्धि
   2. सच्चा सार जिन वचन में है एसी प्ररुपणा वो वचन शुद्धि

3. शासन - धर्म हेतु शरीर का भी त्याग वो कायगुप्ति.

5. **पांचदूषण** - 1. जैन धर्म में शंका रखना.
2. दूसरे धर्म की इच्छा करना.
3. आराधना के फल में अविश्वास.
4. मिथ्यामति के गुणों का वर्णन.
5. मिथ्या धर्म का परिचय करना.

6. **आठप्रभावक** - 1. संपूर्ण शास्त्र को जानने वाले हो.
2. उपदेश देने में अतिकुशल.
3. वाद करने में आतिकुशल
4. निमित्त शास्त्र के जानकार.
5. महातपस्वी व अभिग्रहधारी
6. मंत्र विद्या को जानने वाले.
7. अंजनचूर्ण प्रयोग के जाणकार
8. अर्थ गंभीर काव्य को रचनेवाले.

7. **पांच भूषण** - 1. धर्मानुष्ठान मे अतिकुशल
2. तीर्थ सेवा - गीतार्थ मुनि की सेवा.
3. धर्म से चलायमान नहि होना.
4. देव गुरु की भक्ति करनेवाला.
5. शासन प्रभावना करने वाला.

8. **पांच लक्षण** - 1. विरोधी पक्ष में भी समभाव रखनेवाला.
2. मोक्ष सुख की इच्छा रखनेवाला.
3. संसार के प्रति अप्रीतिवाला.

4. दीन दुःखी के उपर करुणा वाला.
5. प्रभु वचन का दृढ विश्वासी.

9. छ प्रकार की जयणा -

1. अन्य दर्शनी को हाथ नहि जोडना
2. अन्य दर्शनी को मस्तक नहि झुकाना.
3. भक्तिपूर्वक अन्न - पाणी न देना.
4. बार बार दान नहि देना.
5. सामने से जाकर बात न करना
6. बार बार बातचीत न करना.

10. छ प्रकार के आगार -

1. यदि राजा का आदेश हो
2. गांव समूह लोगो का आदेश हो.
3. चोर - लूंटारे आदि का दबाव हो.
4. देव शक्ति का दबाव हो.
5. माता - पिता गुरु का आदेश हो.
6. आजीवीका का भय हो.

12. छ प्रकार की भावना -

1. समकित धर्म का मूल है.
2. समकित धर्म नगर ना द्वार है.
3. समकित धर्म मंदिर का पाया है.
4. समकित धर्म का भंडार है.
5. समकित धर्म का आधार है.
6. आत्मा मोक्ष का उपाय है ।

13. **छ प्रकार के स्थान -**

1. आत्मा है.
2. आत्मा नित्य है.
3. आत्मा कर्ता है.
4. आत्मा भोक्ता है.
5. आत्मा का मोक्ष होता है.
6. आत्मा मोक्ष का उपाय है ।

➡ **समकित से होने वाले लाभ**

1. राग-द्वेष दूर होकर सच्ची शांति प्राप्ति होती है.
2. मन विशुद्ध बनकर समभाव का सुख प्राप्त होता है.
3. समकित समान कोई गुण नहि है ।

426. उपसर्ग शब्द की विवेचना

1. **जीव उपसृज्यते सम्बध्यते पीडादिभिः सह यस्मात् तत उपसर्गः** जिसके साथ जीव पीडा से संबंध वाला बनता है वो उपसर्ग ।
2. **उपसरंति इति उपसर्ग :** जो पास में आकर उपद्रव करते है वो उपसर्ग।
3. **उवसृजन्ति वा अनेन उपसर्गो** - जो कष्ट का उपसर्जन यानि कष्ट को उत्पन्न करे वो उत्सर्ग ।
4. **उपसृज्यन्ते - क्षिप्यते व्याव्यते प्राणी धर्मादिभिरित्युपसर्गा :** जो प्राणी को धर्म से खींचकर रमत करे वो उपसर्ग ।
5. **उपसर्ग उपद्रव** - उपद्रव यानि उपद्रव ।
6. **उपसर्गान देवादिकतान् उपद्रवान** - देव आदिने जो किया उपद्रव वो उपसर्ग ।

7. **दिव्वेयजे उवसग्गे, लहा तिरिच्छ मागुरसे ।**
जे भिक्खू सइइ निच्चं, से न अच्छई मण्डले ।

➡ **भावार्थ :** जो भिक्षु देवता, तिर्यञ्च, मनुष्य आदि ने कीये उपसर्गो को नित्य सहन करता है उसको संसाररुपी मंडल में परिभ्रमण नहि करना पडता. (उत्तराध्ययनसूत्र)

427. द्युति मुनि की प्रथम देशना

➡ दशरथ के पुत्र राम - लक्ष्मण जब वनवास में जाते है तब भरत द्युति मुनि की देशना सुनते है.

1. जो रात्रि भोजन करते नहि है वो सद्गति को प्राप्त करता है.
2. जो तीनो काल अरिहंत के दर्शन करता है वो बहोत पापो का नाश करता है.
3. जो सुगंधी पुष्पो से पूजा करते है वो दिव्य विमान के सुख को प्राप्त करता है.
4. जो निर्मल भाव रुप पुष्प से पूजा करते है वो सुंदर देह वाला लोकमें यश प्राप्त करता है.
5. जो जिनेश्वर को धूप, केसर, चंदनसे पूजता है वो देवो का अधिपति बनता है.
6. जो जिनभवन में दीपक अर्पण करते है वो सूर्य जैसे देव विमान में जाता है.
7. जो दर्पण, छत्र, चामर, ध्वजा सिंहासन, कलश, रथ अर्पन करता है वो जीव श्रेष्ठ लक्ष्मीपति बनता है.
8. जो जिन को विलेपन करता है वो लम्बे समय तक विमान के सुख प्राप्त करता है.

9. जो सुगंधी जल से अभिषेक करता है वो पुरुष महान बनकर अभिषेक को प्राप्त करता है.
10. जो दूध से प्रभु का अभिषेक करता है वो ऋद्धि संपन्न देव बनता है.
11. जो दही द्वारा प्रभुका अभिषेक करता है वो ऋद्धि संपन्न देव बनता है.
12. जो घृत द्वारा प्रभु का अभिषेक करता है वो सुगंधी देहवाले देव बनते है.
13. जो नैवेद्य बलि आदि रखते है वो परमविभूति युक्त शुद्ध आरोग्य प्राप्त करता है.
14. जो वांजीत्र - नाट्य, मधुर गीतो गाता है वो श्रेष्ठ विमान में उत्तम देव बनता है ।
15. जो उत्तम जिनभवन का निर्माण करता है वो देव समूह से अभिनंदन प्राप्त करता है.
16. जो जिन प्रतिमा भराता है वो देव, मनुष्य के सुख को प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करता है । **(पउम परियम पर्व. 32)**

428. द्युति मुनी की देशना दूसरी

➡ है भरत ! जिनेश्वर परमात्मा को भक्ति भाव पूर्वक दर्शन-वंदन करने से अनेक गुणा लाभ प्राप्त होता है ।

1. जो जिनेश्वर परमात्मा की मन से दर्शन की ईच्छा करता है - 1 उपवास
2. जो जिनेश्वर प्रभुको वंदन हेतु खडा हो ने से - 2 उपवासलाभ
3. प्रभु के दर्शन हेतु चलने का प्रारंभ करने से - 3 उपवास का लाभ.
4. प्रभु के दर्शन हेतु मौन पूर्वक चलने से - 4 उपवास का लाभ.

5. प्रभु के दर्शन हेतु थोडा चलने से - 5 उपवास का लाभ.
6. प्रभु के दर्शन हेतु आधा रास्ता तक चलने से - 15 उपवास का लाभ.
7. दूर से जिनमंदिर को देखते ही - 30 उपवास का लाभ.
8. प्रभु के दर्शन हेतु जिनमंदिर मे प्रवेश करने से - छ मास के उपवास का लाभ.
9. जिनेश्वर के द्वार में प्रवेश करके जिनेश्वर को देखते ही - 1 साल के उपवास का लाभ.
10. जिनमंदिर को प्रदक्षिणा देने से - 100 साल के उपवास का लाभ.
11. जिनेश्वर परमात्मा के सामने खडे होकर मस्तक झुकाकर स्तुति करने से 1000 उपवास का लाभ प्राप्त होता है इससे उंचा कोई धर्म नहि है।

(पउम चरियम् पर्व-32)

429. देशना का प्रभाव भरत राजाके उपर

➡ मुनिश्वर ने कहा कि प्रभु भक्ति करने से एवं व्रत को ग्रहण करने से चारित्रमोहनीय कर्म नाश होता है जिस तरह रत्नद्वीप में गया हुआ मानव रत्न ग्रहण करके अति मूल्यवान बनता है उसी तरह तुम भी तुम्हारे जीवन में कीसी भी प्रकार का नियम रुपी रत्न ग्रहण करना चाहिए।

➡ मुनिवर की देशना सुनकर भरत राजा ने अभिग्रह ग्रहण कीया कि जब राम - लक्ष्मण का दर्शन होगा. यानि घर पर आयेंगे तब मेरे को दीक्षा लेना. और जब तक दीक्षा नहि लूं तब तक श्रावक के व्रत का पालन (देश विरति) करना.

430. उपदेशमाला ग्रंथ में आने वाली कथा

1. चंदनबाला
2. संबाधन राज
3. भरतचक्री
4. सागरचंद्र राजा
5. प्रसन्नचंद्र राजा
6. बाहुबली
7. सनत्चकी
8. उदायीराज
9. जा सा सा कथा
10. मृगावती
11. जंबुस्वामी
12. चिलातीपुत्र
13. ढंढणऋषि
14. स्कंधकाचार्य शिष्य
15. हरिकेशी मुनि
16. वज्रस्वामी
17. नंदिषेण मुनि
18. गजसुकुमाल
19. स्थूलभद्रस्वामी
20. सिंह गुफावासी
21. पीठ - महापीठ
22. तामली तापस
23. शालीभद्र शेठ
24. अवंती सुकुमाल
25. मेतार्य मुनि
26. कालिकाचार्य
27. दत्तमुनि
28. केशी गणधर
29. कालिकाचार्य
30. वीर प्रभु का पूर्व भव
31. बलदेव रथकार
32. पूरण तापस
33. वरदत्त मुनि
34. चंद्रावतंसक राजा
35. कामदेव श्रावक
36. द्रमक
37. द्रढप्रहारी
38. सहस्त्रमल्ल
39. स्कंदक कुमार
40. चुलणी राणी
41. कनककेतु राजा
42. कोणिक राजा

43. चाणक्य
44. परशुराम
45. आर्य महागिरी
46. मेघ कुमार
47. सत्य की विद्याधर
48. श्री कृष्ण राजा
49. चंडरुद्राचार्या
50. अंगार मर्दकाचार्य
51. पुष्पचूला
52. आर्णिकापुत्राचार्य
53. मरुदेवी माता
54. सुकुमालिका
55. मंगु सूरि
56. गिरिशुक पुष्पशुक
57. सेलकाचार्य
58. शशी प्रभराजा
59. त्रिदंडी कथा
60. सुलस कथा
61. नंदिषेण मुनि
62. पुलिंद मिल्ल
63. कपटपक्ष
64. जमलिकथा
65. कुंडरिक पुंडरिक
66. चंडाल कथा
67. दर्दुरांक देव
68. कूर्म कथा

(उपदेशमाला)

431. चमरेन्द्र देव का पूर्व भव

➡ विंध्याचल पर्वत के पास पेढाल गांव में पूरण शेठ रहता था. वैराग्य वासित होने पर पुत्र को घर का मार सोंपकर तापसी दीक्षा स्वीकार की. भिक्षा हेतु चतुष्कोण वाला पात्र बनाया. छठ के पारणे छठ करने लमा. जो भिक्षा में आता था उसमें एक खंड स्थलचर को और बाकी का एक खंड बचता उसमें से भोजन करताथा. इस तरह 12 साल तक अज्ञान कष्ट सहन करते करते अनशन करके कालधर्म हुआ. चमरचंचा राजधानी में चमरेन्द्र बने. (यही तप जिनशासन में क्रिया के साथ करते तो मोक्ष हो जाता) (उपदेशमाला गा. 109)

432. मंगल शब्द का अर्थ

मां गालयइ भवाओ मंगलमिहेवमाइ नेरुत्ता ।

➡ **भावार्थ :** मां यानि मेरे को जो पाप से छुडाता है वो मंगल कहलाता है।

मां गालयति भवादिति मंगलं संसारदपनीयतीत्यर्थः ।

अथवा मा भूत शास्त्रस्य गलो विघ्नो अस्मादिति ॥

➡ **भावार्थ :** मेरे को भव से यानि संसार से दूर करे वो मंगल. या गल यानि विघ्न शास्त्र के प्रारंभ में विघ्न उत्पन्न न करे वो मंगल कहलाता है । **(विशेषावश्यक भाष्य)**

➡ **मा गलो भूदिति मंगलमय** - जो गल यानि विघ्न का नाश करे.

➡ **मद्यान्तिदृष्यन्ति अनेनेति मंगलम्** - जिसके द्वारा प्रसन्नता होवे वो मंगल

➡ **महान्ते पूज्यन्तेऽनेनेतिमंगलम** - जिसके द्वारा पूजा होती है वो मंगल.

मंगिज्जए ऽधिगम्मई, जेणहियं तेण मंगलं होई ।

अहवा मंगो धम्मो, तं लाई तयं समादत्ते ॥

➡ **भावार्थ :** जिसके द्वारा हित की याचना करने में आए, और हित की प्राप्ति हो जाय वो मंगल. या मंगल का अर्थ धर्म होता है जो धर्म करता है वो मंगल कहलाता है ।

433. श्रावण पूर्णिमा की सात अजायबी

1. **प्रथमअजायबी** - जंबूद्वीप के अपर विदेह में चंपानगरी में सुरश्रेष्ठ नाम का राजा था. नंदन मुनि की देशना सुनकर, वैराग्य पाकर दीक्षा स्वीकार करके वीश स्थानक तप द्वारा तीर्थंकर नाम कर्म बांधा आयु पूर्ण करके प्राणत देवलोक में उत्पन्न हुआ. वहां से च्यवन होकर राजगृही नगर में

सुमित्र राजा के घर पद्मावती राणी की कुक्षी में सुरश्रेष्ठ का जीव श्रवण नक्षत्र में श्रावण सुद पूर्णिमां के दिन आया. पद्मावली राणी को 14 स्वप्न आये. इसलिये वीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी का च्यवन कल्याणक श्रावण सुद्र पूर्णिमा के दिन हुआ ।

2. **दूसरी अजायबी** - एवं नवमे मासे संपुण्णे सावण संगए चांद सावण पंचदशीए सुयाणजुयलं पभूयासा **(पउम चरियमपर्व - 67)**

बीसवे तीर्थंकर मुनिसुव्रत स्वामी के शासन में जन्म पाने वाले दशरथ के पुत्र राम उसकी पत्नी सीता का जब जंगल में त्याग होता है. तब वो सीता पुंडरीकपुर में पहोंचकर वहां पर राज़ा के घर नवमास परिपूर्ण होने पर श्रवण नक्षत्र में श्रावण सुद पूर्णिमा के दिन सीता महासती ने पुत्र युगल को जन्म दिया. एक का नाम अनंगलवण व दूसरे का नाम मदनांकुश रखा. दोनों पुत्रने बडे होकर राम के साथ लडाई करके अयोध्याका राज्य प्राप्त कीया व लक्ष्मण की मृत्यु देखकर वैराग्य आया - अमृतरस अणगार के पास दीक्षा लेकर मोक्ष में गये. रामचन्द्रजी के दोनों पुत्र लव व कुश का जन्म श्रवण नक्षत्र में श्रावण सुद पूर्णिमां के दिन हुआ था ।

3. **तीसरी अजायबी** - वि. सं. 1901 में मुनि श्री शुभ विजयजी के शिष्य मुनि श्री वीर विजयजी महाराजा ने राजनगर (अमदावाद) में प्रभुवीर के 27 भव की पांच ढाल की रचना श्रावण सुद पूर्णिमा के दिन की थी.

ओगणीस एके वरस छेके श्रावणपूर्णिमा वरो
थुण्योलायक विश्वनायक, वर्धमान जिनेश्वरो
संवेग रंग तरंग झीले, जस विजय समता धरो
शुभविजय पंडित चरण, सेवक, वीरविजय जयकरो

4. **चतुर्थ अजायबी** - अमदावाद माणेक चोक के पास खेतरपाल की पोल में पिता मनुसुखलाल माता उजम बेन थे. उजमबेन का गांव वलाद था. वलाद में वि. सं. 1911 श्रावण सुद पूर्णिमा के दिन पुत्र चुन्नीलाल को जन्म दिया. कुल इनके छ पुत्र व एक पुत्री थी उसमे अंतिम चुन्नीलाल थे. उनकी वादी चंदनबेन के साथ हुयी. 23 साल की उम में दीक्षा लेने की तीव्र भावना. परिवार का सखत विरोध था तो भी झांपडा की पोल में जाकर साधुका वेश पहल लीया - फिर मणि विजय दादा के पास जाकर 1934 जे. व. 2 के दीन दीक्षा स्वीकार की. और सिद्धि विजय नाम रखा. गुरु आज्ञा से खरतर गच्छ के रत्न सागर मुनि की सेवा में 8 साल रहै. वि. सं. 1975 में वसंतपंचमी के दिन महेसाणा में सूरि पद प्राप्त किया. 72 साल की उम्र में वर्षीतप का प्रारंभ कीया. 105 साल की उम्र तक वर्षीतप चला 105 डीग्री ताव होने पर भी तप नहि छोडा. इन्होंने अपने जीवन को 1000 श्रावक श्राविका को संयम (दीक्षा) प्रदान कीया ।

5. **पांचवी अजायबी** - गुजरात बनासकांठा में भामर गांव में रहनेवाले पिता मानचंद रोलीया, माता जडावबेन ने वि. स. 1938 में श्रावण सुद पूर्णिमां के पुत्र को जन्म दिया, नाम त्रिभुवनभाई रखा. वि. स. 1967 वे. सु. 6 के दिन दीक्षा उपवास के पारणे उपवास जीवनभर दीक्षा के समय 124 बेलगाडी व 128 उंटघोडे की सवारी आयी थी. पं. सिद्धि विजयजी के हाथो से वडी दीक्षा छाणी में हुयी थी.

6. **छठ्ठी अजायबी** - वि. सं. 1971 में थराद के पास पावड गांव में पिता सगथाचंद, माता पार्वतीबेन के वहां श्रावण सुद पूर्णिमा के दिन पुत्र हालचंद को जन्म दिया. गांव में न मंदिर न उपाश्रय, एक बार साध्वीजी श्री सौभाग्य श्री जी विहार करते पावड गांव में पधारते है. एक घर में

ठहरे व प्रतिक्रमण के समय सम्झाय पृथ्वीचंद्र - गुणसागर की चल रही थी. बहार बैठकर संपूर्ण रुप से सज्झाय को सुनी वैराग्य भाव हुआ. प्रभु महावीरस्वीमी के 27 भव का पुस्तक पढा वैराग्य दृढ हुआ. शाश्वत तीर्थ पालीताणा में जाकर दीक्षाग्रहण की. महीने के बाद घर दीक्षा केस समाचार मिले. शातिचंड सूरि के शिष्य सोमचंद्र सूरि बने. शिल्प, ज्योतिष मे निष्णात हुए. सरीयद गांव में दीक्षा का मार्ग खोलने वाले यही आचार्य थे.

7. **सातवीअजायबी** - मरुधर देशके जालोर जिल्लेमें आया हुआ मालवाडा गांव में पिता उत्तमचंद माता रंगुबेन की कुक्षी से वि. सं. 2015 श्रावण सुद पूर्णिमा के दिन पुत्र खुशालचंद को जन्म दिया. कुल चार पुत्र थे. 1. पोपटलाल 2. मणिलाल 3. खुशालचंद 4. धनपाल. आचार्य गुणरत्नसूरिजी के शिबीर आबूजी तीर्थ में अभिग्रह लेकर वैराग्य का बीज बोया. आचार्य रत्नशेखर सूरिजी के हाथो से मालवाडा में संयंम स्वीकार कीया. कलिकुंड तीर्थोद्धारक आचार्य राजेन्द्रसूरिके पास आगम ग्रंथ का ज्ञान प्राप्त कीया गणि पंन्यास - आचार्य तीनो पदवी कलिकुंड में राजेन्द्र सूरि ने अपने हाथो से दी. मुनि रत्नेन्दु विजयजी में से आ. सत्नाकर सूरि नाम रखा.

विहि पडिवन्न चरित्तो, गीयत्थो वच्छल्लो सुसीलोय
सेविय गुरुकुलवासो, अणुयति परो गुरु भणिओ ॥९३॥

(संबोध प्रकरण)

➡ **भावार्थ :** - हरिभद्रसूरिजीने संबोध प्रकरण ग्रंथ में आचार्य भगवंत के छ गुण बताये है

1. विधीपूर्वक चारित्र ग्रहण करने वाले.

2. गीतार्थ - सूत्र एवं अर्थ को जाननेवाले.
3. वात्सल्य - सभी जीवो के प्रतिवात्सल्य भाव वाले.
4. सुशीलो - जीवन में सदाचार की प्रधानतावाले.
5. गुरुकुलवास - जीवनभर गुरु की सेवामें रहनेवाले.
6. अणुयत्तिपरो - शिष्य के स्वभाव से अनुकुल बनने वाले ।

➡ आत्मकल्याणहेतु, शिष्य की योग्यता देखकर उपदेश दे कर चारित्र में स्थिर करने वाले गुरु अनुवर्तक कहलाते है ये छ गुण पूज्य गुरुदेव जी रत्नाकर सूरिजी के जीवन में है । **(उपाध्यायजी रत्नत्रय वि.)**

434. मोक्ष के पर्यायवाची शब्द

1. **पंथ :** दर्शन-ज्ञान-चारित्र मोक्षका पंथ है ।
2. **मार्ग :** आत्म कल्याण का मार्ग है ।
3. **न्याय :** सभी प्रकार का अन्याय दूर होने पर सच्चा न्याय यहां है ।
4. **विधी :** दर्शन-ज्ञान-चारित्र की आराधना विधी पूर्वक करना ।
5. **धृति :** रत्नत्रयी की आराधना धीरजता के साथ करना ।
6. **सुगति :** सभी गतिओमें श्रेष्ठ गति मोक्ष ।
7. **हित :** आत्मा के हितकर कार्य सच्चा हित दिलाता है ।
8. **सुख :** जहां क्षण मात्र भी दुःख नही वो सच्चा सुख ।
9. **पथ्य :** धर्म की सच्ची आराधना का पथ्य मौक्ष है ।
10. **श्रेय :** मोहनीय कर्म क्षय होने से सच्चा श्रेय मिलता है ।
11. **निवृत्ति :** संसार सेनिवृत्ति वो ही सच्ची निवृत्ति ।
12. **निर्वाष :** प्रथम चार घाती फिर चार अघाती कर्म का नाश निर्वाण ।
13. **शिव :** शैलेषी अवस्था प्राप्त होने के बाद शिवपद प्राप्त ।

(सूयगडांगसूत्र)

435. भद्रबाहु स्वामि की विद्वता

वंदामिभद्रबाहुं, पाईणं चरिण सयल सुयनाणी. ।
सुत्तस्स कारग मिसिं, दसासुय कप्येय ववहारीय ॥

➠ **भावार्थ :** संपूर्ण श्रुत को जानने वाले, दशाश्रुत कल्प, कल्पसूत्र व व्यवहार सूत्र की रचना करने वाले, व प्राचीन गोत्रवाले महर्षि भद्रबाहु स्वामी को मैं वंदन करता हूं.

श्री भद्रबाहवेः प्रीत्यैः सूरिः शौरिरिवास्तु सः ।
यस्मात् दशानां, जन्मासीत, निर्युक्तौनामचाभिव ॥

➠ **भावार्थ :** जैसे शौरी ने दश दशार्हो को जन्म दिया उसी तरह भद्रबाहु दुस्वामी ने दश निर्युक्तिओ को जन्मदिया. ऐसे भद्रवाहु स्वामी तुम्हारी प्रीति के लिये हो. (अममचरित्र)

श्री कल्पसूत्र ममृतं विबुधोप्रयोग योग्यं जरामरण दारुण दुःखहारि ।
येनोद्धृतं पतिमता मधितात श्रुतावर्धेः श्री भद्रबाहु गुरवे प्रणतोस्मि तस्मै ॥

➠ **भावार्थः** श्री मतिधरने श्रुतसागर का मंथन करके जन्म व मृत्यु एसे दारुण दुःख को हरण करने वाला. पंडित एवं देवताओ के कामका कल्पसूत्र नामका अमृत उत्पन्न कीया है उस भद्रबाहुस्वामी को मैं नमस्कार करता हूँ ।

अपश्चिम पूर्वमृतां द्वितीर्यः श्री भद्रबाहुश्च गुरुः सिवा य ।
कृत्वोपसर्गाविहरहत्त्वं यो, ररक्ष संघं धरणायिताहिः ॥13॥
निर्मूढ सिद्धान्त पयोधिराय, स्वर्यश्च बीरात खगेन्दु वर्षे

➠ **भावार्थ :** यशोभद्रसूरि के दूसरे पट्टधर, अंतिम पूर्वधर उपसर्ग स्तोत्र रचकर संघ रक्षा करने वाले, धरणेन्द्र से पूजीत सिद्धांत सागर को वहन

करने वाले वी. सं. 170 में देव हुए. एसे भद्रबाहु स्वामी गुरु कल्याण के लिये बनो ! (मुनिसुंदर गुर्वावली)

वंदामि भद्रबाहुं जेणय, अईरसियं बहु कला कलियं ।
रइयं सपाय लक्खं, चरियं वसुदेव रायस्स ॥

➡ **भावार्थ :** जिन्होंने अतिरसिक एवं कलाओसे पूर्ण एसे. 1,25,000 श्लोक प्रमाण वसुदेव चरित्र रचा. एसे भद्रबाहु स्वामी को वंदन ।

(जैन परंपरा इति.)

436. उवसग्गहंर स्तोत्र की टीका

➡ उवसग्गहंर स्तोत्र की रचना भद्रवाहु श्रुतकेवली ने की उसके उपर विविध आचार्य भगवंत ने नौ टीका की रचना की.

1. **बृहद्धत्ति** - जिसके कर्ता का उल्लेख मिलता नहि एवं वृति भी मिलती नही. सिर्फ चंद्रसूरिने अपनी लघुवृत्ति में बृहद्धृत्ति का उल्लेख किया.
2. **लघुवृत्ति** - यह टीका बारवी सदी में बनी है उसके कर्ता चंद्रसूरि है
3. **लघुवृत्ति** - यह टीका तेरवी सदी के प्रारंभ में बनी हुयी थी.
4. **व्याख्या** - यह टीका चौदवी सदी में जिनप्रभसूरि ने बनायी थी.
5. **वृत्तिः** - यह टीका पंदरवी सदी में जयसागर सूरि ने बनायी थी.
6. **वृत्ति** - यह टीका सत्तरवी सदी में हर्षकीर्ति सूरि ने बनायी थी.
7. **व्याख्या** - यह टीका सतरवी सदी में सिद्धिचंद्र गणी ने रची थी.
8. **लघुवृत्ति** - जैन ग्रंथावाली दर्शाये हुए लघुवृत्ति के 850 श्लोक है
9. एक अज्ञात कृती अवचूरि पूना भांडारकर इन्स्टीटयूट में है ।

(जैन परंपरा इति.)

437. भद्रबाहुस्वामी रचित निर्युक्ति

1. आवश्यकनिर्युक्ति - 2550
2. दशवैकालिक निर्युक्ति - 445
3. उतराध्ययन निर्युक्ति - 677
4. आचारांग निर्युक्ति - 362
5. दशाश्रुत निर्युक्ति - 144
6. सूयगडांग निर्युक्ति - 208
7. बृहत्कल्प सूत्र नि. - 625
8. व्यवहार सूत्र नि. - अप्राप्य
9. सूर्य प्रज्ञप्ति नि. - अप्राप्य
10. ऋषिभाषित नि. - अप्राप्य
11. व्यवहारसूत्र मूल - 373
12. दशाशुत स्कंध मूल - 1830
13. पंचकल्प मूल - 1133
14. बृहदकल्प मूल - 473
15. पिंड निर्युक्ति - 708
16. ओध निर्युक्ति - 1164
17. पर्युषणा कल्प - 68
18. संसक्त नि. - 64
19. उवसग्गहंर स्तोत्र - 5
20. वसुदेव चरित्र - 1,25,000
21. भद्रबाहु संहिता -

438. अकबर बादशाह की ऋद्धि

1. हाथी - 16.000
2. घोडे - 9 लाख
3. रथ - 20.000
4. पायदल - 18 लाख
5. हरिण - 14.000
6. चिन्ता - 12.000
7. वाघ - 500
8. शकरा - 17.000
11. गायिका - 11.000
12 पंडित - 500
13. बडे प्रधान - 500
14. कारकुन - 20.000
15. उभराव - 10.000
16. सुखासन - 16.000
17. पालखी - 8.000
18. नगार - 8.000

9. बाज - 22.000	19. मजनभेर - 5.000
10. गायक - 7000	20. ध्वजाए - 7000
21. बिरुदबोलने वाले - 500	26. मर्दन करने वाले - 86
22. वैद्य - 300	27. शास्त्र पढनेवाले - 300
23. मद्य बनाने वाले - 300	28. वांजीत्र बजानेवाले - 300
24. सुथार - 1.600	29. कुत्ते - 20.000
25. आभूषण बनानेवाले - 86	30. वाघरी - 20.000

(सूरीश्वर सम्राट)

439. पर्युषण पर्व के प्रवचन कौन से

1. **प्रथम दिन** - श्रावक के पांच कर्तव्य का वर्णन
2. **द्वितीय दिन** - श्रावक के 11 वार्षिक कर्तव्थ का वर्णन.
3. **तृतीय दिन** - पौषधमहिमा, पौषध के 18 दोष
4. **चतुर्थ दिन** - (प्रथम प्रवचन कल्पसूत्र का) कल्पसूत्र का प्रारंभ साधु के 10 आचार का वर्णन. नागकुमार, मेघकुमार व कार्तिक शेठ का दृष्टांत।

➡ **द्वितीय प्रवचन** - 10 आश्चर्य, देवानंदा गर्भ परिवर्तन, प्रभुवीर के 27 भव का वर्णन त्रिशलामाता के चार स्वप्न का वर्णन. गौशाला उपसर्ग.

5. **पंचमदिन** - प्रथम प्रवचन - 10 स्वप्न का वर्णन, स्वप्नपाठक का आगमन, त्रिशला माता द्वारा गर्भ का रक्षण. गर्भ न हिलने के कारण विलाप, गर्भ में अभिग्रह, 24 तीर्थंकर का गर्भकाल, महावीरजन्मवाचन.
6. **छट्ठादिन** - छठ्ठा प्रवचन - छप्पन दिक्कुमारी द्वारा प्रभु का जन्म महोत्सव इन्द्रसिंहासन कंपन, शकस्तव पाठ, सूर्यचन्द्र दर्शन, 64 इन्द्रो द्वारा जन्मभिषेक, पाठशालागमन, लोकांतिकदेव, वर्षीदान, पंचमुष्टिलो करेमि भंतो का पच्चकखाण.

➡ **छठ्ठादिन - छट्ठाप्रवचन** - घोर उपसर्ग का वर्णन, चंडकौशिकपूर्वभव, विहार, ध्यान मे 10 स्वप्न, 42, चातुर्मासवर्णन, चंदनबाला अभिग्रह, केवलज्ञान व गणधरवाद. ।

7. **सातवा दिन - सातवां प्रवचन** - पार्श्वनाथ, नेमिनाथ, आदिनाथ का जीवन चरित्र, गृहस्थ कर्म की शिक्षा, स्त्रीओ की 64 कला, पुरुषो की 72 कला, श्रेयांस कुमार द्वारा पारणा, प्रभु के आंतरे.

➡ **सातवा दिन (आठवां प्रवचन)** - स्थविरावली, फल्गुमित्र से देवद्विगणी तक स्थविरो को वंदन, भद्रबाहु स्वामी, स्थूलभद्रस्वामी आदि स्थविरो का जीवन चरित्र आदि ।

8. **आठवां दिन (नवम प्रवचन)** समाचारी के साथ 1200 श्लोक का प्राकृत भाषा में संपूर्ण बारसा सूत्र का प्रवचन, व चित्रो का दर्शन. ।

440. कल्पसूत्र की अनेक उपमा

1. देवो में इन्द्र
2. ताराओ में चन्द्र
3. न्यायीओ में राम
4. रुपवानो में कामदेव
5. रुपवती में रम्भा
6. हाथी में ऐरावत
7. वृक्षो में कल्पवृक्ष
8. नृत्योमें मधूर
9. तेजस्वी में सूर्य
10. साहसीओ में रावण
11. सतीओ में राजीमती
12. वनो में नंदनवन
13. काष्ठ में चंदन
14. पुष्पोमें कमल
15. तीर्थो में शत्रुंजय
16. धुनुर्धर में अर्जुन
17. बुद्धिशाली में अभयकुमार
18. बुद्धिशाली में अभयकुमार
19. औषधिमें अमृत
20. धनुर्धारीओ में अर्जुन

➡ इस तरह सभी शास्त्रो में शिरोमणी कल्पसूत्र महान है. कल्पसूत्र में बताया है कि अरिहंत समान कोई देव नहि, शत्रुंजय समान कोई तीर्थ नहि, मोक्ष समान कोई पद नहि, कल्पसूत्र समान कोई सूत्र नहि । (कल्पसूत्र)

441. कौन सा जीव कौन सी गति में जाता है

सद्धर्मः सुभगो नीरुक् सुस्वप्नः सुनयः कविः ।
सूचयात्यात्मनः श्रीमान् नरः स्वर्गगमाऽगमौ ॥४॥

➡ जो अच्छी तरह से धर्म किया करता हो, भाग्यशाली हो, शरीर निरोगी हो, अच्छे स्वप्न आते हो, नीतीमान हो, कवि हो वो पुरुष देवगति में से आया है व देवगति में जानेवाला है ।

निर्दम्भः सदयोदानी दान्तो दक्षः सदाऋजुः ।
मार्ययोनेः समुद्भूतो भविता च पुनस्तया ॥५॥

➡ जो निष्कपट है, दयालु है, दानवीर है, इन्द्रियो के उपर संयमवाला है, सरल स्वभावी है वो पुरुष मनुष्य गति में से आया है व मनुष्य गति में जाता है

माया लोभ क्षुधाऽऽलस्य ब्रह्माहारादि चेष्टितैः ।
तिर्यग्योनि समुत्पत्तिं ख्यापयत्यात्मनः पुमान् ॥६॥

➡ कपट, लोभ, भूख, आलस, अतिआहार, आदि क्रियावाला पुरुष तिर्यञ्च योनि में से आया व तिर्यञ्च योनि में जायेगा।

सरागः स्वजनद्वेषी, दुर्भाषो मूर्ख सङ्गकृत् ।
शास्ति स्वस्थ गताऽऽयातं नरो नरकवर्त्मनि ॥७॥

➡ अतिकामी, स्वजन का द्वेषी, दुर्वचन बोलने वाला, मूर्खो का संग करनेवाला, पुरुष नरक गति में से आया है व नरक गति में जायेगा ।

(कल्पसूत्र प्रथम प्रवचन)

442. लक्ष्मी देवी के नीचे कमलो की संख्या

1.	मुख्य कमल के नीचे कुल	- 108 कमल
2.	दूसरे वलय के सामानिक देवोके	- 4,000 कमल
3.	पूर्वदिशा के महर्द्धिक देवो के	- 4 कमल
4.	अग्निकोणे में गुरु स्थानीय देवो के	- 8,000 कमल
5.	दक्षिण दिशा के मित्र स्थानीय देवो के	- 10,000 कमल
6.	नेऋत्य दिशा के सेवक स्थानीय देवो के	- 12,000 कमल
7.	पश्चिम दिशा के सात सेना के	- 7 कमल
8.	तीसरे वलय के अंगरक्षक देवो के	- 16,000 कमल
9.	चतुर्थवलय के अभ्यंतर आभियोगिक देवो के	- 32 लाख कमल
10.	पंचम वलय के मध्यम आभियोगिक देवो के	- 40 लाख कमल
11.	छठे वलय के बाह्य आभियोगिक देवो के	- 48 लाख कमल

➡ इस तरह मुख्य कमल के साथ इक्टठे करते 1,20,50,120 (एक करोड, बीस लाख, पचास हजार, एकसो बीस कमलो के उपर लक्ष्मी देवी बिराजमान है। **(कल्पसूत्र द्वितीय प्रवचन)**

443. अष्टांग निमित्त का स्वरुप

1. **अंगविद्या** - पुरुष का बाया अंग व स्त्री का दाया अंग स्फुरायमान होता है तो अच्छा जानना इत्यादि अंग स्फुरणादि का विचार है जिसमे वो अंग विद्या.
2. **स्वप्नविद्या** - जिसमें जद्यन्य, मध्यम, उत्कृष्ट स्वप्नो का विचार आता है।

3. **स्वरविद्या** - जिसमें गरुड, उल्लू, कौआ, गिरिगिट, हरगा, तीतर, मोर, शीयाल, आदि के आवाजो द्वारा शुभाशुभ फल जिसमें आता है वो.
4. **भीम विद्या** - जिसमें भूचाल आदि का ज्ञान आता है.
5. **व्यंजनविद्या** - जिसमें मसा, तल, आदि का ज्ञान आता है.
6. **उत्पात विद्या** - उत्पात, उल्कापात, अकाल तारे टूटना आदि का ज्ञान जिसमें है.
7. **लक्षण विद्या** - हाथ-पैर की रेखा का जिसमें ज्ञान आता है.
8. **अंतरीक्षविद्या** - आकाश में रहनेवाले सूर्य, चंद्र, उदय, अस्त आदि का शुभाशुभ परिणाम जिसमें आता है वो । (**कल्पसूत्र तृतीय प्रवचन**)

444. व्यक्ति को स्वप्न आने के नौ कारण

1. जिस पदार्थ का ज्यादा अनुभव होता है वो स्वप्न में दिखती है.
2. जो पदार्थ के शब्दो को बार बार सुनते है वो स्वप्न में आती है.
3. जागृत अवस्था में जो देखते है वो स्वप्न में आती है.
4. वात, पित्त, कफ आदि के विकार भाव द्वारा स्वप्न आते है.
5. सहज रुप से स्वभाव से भी स्वप्न आते है
6. बहोत चिंतित मन होता है तब भी स्वप्न आते है.
7. देवतादि के सान्निध्य से भी स्वप्न आते है.
8. धर्मकार्य के प्रभाव से भी स्वप्न आते है.
9. अतिशय पाप के उदय से भी स्वप्न आते है.

उपर बताये हुए 'छ' स्वप्न शुभ या अशुभ देखे तो निष्फल जानना. अंतिम तीन प्रकार के स्वप्न सच्चे फल को देने वाले है ।

(**कल्पसूत्र तृतीय प्रवचन**)

445. स्वप्न का फल कब मिलता है

1. रात्रि के प्रथम प्रहर में जो स्वप्न देखता है उसका फल - 12 मास में मिलता है
2. रात्रि के दूसरे प्रहर में जो स्वप्न देखता है उसका फल - 6 मास में मिलता है
3. रात्रि के तीसरे प्रहर में जो स्वप्न देखता है उसका फल - 3 मास में मिलता है
4. रात्रि के चतुर्थ प्रहर में जो स्वप्न देखता है उसका फल - 1 मास में मिलता है
5. रात्रि के अंतिम दो घडी तक जो स्वप्न देखता है उसका फल - 10 दिनमें मिलता है
6. सूर्योदय के समय जो स्वप्न को देखता है उसका फल - तुरंत फल मिलता है । **(कल्पसूत्र तृतीय प्रवचन)**

446. स्वप्न का फल कैसे मिलता है

धर्मरंतः समधातुर्यः स्थिरचित्तो जितेन्द्र सदयः ।
प्रायस्तस्य प्राथितमर्थं स्वप्न प्रसाधयति ॥ 7 ॥
न श्राव्यः कुस्वप्नो गुर्वादेस्तवितरः पुनः श्राव्य ।
योग्य श्रीत्योऽभावे, गौरपि, कर्णे प्रविश्य वदेत ॥ 8 ॥

➡ जो व्यक्ति धर्म में अनुरक्त है, जिसके इस रुधिरादि धातु सम है. स्थिर

चित्तवाला है जितेन्द्र है दयालु है उसको आने वाला स्वप्न इच्छित अर्थ की सिद्धिवाला बनता है बुरा स्वप्न कीसी को भी कहना नहिं. अच्छा स्वप्न आये तो योग्य गुरु, योग्य व्यक्ति, ज्योतिषी आदि को कहना. कोई नहि मिले तो अंतिम गाय के कान में कहना. अच्छा स्वप्न आने के बाद सोना नहि. मगर जिनेश्वर के गुणगान में समय पूर्ण करना. और बुरा स्वप्न आए तो सो जाना. उसके कारण बुरा फल नहि मिलेगा. । प्रथम बुरा स्वप्न आए फिर अच्छा स्वप्न आए तो अच्छा फल मिलता है. और प्रथम अच्छा बाद में बुरा स्वप्न आये तो बुराफल मिलता है ।

(कल्पसूत्र तृतीय प्रवचन)

447. त्रिशलामाता के चौद स्वप्न का फल

1. **गजवर** - चार दांत वाला गजवर देखने से प्रभु दान-शील-तप-भाव-चार प्रकार के धर्म का प्रकाश फेलायेंगे ।
2. **वृषभ** - प्रभु इस भरत क्षेत्र में बोधी बीज का वपन करेंगे ।
3. **सिंह** - राग द्वेष रूपी हाथीओ को नष्ट करके भव्यजीव रुपी वन की रक्षा करेंगे ।
4. **लक्ष्मीदेवी** - दुनिया के लोगो को वर्षीदान देकर तीर्थंकर लक्ष्मी का उपयोग करेंगे.
5. **पुष्पमाला** - प्रभु तीनो लोक में माला के सुगंध की तरह पूजनीक बनेंगे ।
6. **चंद्र** - स्वभाव से शीतल बनकर भूमंडल में आनंद देने वाले मिलेंगें ।
7. **सूर्य** - तेजस्वी भामंडल के द्वारा अपने तेज को संहर कर रखेंगे ।

8. **ध्वजा** - धर्म रुपी महेल के उपर मोक्ष रुपी शिखर द्वारा सुशोभित बनेंगे।
9. **पूर्णकलश** - केवलज्ञान पाने के बाद पूर्णता (मोक्ष) को प्राप्त करेंगे।
10. **पद्मसरोवर** - देवो द्वारा निमित्त कमलो के उपर चरण रखनेवाले बनेंगें।
11. **खीरसमुद्र** - केवलज्ञान रूपी रत्न को प्राप्त करनेवाले बनेंगे.
12. **देवविमान** - वैमानिक देवताओ द्वारा पूजनीक बनेंगें.
13. **रत्नराशि** - रत्नो से विभूषित गढ में बिराजमान होकर देशना देंगे.
14. **निर्धूमअग्नि** - भव्यजीवो को समकित की प्राप्ति करानेवाले बनेंगे.

(कल्पसूत्र चतुर्थ प्रवचन)

448. कल्पसूत्र का महिमा

नाऽर्हतः परमो देवो, न मुक्ते परमं पदम् ।
न श्री शत्रुंजयात्तीर्थ श्री कल्पाद् न परंश्रुतम् ॥१॥

➡ **भावार्थः** अरिहंत परमात्मा से बढकर कोई देव नहि है.
मोक्षपद से बढकर कोई परमपद नहि है
शत्रुंजय तीर्थ से बढकर कोई तीर्थ नहि है.
कल्पसूत्र से बढकर कोई उत्तम शास्त्र नहि है.
कल्पसूत्र साक्षात् कल्पवृक्ष समान है वीरप्रभु का चरित्र बीजरुप है. पार्श्वनाथ का जीवन अंकुरा रुप है नेमिनाथ का चरित्र तना रुप है. ऋषभदेव का चरित्र डाली रुप है. स्थविरावली पुष्प समान, सामाचारी सुगंध समान व अंतिमफल मोक्ष गति है ।

(कल्पसूत्र प्रथम प्रवचन)

449. छप्पन्न दिक्कुमारीओ के नाम

अधोलोक कुमारी	ऊर्ध्वलोक कुमारी	रुचकपर्वत की कुमारी	दक्षिणदिशा के रुचक
1. भोगंकरा	1. मेघंकरा	1. नंदा	1. समाहारा
2. भोगवती	2. मेघवती	2. उत्तरनंदा	2. सुप्रदत्ता
3. सुभोगा	3. सुमेधा	3. आनंदा	3. सुप्रबद्धा
4. भोगमालिनी	4. मेघमालिनी	4. नंदिवर्धना	4. यशोधरा
5. सुवत्सा	5. तोयधरा	5. विजया	5. लक्ष्मीवती
6. वत्समित्रा	6. विचित्रा	6. वैजयंती	6. शेषवती
7. पुष्पमाला	7. वारिषेणा	7. जयंति	7. चित्रगुप्ता
8. अनिंदिता	8. बहालिका	8. अपराजिता	8. वसुंधरा

भूमि को वायु से शुद्ध दक्षिणदिशा रुचक पर्वत	सुगंधी जलपुष्पवाली उत्तरदिशा रुचक पर्वत	दर्पण विदिशा रुचक पर्वत	जलभरा कलश रुचकद्वीप से
1. ईलादेवी	1. अलम्बुशा	1. चित्रा	1. रूपा
2. सुरादेवी	2. मितकेशी	2. चित्रकनका	2. रुपासिका
3. पृथिवी	3. पुंडरिका	3. शतेरा	3. सुरुपा
4. पद्मावती	4. वारुणी	4. वसुदामिनी	4. रुपकावती
5. एकनासा	5. कासा	दीपक	नालच्छेद
6. नवमिका	6. सर्वप्रभा		
7. भद्रा	7. श्री		
8. सीता	8. ह्री		
(पंखा)	(चामर)		(कल्पसूत्र पंचम प्रवचन)

450. शूलपाणी यक्ष मंदिर में प्रभु को आये हुए 10 स्वप्नों

➡ शूलपाणी यक्ष के मंदिर में प्रभुवीर ने संपूर्ण रात्रि घोर उपसर्ग सहन कीये. जब सुबह का समय आया तब प्रभु को थोडा प्रमाद (नींद) आया उस समय 10 (दस) स्वप्न आये उसका अर्थ.

1. **प्रथमस्वप्न** - ताल पिशाच (ताड जितने लम्बे पिशाच को मारा) उसके द्वारा प्रभु मोहनीय कर्म का क्षय करेंगे ।
2. **द्वितीयस्वप्न** - सफेद पक्षी सेवा करता है - प्रभु शुक्ल ध्यान धारण करेंगे.
3. **तीसरास्वप्न** - कोकिल पक्षी सेवा करता है - प्रभु द्वादशांगी की प्ररुगणा करेंगे.
4. **चोथास्वप्न** - गाय का समूह सेवा करता है - चतुर्विध संघ आप की सेवा करेंगे.
5. **पांचवास्वप्न** - आप समुद्र तर रहे हो - प्रभु संसार समुद्र को तरेंगे.
6. **छठ्ठास्वप्न** - उगे सूर्य को देखते है - प्रभु को केवलज्ञान होगा.
7. **सातवां स्वप्न** - आंख से मानुषोत्तर पर्वत को लपेटते है - प्रभु की कीर्ति तीनों लोक में प्रसिद्ध होगी.
8. **आठवां स्वप्न** - मेरु पर्वत के शिखर उपर चढते है - प्रभु समवसरण में चढेंगे.
9. **नौवांस्वप्न** - पद्मसरोवर को देखा - चारो निकाय के देब प्रभु की सेवा करेंगे.
10. **दशवांस्वप्न** - सुगंधी पुष्प माला देखते है - देशविरति - सर्व विरति धर्म की प्ररुपणा करेंगें । **(कल्पसूत्र का छठ्ठा प्रवचन)**

451. राजीमति - नेमिनाथ के नौ भव का संबंध

भव	प्रभु का जीव	राजीमती का जीव
1. प्रथम भव	धनराज पुत्र	धनवती पत्नी
2. द्वितीय भव	प्रथम देवलोक में देव	प्रथम देवलोक में देवी
3. तृतीय भव	चित्रगति विद्याधर	रत्नवती पत्नी
4. चतुर्थ भव	चोथे देवलोक में देव	चोथे देवलोक में देवी
5. पंचम भव	अपराजित राजा	प्रियतमा राणी
6. छठ्ठा भव	12 वें देवलोक में देव	11वें देवलोक में देवी
7. सातवा भव	शंखराजा	यशोमती राणी
8. आठवां भव	अपराजित देवलोक में देव	अपराजित देवलोक में देव
9. नौवा भव	नेमिनाथ भगवान	राजीमती साध्वीजी

453. चोवीश तीर्थंकर का गर्भकाल

1. ऋषभदेव - 9 मास 4 दिन.
2. अजितनाथ - 8 मास 25 दिन.
3. संभवनाथ - 9 मास छ दिन.
4. अभिनंदनस्वामी - 8 मास 28 दिन.
5. सुमतिनाथ - 9 मास छ दिन.
6. पद्मप्रभस्वामी - 9 मास छ दिन.
7. सुपार्श्वनाथ - 9 मास 19 दिन
8. चंद्रप्रभस्वामी - 9 मास 7 दिन.
9. सुविधीनाथ - 8 मास 26 दिन.
10. शीतलनाथ - 9 मास छ दिन.
13. विमलनाथ - 8 मास 21 दिन
14. अनंतनाथ - 9 मास छ दिन
15. धर्मनाथ - 8 मास 26 दिन
16. शांतिनाथ - 9 मास छ दिन
17. कुंथुनाथ - 9 मास 8 दिन
18. अरनाथ - 9 मास 8 दिन
19. मल्लीनाथ - 9 मास 8 दिन
20. मुनिसुव्रतस्वामी - 9 मास 8 दिन
21. नमिनाथ - 9 मास 8 दिन
22. नेमिनाथ - 9 मास 8 दिन

11. श्रेयांसनाथ - 9 मास छ दिन
12. वासुपूज्यस्वामी - 8 मास 20 दिन
23. पार्श्वनाथ - 9 मास छ दिन
24. महावीरस्वामी - 9 मास 7 दिन

(सप्ततिशत स्थान प्र.)

454. संगमदेव द्वारा बीस उपसर्ग

1. मिट्टि के द्वारा पूरे शरीर को ढकने का उपसर्ग.
2. चीटी द्वारा शरीर को छालनी जैसा बनाने का उपसर्ग
3. डांस-मच्छर द्वारा शरीर को डंख देने का उपसर्ग
4. धीमेल द्वारा संपूर्ण शरीर को हेरान करने का उपसर्ग
5. बिच्छू द्वारा शरीर का मांस निकालने का उपसर्ग
6. नोलीये द्वारा शरीर का मांस निकालने का उपसर्ग
7. साप द्वारा शरीर को लपटने का उपसर्ग
8. चूहे द्वारा शरीर को काटने का उपसर्ग
9. मदोन्मत हाथी द्वारा उंचा उछालने का उपसर्ग
10. हथनी द्वारा दांतो को कोतरने का उपसर्ग
11. भयंकर राक्षस के रुप द्वारा डराने का उपसर्ग
12. सिंह की तीक्ष्ण दाढा द्वारा काटने का उपसर्ग
13. माता पिता का रुप बनाकर धिक्कारने का उपसर्ग
14. दो पैर के बीच में अग्नि द्वारा चावल पकाने का उपसर्ग
15. पक्षी के पिंजर लगाकर काटने का उपसर्ग
16. भयंकर आंधी के द्वारा प्रभु को डराने का उपसर्ग
17. चक्रवाक यानि कुंभार के चक्र की तरह घुमाने का उपसर्ग
18. हजार भारवाला कालचक्र के द्वारा प्रभु को जमीन में डाटने का उपसर्ग

19. प्रभात का समय बनाकर विहार कराने का उपसर्ग
20. देवऋद्धि के द्वारा प्रभु को चलायमान करने का उपसर्ग

(कल्पसूत्र छठ्ठा प्रवचन)

455. कल्पसूत्र की टीका में आते दृष्टांत

1. नागकेतु
2. कार्तिकशेठ
3. मेघकुमार
4. गौशाला
5. द्रौपदीहरण
6. वीरकशालवी
7. पूरणऋषि
8. नयसार
9. मरीची
10. विश्वभूति
11. त्रिपृष्ठ वासुदेव
12. नंदनमुनि
13. पांचसो सुभट
14. सामुद्रिक शास्त्री
15. शूलपाणी यक्ष
16. चंडकौशिक पूर्वभव
17. कंबल संबलदेव
18. तेजो लेश्या
19. चंदनबाला
20. कमठ उपसर्ग
21. नेमिनाथ राजीमती के भव
22. आदिनाथ श्रेयांस के भव
23. जंबूस्वामी
24. शय्यंभव स्वामी
25. संगम उपसर्ग
26. स्थूलभद्रस्वामी
27. संप्रतिराजा
28. रोहगुप्तनिह्नव
29. प्रियग्रंथ सूरि
30. वज्रस्वामी
31. वज्रसेनसूरि
32. आर्यसमित सूरि
33. देवर्द्धिगणी पूर्वधर

(कल्पसूत्र सटीक)

456. कल्पसूत्र में साधु के 10 आचार

1. **अचेलककल्प** - भ.महावीर के साधु सफेद, अल्पमूल्य, जीर्ण परिमित वस्त्र धारण करने वाले होने से अचेलक कल्प कहते है ।
2. **ओद्देशिक कल्प** - ओद्दैशिक यानि आधाकर्मी अपने लिये या दूसरे साधु के लिये बनाया हुआ आहार पाणी काम में नहि आता है ।

3. **शय्यातरकल्प** - घर के मालिक को शय्यातर कहते है साधु जिस स्थान में ठहरते है उस स्थान का एक दिन का सभी पदार्थ कल्पता है मगर दूसरे दिन नीचे की वस्तु नहि कल्पती है ।

(1) आहार (2) पाणी (3) खादिम (4) स्वादिम (5) वस्त्र (6) पात्र (7) केबल (8) रजोहरण (9) सुई (10) उस्तरा (11) नहनी (12) कालखोतरणी यह 12 प्रकार का पिंड साधु को कल्पता नहि है. कौन सी वस्तु कल्पती है वो कहते है ।

(1) तृण (2) मिट्टि (3) रख्या (4) कुंडी (5) पाट (6) चोकी (7) पट्टा (8) संथारा (9) लेप (10) चारित्र की ईच्छावाला शिष्य ये 10 वस्तु शय्यातर को कल्पती है ।

4. **राजपिंड** - सेनापति, पुरोहित, नगरशेठ, मंत्री, सार्थवाह, राजा और जिसका राज्याभिषेक हो गया है उनके वहां से (1) आहार (2) पाणी (3) खादिम (4) स्वादिम (5) वस्त्र (6) पात्र (7) कंबल (8) रजोहरण आठ प्रकारका पिंड कल्पता नहि है ।

5. **कृतिकर्म** - यानि वंदन - साधुओ को दीक्षा पर्याय के क्रम से वंदन करना चाहिए. एक दिन के साधु ने 100 साल के दीक्षा पर्यायवाले साधु को साध्वीजी वंदन करते है कारणकि धर्म में पुरुष की प्रधानता है ।

6. **महाव्रत** - प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासनमें पांच महाव्रत होते है और बावीस तीर्थंकर के शासन में स्त्री को भी परिग्रह मानने से चार महाव्रत होते है ।

7. **ज्येष्ठकल्प** - छोटे बडे का व्यवहार प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासन में दीक्षा के बाद जब बडी दीक्षा होती है तब पर्याय गिना जाता है और बावीस तीर्थंकर के शासन में दीक्षा के दिन ही पर्याय गिना जाता है. जिसका पर्याय बडा वो बडा साधु बाकी के छोटे.

8. **प्रतिक्रमणकल्प** - प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासन में पांचो प्रतिक्रमण आवश्यक है-प्रतिदिन दोनो समय प्रतिक्रमण करना चाहिए. बावीस तीर्थंकर के शासन में जब अतिचार लगता है तब ही प्रतिक्रमण होता है ।

9. **मासकल्प** - प्रथम व अंतिम तीर्थंकर के शासन में 8 मास के 8 कल्प एक चोमासा का एक कल्प इस तरह नौ कल्पी विहार बताया. एक जगह एक मास से ज्यादा नहि रहना चाहिए. इधर रहना पडे तो उपाश्रय-स्थान आदि बदलना चाहिए. बावीस तीर्थंकरो के शासन में मास कल्प नियत नहि है.

10. **पर्युषणकल्प** - जधन्य व उत्कृष्ट, जघन्य-संवत्सरी महापर्व से लगाकर कार्तिक पूर्णिमा तक का जधन्य कल्प. अषाढ सुद-14 से कार्तिक पूर्णिमा तक का उत्कृष्टकल्प कहलाता है । **(कल्पसूत्र प्रथम प्रवचन)**

457. तेरह गुण से युक्त चातुर्मास स्थल

1. जहां पर ज्यादा कादव - कीचड न हो.
2. जहां पर ज्यादा संमूर्च्छिम जीव न हो.
3. जहां पर स्थंडिल भूमि निर्दोष हो.
4. जहां का उपाश्रय स्त्री-संसर्गादि बिना का हो.
5. जहां के घर दूध, दही, घी से भरपूर हो.
6. श्रावक का समुदाय विशाल व भद्रिक प्रकृति का हो.
7. जिसनगर का वेद्य भद्रिक प्रकृति वाला हो.
8. जहां की औषध (दवाई) सुलभ हो.
9. जहां के श्रावक के घर धन धान्य से भरपूर हो.

10. जहां का राजा (ठाकुर) भद्र प्रकृति वाला हो.
11. दूसरे धर्मवाले अपने धर्म का अपमान न करते हो.
12. जहां पर साधु साध्वीजी को भिक्षा सुलभ हो.
13. जहां पर स्वाध्याय का स्थान शुद्ध हो.

(कल्पसूत्र प्रवचन)

458. स्थविरभगवंतो के नाम व गौत्र

गोत्र नाम	स्थविर नाम
1. गौतम गोत्र	इन्द्रभूति (गौतम स्वामी)
2. गौतम	अग्निभूति
3. गौतम	वायुभूति
4. गौतम	व्यक्तभूति
5. अग्निवेश्यायन	सुधर्मास्वामी
6. वासिष्ठ	मंडितस्वामी
7. काश्यप	मोर्यपुत्र
8. गौतम	अकंपित
9. हरितायन	अचलभ्राता
10. कोडिन्य	मेतार्य
11. कोडिन्य	प्रभास
13. कौशिक	इन्द्रदिन्नसूरि
24. गौतम	आर्य दिन्नसूरि
25. कौशिक	सिंहगिरि
26. गौतम	वज्रस्वामी

गोत्र नाम	स्थविर नाम
12. काश्यप	जंबूस्वामी
13. कात्यायन	प्रभवस्वामी
14. वत्स	शय्यंभवस्वामी
15. तुंगिकायन	यशोभद्रसूरि
16. माढर	संभूति विजय
17. प्राचीन	भद्रबाहुस्वामी
18. गौतम	स्थूलभद्रस्वामी
19. अेलापत्य	आर्यमहागिरि
20. वासिष्ठ	आर्यसुहस्ति
21. व्याघ्रापत्य	सुस्थित सूरि
22. व्याघ्रापत्य	सुप्रतिबद्धसूरि
43. कारयप	आर्यरक्ष
44. गौतम	आर्यनाग
45. वासिष्ठ	आर्यजेहिल
46. माढर	आर्यविष्णु

27. उत्कौशिक - वज्रसेनसूरि
28. काश्यप - आर्य रोहण
29. हारित - श्री गुप्त
30. भारद्वाज - भद्रयश
31. कोडाल - कायद्धि
32. वाशिष्ट - ऋषिगुप्त
33. काश्यप - विद्याधर गोपाल
34. माढर - शांतिसूरि
35. गौतम - आर्यसमितसूरि
36. वत्स - आर्यरथ
37. कौशिक - आर्यपुण्यगिरि
38. गौतम - फल्गुमित्र
39. वासिष्ठ - धनगिरि
40. कुत्स - शिवमूति
41. काश्यप - आर्यनक्षत्र
42. काश्यप - आर्यभट्ट
47. गौतम - आर्यकालक
48. गौतम - आर्यवृद्ध
49. गौतम - आर्य संघपालित
50. सुव्रत - आर्यधर्म
51. काश्यप - आर्यसिंह
52. कौशिक - दुर्यान्त
53. कौशिक - कृष्णामुनि
54. गौतम - आर्यगुप्त
55. काश्यप - आर्यहस्ति
56. काश्यप - आर्यहस्ति
57. काश्यप - नंदित
58. माढर - देशगणी
59. वत्स - स्थिरगुप्त
60. - कुमार धर्मगणी
61. काश्यप - देवर्द्धिगणी

(स्थविरावली)

459. 'छ' श्रुतकेवली के नाम

1. प्रभवस्वामी
2. शय्यंभवरस्वामी
3. यशोभद्रसूरि
4. संभूति विजय सूरि
5. भद्रबाहु स्वामी
6. स्थूलभद्रस्वामी

(कल्पसूत्र प्रवचन)

460. संप्रति राजा के गुरु आर्य सुहस्ति के 12 शिष्य

1. रोहण
2. भद्रयश
3. मेघगर्जि
4. कामद्धि
5. सुस्थित
6. सुप्रतिबद्ध
7. रक्षित
8. रोहगुप्त
9. ऋषिगुप्त
10. श्री गुप्त
11. गणि ब्रह्मा
12. गणि सोम

(स्थविरावली)

461. दशपूर्वी के नाम

1. आर्य महागिरि
2. आर्य सुहदस्ति
3. गुण सुंदरसूरि
4. श्यामार्य
5. स्कंदिलाचार्य
6. रेवतीमित्र
7. श्री धर्मसूरि
8. भद्रगुप्त सूरि
9. श्री गुप्त सूरि
10. वज्रस्वामी

462. आठो कर्म की स्थिति

नाम	उत्कृष्ट स्थिति	जधन्य स्थिति
1. ज्ञानावरणीय कर्म	30 कोडा कोडी सागरोपम	अन्तर्मुहर्त
2. दर्शनावारणीय कर्म	30 कोडा कोडी सागरोपम	अन्तर्मुहर्त
3. वेदनीय कर्म	30 कोडा कोडी सागरोपम	12 मुंहर्त
4. मोहनीय कर्म	30 कोडा कोडी सागरोपम	अन्तर्मुहर्त
5. आयुष्य कर्म	70 कोडा कोडी सागरोपम	अन्तर्मुहर्त
6. नामकर्म	33 कोडा कोडी सागरोपम	अन्तर्मुहर्त
7. गोत्र कर्म	20 कोडा कोडी सागरोपम	अन्तर्मुहर्त
8. अंतराय कर्म	30 कोडा कोडी सागरोपम	8 अन्तर्मुहर्त

463. पुष्पमाला में फुलो की संख्या

त्रिशलामाता पाँचवे स्वप्न में जो फुलो की माला देखते है उसमें ताजे कल्पवृक्षो के फुलो की माला के साथ 24 प्रकार के फुल होते है.

1. चंपा	7. मोगरा	13. कोरिंट	19. पद्म
2. अशोक	8. मल्लिका	14. दमन्नकपत्र	20. उत्पल
3. पुन्नाग	9. जाई	15. नवमल्लीका	21. गुलाब
4. नागकेसर	10. जुई	16. बकुल	22. कुंद
5. प्रियंगु	11. अंकोल	17. तिलक	23. अतिमुक्तक
6. शिरीष	12. कोज्ज	18. वासंती	24. आम्रमंजरी

➡ चोवीस वेंतीर्थपति होने के कारण 24 जात के पुष्पो की माला त्रिशला माता स्वप्न में देखती है । **(कल्पसूत्र ततीय प्रवचन)**

464. प्रभुवीरका परिवार व गोत्र

1. **पिता के तीन नाम** - 1. सिद्धार्थ 2. श्रेयांस 3. यंशस्वी - **गोत्र** - काश्यप
2. **माता के तीन नाम** - 1. त्रिशला 2. विदेहदिन्ना 3. प्रीतिकारिणी **गोत्र** - वसिष्ठ
3. **काका** - सुपार्श्व.
4. **भाई** - नंदिवर्धन
5. **बहन,** सुदर्शना,
6. **पत्नी** - यशोदा, **गोत्र** - कोडिन्य.
7. **पुत्री** - काश्यप, **गोत्र** - अनवद्या, प्रियदर्शना.

8. **पौत्री** - कौशिक **गोत्र** - 1. शेषवती 2. जसवती

9. **भाभी** - ज्येष्ठा **(कल्पसूत्र पंचम प्रवचन)**

465. परमात्मा वीर के दीक्षा का वरघोडा

दीक्षा का दिन	-	मागसर वद - 10
दिन का नाम	-	सुव्रत
मुहुर्त का नाम	-	विजय
पालखी का नाम	-	चन्द्रप्रभा
दायें तरफ	-	कुलमहत्तरा हंसलक्षण साडी लेकर बैठती है.
बायें तरफ	-	धावमाता दीक्षा के उपकरण लेकर बेठती है.
पीछे	-	सफेद छत्र धारण करके एक सुंदरी बेठती है.
इशान कोणे में	-	मणिमय पंखा लेकर एक स्त्री बेठती है.
पालखी को दक्षिण दिशा में	-	शक्रेन्द्र उठाता है
पालखी उत्तर दिशा में	-	इशानेन्द्र उठाता है
पालखी दक्षिण दिशा में	-	चमरेन्द्र उठाता है
पालखी उत्तर दिशा में	-	बलीन्द्र उठाता है
भवनपति देव	-	पंचरंगी पुष्प वर्षा, देवदंदु भिकानाद.
शक्रेन्द्र - इशानेन्द्र	-	दोनों तरंफ चामर ढुलाते है.
वरघोडा की सामग्री	-	प्रभु के आगे अष्ट मंगल रत्नमय होते है

उसके पीछे - पूर्णकलश, झारी, चामर, बडी धजा, वेडूर्यरत्न दंड, सवारी के साथ 109 घोडे, 109 हाथी, ध्वजाओ, 108 रथ 108 वीर पुरुष, 1000 योजन उंचा 1000 धजा से युक्त महेन्द्र ध्वजा इसके पीछे हास्य करने वाले, नृत्य करने वाले, जयनाद बोलने वाले, भाट चारण आदि, शेठिया, कोटुंबिक आदि, क्रमसर प्रभु के पीछे चलते है. शंख बजाने वाले, घंट बजाने वाले, इस तरह चलते चलते ज्ञातखंड नामके वन में जाते है अशोक वृक्ष के नीचे पालखी रखते है. स्वयं प्रभु पालखी से नीचे उतरकर अपने हाथो से अलंकार उतारते है सभी अलंकार कुलमहत्तरा हंसलक्षणसाडी में ग्रहण करती है बाद में कुलमहत्तरा हितशिक्षा देकर प्रभु चार मुष्टि से मस्तक का लोच व । मुष्टि से दाढी, मुंछ का लोच करते है. फिर करेमि भंते का पच्चक्खाण प्रभु उच्चरते है फिर प्रभु को मनः पर्यवज्ञान उत्पन्न होता है । (कल्पसूत्र का पंचम प्रवचन)

466. चार तीर्थंकरो के चतुर्विधसंघ के नाम

1. **महावीरस्वामी**
   1. इन्द्रभूति आदि 14.000 साधु भगवंत
   2. चंदनवाला आदि 36.000 साध्वीजी भगवंत
   3. शंख शतक आदि. 1,59,000 श्रावको.
   4. सुलसा खेती आदि - 3,18,000 श्राविकाए.
2. **पार्श्वनाथजी**
   1. आर्य दिन्न आदि - 16,000 साधु भगवंत
   2. पुष्पचूला आदि - 38,000 साध्वीजी भगवंत
   3. सुव्रत आदि - 1,64,000 श्रावको
   4. सुनंदा आदि - 3,27,000 श्राविकाए

3. **नेमिनाथजी** 1. वरदत्त आदि 18,000 साधु भगवंत
2. आर्ययक्षिणी आदि 40,000 साध्वीजी भगवंत
3. नंद आदि 1,69,000 श्रावको.
4. सुनंदा आदि 3,36,000 श्राविकाए

4. **आदिनाथजी** 1. ऋषभसेन आदि 84,000 साधु भगवंत
2. ब्राह्मीसुंदरी आदि तीन लाख साध्वीजी भगवंत.
3. श्रेयांस आदि 3,50,000 श्रावको
4. सुभद्रा आदि 5,54,000 श्राविकाए.

(कल्पसूत्र 7वा प्रवचन)

467. नागेन्द्र आदि चार गच्छो की उत्पत्ति

➡ दशपूर्वी श्री व्रजस्वामी के शिष्य वज्रसेन सूरिजी विचरते विचरते सोपारक नगर में पहोंचे, वहां पर जिनदत्तश्रावक, ईत्वरी श्राविका और चार पुत्र नागेन्द्र, चन्द्र, निवृत्ति, विद्याघर नामके रहते थे. भयंकर दुष्काल के कारण द्रव्य देने परभी अनाज नहि मिलता था. अब क्या करना ? कैसे जीना ? एक दिन लाख रुपये देकर चावल लाकर उसमे झेर डालकर बनाने लगे. इतने में वज्रसेन सूरि आये, प्रफुल्लित हृदय से चावल वहोराने लगे. तब गुरुदेव ने कहा है ईश्वरी ! तु चिंता ना कर! मेरे गुरुदेव कहकर गये थे. जिसके घर लाख रुपये के चावल बनाते देखो उसके दूसरे दिन पूरे नगर में सुकाल गिरेगा, सिर्फ आज की रात निकाल दो. जैसे दूसरा दिन हुआ, अनाज के वाहन भर के आने लगे, गुरु के उपदेश से संपूर्ण परिवार ने दीक्षा ली. चार पुत्र के नाम से चार शाखा उत्पन्न हुयी. । **(स्थविरावली)**

468. चेटक राजा की सात पुत्री व स्वामीओ के नाम

➠ चेटक राजा को अलग अलग राणी से सात कन्या उत्पन्न हुयी थी. चेटक राजा का नियम था कीसी की शादि नहि कराना. अपनी कन्या को सामने से जाकर दी न थी.

1. **प्रभावती** - बीतभय नगर के राजा उदायी को दि थी.
2. **पद्मावती** - चंपानगरी के स्वामी दधिवाहन को दि थी.
3. **मृगावती** - कौशांबी नगरी के राजा शतानिक को दि थी.
4. **शिवा** - उज्जयिनीनगरी के स्वामी चंडप्रद्योत को दी थी.
5. **ज्येष्ठा** - वीर प्रभु के बडे भाई नंदिवधर्न को दी थी.
6. **सुज्येष्ठा** - श्रेणीक राजा सुज्येष्ठा की संमतिलेकर जब वेचे ल्लणा का अपहरण करने गया तबन सुज्येष्ठा व चेल्लणा दोनों तेयार हो गई. जन श्रेणिक आया तब सुज्येष्ठा रत्न की डिबी लेने गई तब श्रेणिक चेलमणा को ले गई. एसे प्रसंग पर वैराग्य पाकर सुज्येष्ठा ने आर्यचंदनाजी के पास संयम ग्रहण कीया.
7. **चेल्लणा** - राजगृही के राजा श्रेणीक को दी थी. **(विशेष शतकप)**

469. समुद्र विजय राजा के 16 पुत्र

1. महानेमि	5. अरिष्ट नेमि	9. अभय	13. श्वफल्क
2. सत्यनेमि	6. जयसेन	10. मेघ	14. शिवनंद
3. दृढनेमि	7. महीजय	11. चित्रक	15. विजयसेन
4. सुनेमि	8. तेजर्सेन	12. गौतम	16. महारथ

(नेमिचरित्र)

470. कृत्रिकापण यानि क्या ?

➡ कुत्रिकं. कु यानि भूमि त्रिक यानी तीनों लोक की भूमि, स्वर्ग, पाताल, मनुष्यलोक, तीनो भुवन में जो सामग्री है आपण यानि दुकान, समस्त लोक में रही हुयी सामग्री का समावेश जिसमें हो जाय वो कृत्रिकापण. तीनो लोक में प्रतिनियत यानि कीसी नगर में एसी व्यंतराधिष्ठित दुकान होती है व्यापारी को कुछ चाहिए तो व्यंतर वो सामग्री लाकर देते है और मूल्य भी स्वीकार करते है । **(विशेषशतक)**

471. वैराग्य के पर्यायवाची शब्द

माध्यस्यं वैराग्यं विरागता, शान्तिरुपशम प्रशमः ।
दोष क्षय - कषायविजयश्च, वैराग्य पर्यायः ॥17॥

1. **मध्यस्थ** - न राग न द्वेष यानि अच्छी सामग्री देखकर खुश न होना व बुरे पदार्थ देखकर गुस्सा नहि करना. दोनों में मध्यस्थ भाव वो वैराग्य.
2. **वैराग्य** - राग व द्वेष की मन्दता लाना, यानि अपनी अनुकुल इन्द्रिय के विषय में राग भी नहि करना व अनिष्ट विषय में द्वेष भी नहि करना.
3. **विरागता** - सिर्फ शब्द का परिवर्तन, खुशभी नहि होना, हर्ष भी नहि करना.
4. **शान्ति** - जिस समय आत्मा में राग हर्षका उदय न हो वो शान्ति.
5. **उपशम** - राग द्वेष का संपूर्ण क्षय नहि मगर उपशमभाव, यानि निमित्त मिल जाय तो भी जागृत नहि होना वो उपशम.
6. **प्रशम** - राग - द्वेष का उत्कृष्ट सम यानि जिस समय आत्मा अति विशुद्ध बनता है. एसा उत्कृष्ट भाव उत्पन्न होना.

7. **दोष क्षय** - जो आत्म भाव को दूषित करता, मलिन करता एसे भावो को मूल से नाश करने का प्रयत्न करना.

8. **कषायविजय** - कष् यानि संसार आय यानि लाभ, कषाय के कारण संसार की वृद्धि होती है कषाय मंद वो ही विजय. विजय वोही वैराग्य.

(प्रशमरति प्रकरण)

472. राग के पर्याय वाची शब्द

इच्छा मूर्च्छा कामः स्नेहो, गार्ध्य ममत्वमभिनन्दः ।
अभिलाष इत्यनेकानि, राग, पर्याय वचनानि ॥18॥

1. **इच्छा** - इच्छा यानि प्रीति, अच्छे पदार्थ देखकर खुश होना, आनंदित होना.

2. **मूर्च्छा** - प्रिय पदार्थ में लीन बनकर पदार्थ के उपर आसक्ति भाव बंढाना. यह अच्छा है यह मेरा है एसा भाव जगाना वो मूर्च्छा.

3. **काम** - इष्ट पदार्थ वो प्राप्त करने की इच्छा करना वो कामना.

4. **स्नेह** - कीसी भी पदार्थ के उपर गाढ प्रेम उत्पन्न होना.

5. **गृद्धता** - जिस तरह गीधपक्षी मृतदेह को देखकर आसक्त बनता है और यदि वो पदार्थ प्राप्त न होवे उसके लिये प्रयत्न करता है उसी तरह आसक्त बनकर प्राप्त करने का प्रयत्न ।

6. **ममत्व** - यह पदार्थ मेरा है मैं मालिक हूं मन ना एक परिणाम वो ममत्व

7. **उभिनंदः** - प्रियवस्तु प्राप्त होने के बाद खुश होना संतोष पाना वो अभिनंद ।

8. **अभिलाष** - मन के अनुकुल प्रिय विषयो की प्राप्ति के मनोरथ आकांक्षा हृदय स्पर्शी राग उत्पन्न होना वो अभिलाष । **(प्रशमरति प्रकरण)**

473. द्वेष के पर्यायवाची शब्द

इर्ष्या रोषो दोषो द्वेषः, परिवाद मत्सरः सूयाः ।
वैर प्रचण्डनाद्या नैके द्वेषस्य पर्यायाः ॥19॥

1. **इर्ष्या** - जब अपनी दृष्टि दूसरे के वैभव तरफ जाती है तब विचार आता है कि इसके पास इतना सारा वैभव ! और यदि वैभव आजाय तो अच्छा एसी ईच्छा होना वो इर्ष्या. ।
2. **रोष** - रोष यानि क्रोध मोहनीय कर्म के उदय से क्रोध आ जाता है मगर अपनी इच्छा युक्त कार्य न होने से क्रोध करना वो रोष.
3. **दोष** - दूसरे के प्रति अप्रीति उत्पन्न करके दोष को देखना वो दोष यह अतिमलिन वृत्ति है ।
4. **द्वेष** - द्वेष यानि अप्रीति - बहार से अच्छादिखाया करे व हृदय में अप्रीति - तिरस्कार भाव रखे वो द्वेष.
5. **परिवाद** - दूसरे के दोष देखकर दूसरो को कहना बहार से मीठी मधुरी भाषा बोले अन्दर से द्वेष भाव रखकर दोष बताना वो परिवाद.
6. **मत्सर** - दूसरे का कभी अच्छा देख न सके अन्दर से जलता रहे स्वयं को धिक्कारे वो मत्सर.
7. **असूया** - विशिष्ट द्वेष भाव. स्वयं क्षमा दे नहि व दूसरो को क्षमा न देने दे वो असूया.
8. **वैर** - परस्पर द्वेष भाव रखने से क्लेश उत्पन्न होता है क्लेश से वैर उत्पन्न होता है वेर की गांढ बढाते रहना वो वैर.
9. **प्रचंडन** - क्रोधाग्नि को प्रज्वलित करके प्रचंड गुस्सा करना वो प्रचंडन.

(प्रशमरति प्रकरण)

474. 'शास्त्र शब्द का अर्थ'

शास्विति वाग् विधी विद्धिर्धातुः, पांपछ्यतेऽनु शिष्टयर्थः च
त्रैडिःति च पालनार्थे, विनिश्चितः सर्व शब्द विदाम ॥186॥
यस्मात राग द्वेषोद्धत, चितान समनुशास्ति सद्धमे ।
संत्रायते च दुःखास्त्रमिति निरुच्यते सिद्धिः ॥187॥

➠ **भावार्थ :** चौदपूर्वी 'शास्' धातु के अर्थ को अनुशासन कहते है और त्रैडः धातु के पालन अर्थ में सुनिश्चित कीया है राग-द्वेष में जिसका मन व्याप्त है वो अपना मन जब सधर्म में अनुशासित करते है और दुःखोसे बचाते है उसको लोग शास्त्र कहते है । **(प्रशमरति)**

475. चौद पूर्व के नाम, पद, वस्तु, पूलिका

पूर्वनाम	पूर्वपद	वस्तु	चूलिका	हाथी प्रमाण
1. उत्पादपूर्व	1 करोड	10	4	1
2. अग्रहायणीपूर्व	96 लाख	14	12	2
3. वीर्य प्रवाद पूर्व	70 लाख	8	8	4
4. अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व	60 लाख	18	10	8
5. ज्ञान प्रवाद पूर्व	10 पद न्यून 1 करोड	12	-	16
6. सत्य प्रवाद पूर्व	1 करोड छ पद	2	-	32
7. आत्मप्रवाद पूर्व	36 करोड	16	-	64
8. कर्मप्रवाद पूर्व	1 करोड 80 लाख	30	-	128
9. प्रत्याख्यान प्रवादपूर्व	84 लाख	20	-	256

10. विद्याप्रवादपूर्व	11 करोड 15 हजार	15	-	512
11. कल्याण प्रवादपूर्व	26 करोड	12	-	1024
12. प्राणवाय प्रवादपूर्व	1 करोड 55 लाख	13	-	2048
13. क्रियाविशालपूर्व	नव करोड	13	-	4096
14. लोकबिंदुसारपूर्व	साढे बार करोड	25	-	8192
	कुल	**208**	**34**	**16.383**

(प्रवचन किरणावली)

476. पद - वस्तु - चूलिका यानि क्या ?

1. **पद** - विवक्षित अर्थ अधिकार का प्रारंभ से अंत तक का आलावा वो पद कहलाता है उतना भाग वो पद है बत्तीस अक्षर का एक श्लोक बनता है एसे एक पद का 51 करोड, 8 लाख, 86 हजार 800 श्लोक होते है ।

2. **वस्तु** - पूर्व का जो बडा भाग नियमित अर्थ का अधिकार जिसमें बताया है एसे श्रुत स्कंधादि के जैसा उत्पादपूर्वादि का भाग वो वस्तु. उसके भी प्रभूत, प्राभृत - प्राभृत, प्राभृतिका, प्राभृतिका, प्राभृतिका ये सभी विभाग - प्रतिविभाग भी है.

3. **चूलिका** - मेरु पर्वत की जिस तरह चूलिका होती है. जिनालय को शिखर होता है उसी तरह श्रुतरुपी मंदिर के शिखर समान चूलिका जानना, चार पूर्व की चूलिका है, बाकी को नहि है दृष्टिवाद में परिक्रमा, पूर्वगत, सूत्र, अनुयोग आदि द्वारा कहा हुआ नहि हुआ एसे अर्थ को संग्रह करने की पद्धति वो चूलिका । **(प्रवचन किरणावली)**

477. निंदा के कारण भव भ्रमण

➠ उपमितिभव प्रपंचा कथा नाम के ग्रंथ में निंदा का भयंकर पाप बताया है उसमें प्रथम व अंतिम श्लोक लिखा है बाकी के श्लोक ग्रंथ में देख लेना.

निंदापापेन भवभ्रमण, अथ सूरि सुधा भ्रममासद्य शुभकानेन
पुनईष्टो मया भद्रे, महत्तम सरागमौ ।।993।।
न साविपद् न तद्दुःखं, न सा गाढ विडम्बना ।
लोके ऽस्ति पद्म पत्राक्षि, यान सोढा तदा मया ।।104।।

श्लोक नं. 993 से 1004 तक

➠ **भावार्थ :** साधु वेष को धारण करने वाला, साधुओ के बीच में रहा हुआ कर्म के दोष से मेरामन विकल्पवाला हुआ. महा मोहादि प्रबल हुआ उससे महत्तम, सदागम, सदाचार, सत्यभाषा, दूर हुयी. उसके कारण निमित्त को देखकर या निमित्त बिना मैं पर निंदिक बना. तपस्वी, संयमी, उत्तम आचार को पालने वाले महात्माओ की मैनेनिंदा की. विशेष तो क्या कहुं ? तीर्थंकर भगवंत, संघ, श्रुत, गुणधर भगवंतो की आशातना, करता मैंने पीछे नहि देखा, साधु वेष यानि (सुधर्मास्वामी गणधर ने जो वेष पहना वो वेष) होते हुए भी गुण दूषक, पापात्मा, महामोहवश बनकर मैं भयंकर मिथ्यादृष्टि बना. निंदा के घोर पाप द्वारा दुर्भेद्य कर्मो का मैने संग्रह कीया. दुःख के समुद्र में डुबते अनंतकाल तक सभी योनिओमें, सभी स्थानो में भटकते रहा. अर्धपुद्गल परावर्त समय तक मैंने सभी दुःखो को सहन कीया. विश्व में ऐसी कोई विपत्ति नहिं. एसा कोई दुःख

नहि, एसी कोई गाढ विडंबना नहि जो मैंने सहन न की होगी. यानि साते नारकी के, सभी प्रकार के तिर्यञ्च के, मनुष्यो के एवं देवलोक के कठिन दुःखो को मैंने सहन कीया. ।

महापुरुषो को निंदा का भयंकर पाप का परिणाम, सम्यक्त्व पाया हुआ जीव, संयमधर्म को पाया हुआ जीव, निंदा के पाप में ओत प्रोत बनकर शासन - संघ - अरिहंत - साधु - सामायिक की आशातना करके अनंतकाल तक नरक, निगोद, तिर्यञ्च आदि के कारमे दुःखो को सहन करता है. इसलिये हंमेशा निंदा के कातिलरस से सावधान बनकर भवभ्रमण से दूर हटना । (उपमिति भव प्रपंचकथा)

478. प्रभावक चरित्र में आनेवाली कथा

1. वज्रस्वामी चरित्र
2. आर्यरक्षित सूरि
3. आर्यनंदिल सूरि
4. कालक सूरि
5. पादलिप्त सूरि
6. विजयसिंह सूरि
7. जीव सूरिजी
8. वृद्धवादि सूरि
9. हरिभद्रसूरि
10. मलमवादी सूरि
11. बप्पभट्टी सूरि
12. मानतुंग सूरि
13. मानदेव सूरि
14. सिहषि सूरि
15. वीर सूरि
16. शान्ति सूरि
17. महेन्द्र सूरि
18. सूराचार्य
19. अभयदेव सूरि
20. वीराचार्य
21. देवसूरि
22. हेमचंद्रसूरि

➠ **रचना** - आचार्य श्री चन्द्रप्रभ सूरि के शिष्य प्रभाचन्द्र सूरि ने वि. सं. 1334 चैत्र शुक्ला सप्तमी के दिन पुनर्वसु नक्षत्र में शुक्रवार के दिन यह प्रभावक चरित्र पूर्ण हुआ. (प्रभावक चरित्र)

479. धर्मवृक्ष में नवपदो की नौ अवस्था.

1. वृक्ष का मूल - नमो अरिहंताणं
2. वृक्ष का फल - नमो सिहाणं
3. वृक्ष का फूल - नमो आयरियाणं
4. वृक्ष के पत्ते - नमो उवज्झायाणं
5. वृक्ष की शाखा - नमो लोए सत्वसाहूणं
6. पाणी का सिंचन - नमो दंसणस्स
7. अनुकुल पवन.- नमो नाणस्स
8. अनुकुल ताप - नमो चारितस्स
9. अनुकुल भूमि - नमो तवस्स

480. भरत चक्री द्वारा अष्टापदे जिन मंदिर

धूभसय भाउगाणं, पउवीसं श्वेच जिणहरे कामी ।
सव्व जिणाणं पडिमा, कण्ण यमाणेहिं निअएहिं ॥1॥

➡ **भावार्थः** 100 भाई के 100 स्तूप, चोवीस तीर्थंकर के चोवीश जिनालय, चोवीश तीर्थंकर की काया प्रमाणवाली वर्ण से युक्त चोवीश प्रतिमाओ को भरत चक्री ने अष्टापद पर्वत के उपर स्थापन की थी ।

(आवश्यक सूत्र)

481. पर्युषण पर्व के पांच कर्तव्य

सव्वे जीवा वि इच्छंति, जीवीउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणिवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंतिणं ॥

1. **अमारिप्रवर्तन** - कीसी भी जीवको मारने की प्रवृत्ति करना नहि वो अमारि प्रवर्तन. शय्यंभव सूरि श्रुतकेवलि ने दशवैकालिक आगम में बताया है कि सभी जीव जीने की इच्छा करते है कोई भी मरने की ईच्छा नहि करता. इसलिये घोर एसा प्राणिवधका अवश्य त्याग करना चाहिए. छोटे से छोटे जीव की हिंसा अपने हाथो से हो न जाय उसका ध्यान

रखना चाहिए। कुमारपाल राजा के शासन में 'मार' शब्द का प्रयोग भी नहि होता था यदि कोई प्रयोग करे तो राजा उसको दंड दे ते थे. कुमार पाल राजा ॥ लाख घोडे, 80,000 हाथी, आदि सभी पशुओ को भी जाडे गरणे से पाणी छानकर पीलाते थे. और हाथी घोडे के उपर पूंजकर बेठते थे. 18 देशमें गरने भेजकर जीवदया का पालन कराया था. प्रत्येक अनुष्ठान में जयणा का खास ध्यान रखना वो है अमारि प्रवर्तन ।

2. **साधर्मिक भक्ति** - समान धर्म वाले को साधर्मिक कहतें है जो देव - गुरु के उपर श्रद्धा रखकर दर्शन - ज्ञान--चारित्र की आराधना करता है वो ही सच्चा साधर्मिक एसा व्यक्ति जो दुःखी है तो उसकी अवश्य भक्ति करना. सभी धर्मो में साधमिक भक्ति ज्यादा फलदायी है यह भी भक्ति गुप्त रुप से करना जिससे ज्यादा लाभ मिलता है समकित की निर्मलता एसी भक्ति से होती है यह धर्म मार्ग में आगे बढेगा तो ज्यादा लाभ मिलेगा ।

3. **परस्पर क्षमापना -जो उवसमई तस्स अत्थि आराहणा ।**
जो न उवसमई तस्स नत्थि आराहणा ॥

➡ भद्रबाहु स्वामी ने कल्पसूत्र में बताया है कि जो सामने जाकर क्षमा मांगता है वो है आराधक और जो क्षमा मांगता नहि वो है विराधक यानि अपनी भूल है या नहि मगर सामने के व्यक्ति को अप्रीति है तो क्षमा मांगने के बाद ही संवच्छरी प्रतिक्रमण करना तो शुद्ध होगा अपनी आराधना को सफल बनानी है तो क्षमा अनमोल उपाय है ।

4. **अट्ठम का तप** - अट्ठम यानि एक साथ तीन उपवास करना यह अपना वाषिक कर्तव्य है जेसे 15 दिन की आलोचना एक उपवास,

चारमास की आलोचना दो उपवास व 12 मास की तीन उपवास है साधु -साध्वीजी व श्रावक - श्राविका का यह तप आचार है. यदि उपवास नहि हो सके तो नीचे बताया हुआ तप भी कर सकते है.

- एक उपवास न हो सके तो दो आंबिल.
- दो अंबिल न हो सके तो तीन नीवी
- तीन नीवी न हो सके तो चार एकासणा
- चार एकासणा न हो सके तो आठ बिआसणा
- आठ बिआसणा न हो सके तो 2000 गाथा का स्वाध्याय
- यदि 2000 गाथा का स्वाध्याय न हो सके तो 20 बांधी माला गिनके यह तप पूर्ण करना. यह एक उपवास का क्रम है फिर आगे गिन लेना।

5. **चैत्यपरिपाटी** - चैत्य यानि जिन मंदिर, परिपाटी यानी चारों तरफ से इकट्ठा होकर जुहारना. जब जब पर्व के दिन आते है तब चतुर्विध संघ के साथ जिनेश्वर के चैत्य को जुहारना (विधी)

- मंदिर की सामग्री हाथ में लेकर चलना.
- गुरु के साथ नंगे पैर पीछे पीछे चलना.
- हाथ में चावल का भरा बटवा रखना.
- जिनमंदिर में तीन् प्रदक्षिणा देना.
- पुरुष को मस्तक पर पघडी बांधना.
- पुरुष को खभे पर खेस डालना.
- गुरु के साथ चैत्यवंदन करना.
- पुजारी - वाचमेन आदि को दान देना । (अष्टान्हिका प्रवचन)

482. श्रावक के वार्षिक 10 कर्तव्य

1. **संघपूजा** - भगवती सूत्र में तीर्थंकर परमात्मा ने चतुर्विध संघ को तीर्थ की उपमा दी है. तीर्थ स्वरुप संघ की भक्ति साल में एक बार अवश्य करनी चाहिए, साधु साध्वीजी का प्रथम गुरुपूजन फिर वस्त्रादि द्वारा भक्ति बाद में श्रावक - श्राविका के ललाट में तिलक लगाकर संघपूजन करना चाहिए. वस्तुपाल तेजपाल ने अपने जीवन में 1000 बार संघ पूजा की थी संघपूजन में अमीर या गरीब सभी के भक्ति का लाभ मिलता है उसमे भी कोई तीर्थंकर, गणधर, पूर्वधर, साधु, साध्वीजी का जीव हो तो उसके भक्ति का भी लाभ मिलता है इसलिये विनय के साथ बहुमान के साथ संघपूजा करना ।

2. **साधमिक वात्सल्य** - समान धर्म का जो पालन करते है उसकी भक्ति वात्सल्य यानि प्रेम - बहुमान के साथ बैठकर भोजन कराना और यथा शक्ति अनुसार पांचो पकवान को पुरस्कारी करना वो साधर्मिक वात्सल्य खडे खडे जो खाते है वो सांढ वात्सल्य यानि पशु भोजन बन जाता है इसलिये बैठाकर बहुमान के साथ भोजन कराना वो साधर्मिक वात्सल्य।

3. **यात्रात्रिक** -

    1. **प्रथमत्रिक अट्ठाई महोत्सव** - आठो दिन परमात्मा की भक्ति महोत्सव के साथ विधीपूर्वक होना चाहिए जैसे प्रातः काल में स्तुति भक्तामर आदि का मंगलपाठ, जिनवाणी का श्रवण, दोपहर को पूजा, शाम को संध्या भक्ति आरती आदि, रात्रि को प्रतिक्रमण, व स्वामी वात्सल्य बहुमान के साथ बेठाकर करना ।

2. **द्वितीय यात्रात्रिक** - साल में एक बार परमात्मा को रथ में बिराजमान करके या रथयात्रा पालखी में बिराजमान करके नंगे पैर चलना चाहिए, प्रभुजी के आगे धूप, द्वीप नेवेद्य, फल के थाल, चामर, पंखा आदि को लेकर बहुमान के साथ चलना चाहिए इन्द्र इन्द्राणी बनकर परमात्मा के उपर छत्र धारण करना.

3. **तृतीय यात्रात्रिक** - तीर्थ यात्रा - तीर्थं पांच रजसा विरजीभ वन्ति। इस नियम को ध्यान में रखकर तीर्थयात्रा करता है उसकी कर्मरज अवश्य दूर होती है. जहां पर परमात्मा के कल्याणक हुए हो. जिस स्थान पर परमात्मा विचरे हो. या 100 साल पुराणा जिनालय हो. वहां तीर्थ यात्रा विधीपूर्वक यानि एकासणा भूमि संथारा, बह्मचर्य का पालन ये तीन नियम अवश्य होना चाहिए और यथाशक्ति दान देता चाहिए ।

4. **स्नात्र महोत्सव** - पूज्य वीर विजयजी महाराजा ने स्नात्रपूजा की रचना की है. विविध राग - रागनीओ के द्वारा संगीत के साथ परमात्मा का स्नात्र महोत्सव उल्लासभाव व समूह के साथ करना चाहिए. और पर्व के दिनो में विशेष करके प्रभु के इन्द्र इन्द्राणी बनकर स्नात्र महोत्सव करना चाहिए ।

5. **देवद्रव्य की वृद्धि** - देवद्रव्य वो सुवर्णपात्र कहलाता है प्रत्येक संघ में सुवर्ण पात्र भरपूर व उंचा होना चाहिए. वीरप्रभु जन्म वांचन के दिन देवद्रव्य की वृद्ध हेतु चौदह स्वप्न के चडावे होते है. चडावे बोलने के बाद रकम की जल्दी भरपाई करने से देवद्रव्य की वृद्धि का महान लाभ मिलता है ।

6. **महापूजा** - जेसे दिपावली पर्व में घर की व घर के समस्त सामग्री की साफ सफाई करते उसी तरह पर्वदिन के पहले जिनालय का शिखर से लगाकर गंभारे तक साफ सफाई व मंदिर के समस्त उपकरणोंकी साफ सफाई होनी चाहिए. साफ सफाई के बाद जिनालय का शणगार वो महापूजा... जीवहिंसा न हो इस तरह जयणा के साथ सभी कार्य करना चाहिए. घी के दीपक, होडी, अष्ठ मंगल आदि की रचना करनी चाहिए.

7. **धर्मजागरण** - कल्पसूत्र आदि परमात्मा के आगम हो, पारणा प्रभुजी का हो, उस समय भक्ति व आराधना के साथ रात्रि जागरण चाहिए. कायोत्सर्ग व ध्यान, जाप तो अवश्य करना. ।

8. **श्रुत पूजा** - भगवती सूत्र में गणधर भगवंतो ने नमो बंभीए लीवीए नमो सुयस्स इस तरह नमस्कार कीया है. क्योंकि श्रुत वडा है श्रुत पूजनीय है एसे ब्राह्मीलीपी व श्रुत यानि द्वादशांगी को नमस्कार हो. श्रुत को कंठस्थ करना, मनन चिंतन करना, लिखाना वो भी श्रुतपूजा है उससे ज्ञानवरणीय कर्म का नाश होता है ।

9. **उयापन** - दर्शन - ज्ञान - चारित्र एवं सातो क्षेत्र में उपयोगी बने एसे उपकरण द्वारा भक्ति करनी चाहिए. उसके कारण साधु साध्वीजी को निर्दोष वस्त्र पात्र आदि उपकरणो की प्राप्ति होती है जिस तरह जिनमंदिर पूर्ण होते शिखर के उपर धजा चढाते है उसी तरह तपस्या पूर्ण होती ही उजमणा यथाशक्ति करना चाहिए ।

10. **शासनप्रभावना** - दूसरे धर्मवाले अपने धर्म की प्रशंसा करे एसे कार्य करना चाहिए. जेसे - गुरुभगवंत का स्वागत, परमात्मा के कल्याणक के वरघोडे, रथयात्रा, उसमे हाथमें सामग्री लेकर नंगे पैर चलने से जोरदार शासन प्रभावना होती है. अनुर्कपा दानभी शासन प्रभावना का मुख्य अंग है ।

11. **आलोचना** - आ अभिविधीनां सकल दोषाणां लोचनां गुरु पुरतः प्रकाशन आलोचना - भगवती सूत्र की टीका में लिखा है कि सभी दोषो को छुपाये बिना गुरु के आगे पाप प्रगट करना वो आलोचना. छोटे या बडे जो भी दोष लगे हो उन सभी की आलोचना लेना. जिससे शुद्ध बनते है । **(अष्टान्हिका प्रवचन)**

483. कालकाचार्य के समय की 7 घटना

1. दत्त राजा के यज्ञ फल का कथन - वी. सं. 306 से 335 - आवश्यक चूर्णी
2. निगोद की व्याख्या - वी.सं. 336 से 376 स्थविरावली
3. आजीविकोके पास निमित पठन - वी. स. 453 पूर्व निशीथ चूर्णी
4. अनुयोग निर्माण - वी. सं. 453 पूर्व निशीथ चूर्णी
5. गर्दभिलोच्छेद - वी. सं. 453 के अंत में निशीथ चूर्णी
6. अविनीत शिष्य परित्याग - वी. सं. 457 के बाद आवश्यक चूर्णी **(प्रभावक चरित्र)**

484. दश पयन्ना के श्लोक की संस्था

➡ पयन्ना की रचना तीर्थंकर के शिष्य करते है प्रभु महावीर के शासन में 14,000 पयन्ना थे. हाल सिर्फ 10 की संख्या मिलती है इसमें जो गाथा अध्ययन उपलब्ध है उसके नाम.

1. चउसरण - 63 गाथा.
2. साउरपच्चक्खाण - 70 गाथा.
3. महापच्चक्खाण - 142 गाथा.
6. संस्तारक -123 गाथा.
7. गच्छाचार - 137 गाथा.
8. गणि विज्जा - 82 गाथा.

4. भक्त परिज्ञा - 172 गाथा. 9. देवेन्द्रस्तव - 307 गाथा.
5. तंदुल वैचारिक - 139 गाथा. 10. मरण समाधि - 663 गाथा.

कुल - 1898 श्लोक

(पूजा संग्रह सार्थ)

485. जैन ग्रंथावली में आनेवाले पयन्नाके नाम

1. चंदाविज्जय - 214
2. वीरस्तव - 56
3. अजीव कल्प - 44
4. सिद्ध प्राभृत - 120
5. तित्थागालि - 1233
6. आराधना पताका - 993
7. द्वीप सागर पन्नति - 223
8. ज्योतिष करंडक - 1850
9. अंग विज्जां - 9000
10. तिथिप्रकीर्णक - अभम्य
11. योनि प्राभृत - विविध प्राणी उत्पत्ति स्थान.
12. ऋषिभाषित - 45 अध्ययन
13. वंकचूलिका - श्रुतज्ञान आशातना फल
14. विवाहचूलिआ - व्यवहार भाष्य में बताया है
15. संसक्त निर्युक्ति - 63 गाथा है

(प्रवचन किरणावली)

486. स्थविर भगवंतो के 10 भेद

1. लौकिक स्थविर
2. देश स्थविर
3. ग्राम स्थविर
4. कुल स्थविर
5. लौकिक कुल स्थविर
6. गुरु स्थविर
7. संघ स्थविर
8. पर्याय स्थविर
9. श्रुत स्थविर
10. वय. स्थविर

(वीश स्थानक पूजा)

487. देवकी के आठ पुत्रो के नाम

1. कृष्ण वासुदेव
2. अनिकयशा
3. अंतसेन
4. अजितसेनक
5. निहतारि
6. देवयशा
7. शंत्रुसेन
8. गजसुकुमाल

➠ छ पुत्र एक साथ सिद्धगिरि पर मोक्ष में गये.

➠ गजसुकुमाल ने दीक्षा के दिन केवलज्ञान पाकर मोक्ष प्राप्त कीया.

➠ कृष्ण - वासुदेव सातवी नरक में है आगामी चोवीशी में असम नाम के 12 कें तीर्थंकर बनेंगे. ।

(99 प्रकारी पूजा)

488. षड दर्शन के मुख्य ग्रंथ

बौद्ध दर्शन	सांख्य दर्शन	मीमांसक दर्शन
1. धम्मपद	1. आत्रेय वस्त्र	1. शक्ति भाष्य
2. न्याय बिंदु	2. सांख्य सूत्र	2. जैमिनी सूत्र
3. दीर्घ निकाय	3. सांख्य कारिका	3. भट्ट दीपीका
4. सुत निकाय	4. सांख्य प्रवचन भाष्य	4. श्लोक वातिक
5. अणुलर निकाय	5. सांख्य तत्त्व कौमुदिवृत्ति	5. मीमांसीख्याय प्रकाश
योगदर्शन	**वेदांत दर्शन**	**वैशेषिक दर्शन**
1. व्यास भाष्य	1. वेदांत सूत्र	1. किरणावली
2. पातंजल योग सूत्र	2. अद्वैत सिद्धि	2. वैशेषिक टीका
3. तत्व वेशार दीपीका	3. वेदांत परिभाषा	3. व्योममति टीका.
4. व्यासभाष्य वार्तिक	4. विवेक चूडामणि	4. लीलावती टीका
5. योग सूत्र गूढार्थधोतनिका	5. सर्व वेदांत सिद्धांतसार	5. प्रशस्तपाद भाष्य

(ज्ञानज्योत)

489. मलयगिरिजी द्वारा रचित सिद्धान्त टीका

1. आवश्यकवृत्ति - 18,000
2. ओघ नि. वृत्ति - 7,500
3. कर्मप्रकृति वृतिः - 8000
4. क्षेत्रसमास वृत्तिः - 7887
5. चंद्रप्रज्ञप्ति वृत्तिः - 9500
6. जीवाभिगम वृत्तिः - 16,000
7. ज्योतिष्करंडक वृत्तिः - 5,000
8. धर्मसंग्रहणी वृत्तिः - 11,000
9. धर्मसार टीका -
10. नंदी वृद्ध टीका - 7732
11. पंचसंग्रह वृत्तिः - 18,850
12. पिंडनिर्युक्ति - 6000
13. प्रज्ञापना वृत्तिः - 14,500
11. पंचसंग्रह वृत्ति - 18.850
12. पिंडनिर्युक्ति - 6000
13. प्रज्ञापना वृत्ति 14,500
14. बृहत्कल्प वृत्ति - 42.000
15. भगवतीशतक वृत्तिः - 3750
16. राज प्रश्नीय वृत्तिः - 3700
17. विशेषावश्यक वृत्ति 9000
18. व्यवहार वृत्ति : 9000
19. शब्दनु शासन वृत्तिः - 33,625
20. षडशीति वृत्तिः - 5,000
21. संग्रहणी वृत्तिः - 3780
22. सप्ततिका वृत्तिः 3780

490. हरिभ्रद्र सूरि रचित ग्रंथ

1. अनुयोग द्वारा सूत्र वृत्तिः
2. अनेकान्त जय पताका
3. अनेकान्त दोघिट्टि
4. अनेकान्त पाद प्रवेशः
5. अर्हच्छीय चूडामणीः
6. अष्टक प्रकरणम
45. पंचलिंगी
46. पंचवस्तु प्रकरणम्
47. पंच सूत्र प्रकरणम्
48. पंचस्थानम्
49. पंचाशक्क
50. परलोक सिद्धि

7. उपदेशपद
8. आवश्यक बृहद् टीका
9. उपदेशपद
10. उपदेशपद प्रकरणम्
11. ओघ निर्युक्तिः
12. कथाकोष
13. कर्मस्तववृत्तिः
14. कुलक संग्रहः
15. क्षमावल्लीबीजम्
16. क्षेत्र समासवृत्तिः
17. चैत्यवंदन भाष्यम
18. चैत्यवंदन वृत्तिः
19. जंबूद्वीप प्रज्ञप्तटीका
20. जंबूद्वीप संग्रहणीः
21. जीवाभिगम लघुवृत्तिः
22. ज्ञान पंचक विवरणम्
23. तत्व तरंगीणी
24. तत्वार्थ लघुवृत्ति
25. त्रिभंगी सारः
26. दर्शनशुद्धि प्रकरणम्
27. दर्शन सप्ततिका
28. दशवैकालिक लघुवृत्तिः
29. दिनशुद्धिः
51. पिंडनिर्युक्ति वृत्तिः
52. प्रज्ञापना प्रदेश व्याख्या
53. प्रतिष्ठा कल्प
54. बृहद्मिथ्यात्वमथनम्
55. मुनिपति चरित्रम्
56. यतिदिन कृत्यम्
57. यशोधर चरित्रम्
58. योगदृष्टि समुच्चयः
59. योग बिन्दुः
60. योग शतकम्
61. योग विंशतिः
62. लग्नकुंडलिका
63. लग्नशुद्धि
64. लघुक्षेत्रसमास
65. लघु संग्रहणी
66. लोकतत्व निर्णय
67. लोक बिन्दुः
68. विंशिका
69. वीर स्तव
70. वीरांगद कथा
71. वेदब्राह्यता निराकरणम्
72. व्यवहार कल्प
73. शास्त्र वार्ता समुच्चय

30. देवेन्द्र नरेन्द्र प्रकरणम्
31. द्विजवदन चपेटा
32. दशवैकालिक बृहद्वृत्तिः
33. धर्मबिंदु
34. धर्मलाभ सिद्धिः
35. धर्मसंग्रहणीः
36. धर्मसारः
37. धूर्ताख्यानम्
38. ध्यानशतक वृत्तिः
39. नन्द्यगयन टीका
40. नाना चित्र प्रकरणम्
41. न्याय प्रवेश टीका
42. न्याय विनिश्चयः
43. न्यायावतार वृत्तिः
44. पंच लिंगी
74. श्रावकप्रज्ञप्ति वृत्तिः
75. श्रावक धर्मतन्त्रम्
76. षड् दर्शन समुच्चयः
77. षोडशरुप्रकरणम्
78. समकित पंचाशी
79. संग्रहणी वृत्ति
80. सप्तध्वसित्तरी
81. संबोध सितरी
82. संबोध प्रकरणम्
83. संस्कृतात्मानु शासनम्
84. समराईच्यकहा
85. सर्वन्तसिद्धः टीका
86. षड्दर्शनी
87. स्याद्वाद कुवादिपरिहार
88. संसारदावा स्तुतिः

491. प्राणातिपात यानि हिंसा उसके 30 नाम

1. **प्राणिवध** - जिसमें प्राण है उसका वध करना.
2. **शरीरोन्मूलन** - वृक्ष को मूल से डखेडते है उसी तरह शरीर में से जी निकालना.
3. **अविसंभ** - विश्वास घात करना.
4. **हिंसा विहिंसो** - जीवो का विशेष करके घात करना.
5. **आकेच्यं** - नहि करने योग्य कार्य को करना.

6. **घायणा** - शस्त्र आदि के द्वारा घात करना.
7. **मारणा** - लाठी आदि के द्वार मार मारना.
8. **वहणा** - कीसी भी प्रकार के प्राणी का वध करना.
9. **उद्वणा** - कीमी भी पदार्थ द्वारा भयंकर उपद्रव करना.
10. **निवायणाय** - मन - वचन - काया से गिरा देना, या देह, आयु, इन्द्रियबिना का करना.
11. **आरंमसमारंभ** - मील आदि में विशेष आरंभ समारंभ करना.
12. **आउकम्म उवद्दवो** - आयुष्य नाश करने में उपद्रव करना.
13. **मच्यू** - कीसी भी प्रकार से मृत्यु दंड देना.
14. **असंष्झो** - इन्द्रियो के उपर असंयम करना.
15. **कडगमद्दणं** - जीव के अंगोपांग का मर्दन करना.
16. **वोरमर्ण** - श्वास के द्वारा जीव का अंत करना.
17. **पराभवसंकाम्मकारओ** - पर भव में प्राणो का गमन कराना.
18. **दुग्गति पव्वाओ** - प्राणों को दुर्गति में गिराना.
19. **पावकोवो** - पाापरुप क्रोध करना.
21. **छविच्छेयकरो** - शरीर का छेदन, भेदन करना.
22. **जीवीयंत करणो** - जीवितव्य का अंतकरना.
23. **भयंकरो** - अतिशय डराना जिससे प्राण चलाजाय (राम, लक्ष्मण)
24. **ऋण करो** - भवरुपी देणा बढाना.
25. **वज्जो** - वज्र समान वजनयुक्त वस्तु से मारना.
26. **परितावण अक्षाओ** - दु:ख से अतिशय तपाना.
27. **विलासो** - प्राणीओ के प्राण का नाश करना.
28. **निज्जवणा** - नियति यानि भाग्य बिना का करना.

29. **गुणाणं विराहण्पति** - प्राणीओके मूलगुण की खंडना करनी व चारित्र गुण की विराधना

30. **लुंपना** - प्राणों का लुंपन (नाश) करना. (प्रश्नव्याकरण)

492. मृषावाद के 30 नाम

1. अलियं - जुठ बोलना
2. सढं - मायावी शब्द
3. अणज्जं - अनार्य वचन
4. मायामोसो - कपट्यक्त जूठ
5. असंतकं - बात नहि है तो भी कहना.
6. कूडकवसवात्थुग - कम अधिक निरर्थक बोलना
7. निरत्थयवप्रत्थयं- इरादा के साथ झूठ
8. विद्देसगर हणिज्जं - द्वेष युक्त निंदा
9. अणुज्जुके - कुवचन
10. कक्कणा - माया पाप वाला वचन
11. वंचणा - ठगाई भरा वचन
12. मिच्छापच्छाकदं - गलत बोलना व गलत करना.
13. साती - अविश्वास वचन.
14. अछन्नं - स्वयं के दोष अन्यके गुणको ढंकने वाला वचन.
15. अक्कूलं - न्याय उपर कटुवचन.
16. अहटं - आर्तध्यान
17. अबभक्खाणि - आल चढाना.
18. किल्विसं - क्लेश वचन

19. वलयं - टेढा बोलना
20. ग्रहणं - वन जैसा गूढ वचन
21. मम्मणं - मर्म युक्त वचन
22. नियमी - माया पूर्वक का वचन
23. अप्यच्चओ - अप्रीतिजनक वचन
24. असंमओ - अनाचार युक्त वचन
25. असच्चसंघतणं - गलत प्रतिज्ञा
26. विवकखो - सत्य में शत्रुताभरा वचन
27. उवहीयं - अवहेलनावाले वचन
28. उवहिअसुद्धं - सावद्यकारी वचन
29. नूमं - गूढाचार वाला वचन
30. अवलोवोत्ति - सदभावना को ढंकने वाला वचन

(प्रश्नव्याकरणम्)

493. अदत्तादान के 30 नाम

1. चोरिक्कं - चोरी करना.
2. परहडं - परधन को हरना.
3. अदतं - नहि दी हुयी सामग्री लेना
4. फूरिकडं - क्रूर कार्य करना
5. परलाभो - परद्रव्य का लाभलेना.
6. असंजमो - असंयम
7. परघणामिगेही - परघन में गृद्ध बनना.
8. लोलिक्कं - लोलुपी बनना
9. तक्करतणांभि - तस्करपणो

10. अवहारो - अपहरण करना
11. इन्थलहुतणं - हाथ चालाकी करना
12. पावकम्मकरणे - पाप कार्य करना
13. तेणिक्कं - चोरी का भाव रखना
15. आदियणा - परधन को लेना ।
14. हरणविप पणासो - धनका हरण करके नाश करना.
16. लुंपणाघणाणं - परघन छीन लेना.
17. अपच्चओ - अप्रीतिजनक कार्य
18. अवीलो - पीडाजनक कार्य
19. अक्खेवो - परधन लेने में उद्यम
20. खेतो - माल को छुपाना.
21. विक्खेवो - विशेष करके छुपाना
22. कुड्या - कूडे तोल माप करना
23. कुलमसी - कुल को डाघ लगना.
24. कंरवा - चोरी की इच्छा करना
25. लालप्पण पत्थणा - दीनता दिखाना
26. आसमणाय स्मणं - विनाश कारक व्यसन
27. ईच्छमुच्छाय - चोरी की ईच्छा कर मूर्च्छा
28. तण्होगेहि - पाये हुए धधी की तृष्णा व नहि पाये हुए की इच्छा करना
29. नियट्टिकम्मं - चोरी को ढकने माया करना.
30. अपच्छ तिविय - नजर चुकाकर चोरी करना.

(प्रश्न व्याकरण)

494. अब्रह्मचर्य के 30 नाम

1. अबंभं. अब्रह्मचर्य
2. मेहुणं - मैथुनकर्म
3. चरंतं - बुरे विचार
4. संसग्गि - स्त्रीः पुरुष का संसर्ग
5. सोहणाधिकारो - अकार्य सेवन
6. संकल्पो - संकल्प विकल्प हेतु
7. वाहणापदाणं - बाधा पिड़ा का हेतु
8. दप्पो - गर्व उत्पन्न करना
9. मोहो - मोह उत्पन्न करना.
10. मणसंखोमो - मन में संक्षोभ होना.
11. अणिग्गहो - इन्द्रिय को स्वच्छंदी बनाना
12. वुग्गहो - क्लेश का हेतु
13. विद्याओ - गुण घात का हेतु
14. विभंडा - गुण की विराधना
15. विब्भमो - विभ्रम का हेतु
16. अधम्मो - अधर्माचरण
17. असींलेया - अशील
18. नामधममनिति - शब्द
19. रती - कामसेवा
20. रागचिंता - स्नेह चिंता

21. कामभोगमारो - काम में आसक्त बनकर मरणांत तक.
22. वेरे - वैर का हेतु
23. रहस्सं - गुप्तकर्तव्य
24. गुज्झ - छुपाने योग्य
25. बहुमानो - बहोत जन को मान्य
26. बंभचेर विग्धो - ब्रह्मचर्यघातचक्र
27. वावति - गुण का घातक
28. विरगहणा - चरित्र का विराधक
29. पसंगो - कामासक्ति
30. काम गुणो - कंदर्प के गुण कार्य रुप ।

(प्रश्न व्याकरण)

495. परिग्रह के 30 नाम

1. परिग्गहो - ईक्कट्ठा करना
2. संचयो - ईक्कट्ठा करके रखना
3. चयो - ईक्कट्ठा करना
4. उवचयो - बडा ढेर करना
5. निदान - भूमि में रखना
6. संभारो - अच्छी तरह से रखना
7. संकरो - मिश्र करके रखना
8. आयरो - आदर के साथ रखना
9. पिंडो - पिंड बनाना

10. दव्वुसारो - द्रव्य भक्षण का सार
11. महिच्छा - बडी इच्छा रखना
12. पडिबंधो - स्नेह रखना
13. लोहप्पा - लोभी बनना
14. महिट्ठि - बडी ईच्छा रखना
15. उपकरण - घर वखरी
16. संरक्खणा - शरीर का विशेष रक्षण
17. भारो - भार देना.
18. संपाय उपायको - अनर्थ का उत्पादन
19. कलिकरंडो - क्लेश का करंडिया
20. पावित्थरो - धन धान्य का विस्तार
21. अणत्थो - अनर्थ का कारण
22. संथवो - धनस्वजन का परिचय
23. अकीति - मन का आगोपन
24. अगुति - शरीर का दुःख
25. अविओगो - धनादिका वियोग में दुःख
26. अमुत्ती - जल्दी न छोडना
27. तण्हा - तृण्णा रखना
28. अणात्थको - सिर्फ स्वार्थ की भावना
29. आसर्ती - धनादि का संग
30. आसंतोसो तीवियं - असंतुलवृत्ति

(प्रश्न व्याकरण)

496. वायुकाय की हिंसा कैसे होती है

➠ सुप्प - वियण - तालचंद्र - परिथुनक - हुणगुह -करचल सग्गपित - वत्थ एवमाहिएहिं अणिलं - सुपडा से झाटकना, वींझणा चलाना, दोपडवाला वींझणा चलाना, मोरपींछी चलाना, मुख से उच्चार करना, तालोटा बजाना, सागपत्र चलाना, वस्त्र से हवा डालना, इससे वायुकाय की विराधना होती है (प्रश्न व्याकरण)

497. गुणवर्मा राजा के 17 पुत्रो का 17 प्रकारी पूजा द्वारा मोक्ष

पुत्र नाम	पूजानाम	पुत्र नाम	पूजा नाम
1. प्रथम कुमार	अभिषेक पूजा	10. दशानन	आभूषण
2. सिंह कुमार	विलेपन पूजा	11. अचल	पुष्पश्चर
3. हरि कुमार	अंगलूछणा	12. भडबुद्धि	पुष्पढेर
4. गज कुमार	वासक्षेप	13. तारुण	अष्टमंगल
5. पद्म कुमार	पुष्पपूजा	14. चक्रवाणि	धूप पूजा
6. छायाकर	पुष्पमाला	15. पूर्ण	गीवस्तवन
7. शंखकुमार	अंगरचना	16. सोम	नृत्यपूजा
8. अनंतकुमार	पूर्ण बरास	17. सागर	वांजीत्रपूजा
9. नागकुमार	महाध्वज		

➠ **17 पुत्र के पूर्वभव के नाम**

1. दत	5. लक्ष्मीघर	9. कनक	13 श्रीद
2. वीसुदत	6. धनेश	10. कनकाभ	14. श्रीदत्त
3. सुक्त	7. धननाथ	11. हेमंडभ	15. शंख
4. मितनंदन	8. धनेश्वर	12. हेमवर्णक	16. धर्म
			17. धीर

- 15 वीं पूजा में इन्द्र महाराजा परमात्मा के सामने दाहिना पैर खडा करके मस्तक तक अंजलि करके हाथ जोडकर 108 स्तोत्र व नमुत्थुर्ण द्वारा गीत स्तवन की पूजा पूर्ण होती है.
- यह सत्तर प्रकार की पूजा इन्द्र महाराज ने गुणवर्मा राजा के साथ की थी.
- गुणवर्मा राजाभी पित्ता के द्वारा बोध पाकर दीक्षा लेकर केवली बनेथे.
- गुणवर्मा राजाभी पिता के द्वारा बौध पाकर दीक्षा लेकर चौद पूर्वी बनते है 17 पुत्रो को 17 प्रकार के राज्य में स्थापन करते है.
- 17 पुत्र भी 17 प्रकारी पूजा पढाते है 1-1 पुत्र 1-1 प्रकार की पूजा बढाते है 17 पुत्रो ने पूर्वभवमें दीक्षा लीथी.
- नरवर्मा केवली सत्तर पुत्रो के पूर्वभव बताते है.
- 17 पुत्र भी अपने 17 पुत्र को राज्यदेकर गुणवर्मा मुनि के पास दीक्षा लेकर पांचमे देवलोक में जाते है ।
- देवलोक मेंसे च्यवन होकर 17 पुत्र महाविदेह में जन्म पाकर दीक्षा लेकर मोक्ष में जायेंगे ।
- गुणवर्माराजा हस्तिनापुर नगर में होता है ।
- राजगृही नगरी में वीरप्रभु ने श्रेणीक राजा के आगे जो कथा कही उसी कथा की रचना अचलगच्छ के माणिक्य सुंदर सूरि ने सांचोर में वीरप्रभु की मूर्ति के आगे वि. सं. 1384 में की थी.

498. मौन अग्यारस का महिमा

- नेमिनाथ परमात्मा ने कृष्णराजा के आगे मागसरसुद - 11 का बडादिन बताया क्यों कि इस दिन 150 कल्याणक परमात्मा के हुए थे.

- वर्तमान चोवीशी के तीनतीर्थंकर के पांच कल्याणक.
- गत चोवीशी के तीन तीर्थंकर के पांच कल्याणक.
- आगामी चोवीशी के तीन तीर्थंकर के पांच कल्याणक.
- इस तरह 15 कल्याणक हुए. इस तरह पांच भरत पांच ऐंरवत, क्षेत्र के मिलकर 150 कल्याणक हुए. 150 तीर्थंकर के नामभी प्राप्त होते है एसे उत्तम दिन मौन के साथ उपवास करने से अवश्य आराधना करना. ।
- सुव्रतशेठ की आराधना
- शूर शेठने 11 साल 11 मास तक की आराधना की थी.
- पुत्र उत्पन्न होते ही 11 करोड सोनैया प्राप्त हुए थे.
- प्रीतिमती माता के व्रत लेने की ईच्छा से सुव्रत नाम रखा.
- सुव्रत को यौवनवय प्राप्त होते ही 11 कन्या के साथ शादी हुयी.
- धर्मघोष सूरि के पास पूर्वभवसुनकर 11 साल 11 मास की आराधना की.
- सुव्रतशेठ के घर चोरी करने चोर अग्यारस के दिन गये थे.
- जयशेखर सूरि के पास 11 पत्नी ने भी दीक्षा लीथी
- तप के प्रभाव से 11 पत्नी को मोक्ष प्राप्त हुआ.
- सुव्रतशेठ भी अग्यारस की आराधना द्वारा मोक्ष में गये. (उपदेश धारा)

499. संग्राम सोनी द्वारा शासनभावना

- शुभ शुकन होने के कारण मांडवगढ के उद्यान में प्रवेश किया.
- उद्यान में ग्यासुद्दीन बादशाह जब वांझीया वृक्ष को छेदने का हुकम करता है उस समय संग्राम सोनी कहता है मैं इसको नवपल्लवित करुंगा और यदि न किया तो जैसा वृक्ष का घात करो वैसा मेरा करना । क्योंकि

वांझीया व्यक्ति को जीने का अधिकार है उसी तरह वृक्ष को भी जीने का अधिकार है ।

- संग्राम सोनी ने वृक्ष के नीचे स्नात्रपूजा पढाकर गहुंली आदि की तो वृक्ष का अधिष्ठायक देव प्रसन्न हुआ ।
- देव के सांनिध्य से संग्राम सोनी को वृक्ष के नीचे जो हटा हुआ धन था वो प्राप्त हुआ । और वृक्ष के उपर आम आने लगे ।
- चांदी के थाल में भरकर आम को राजा के पास भीजवाये ।
- बादशाह खुश हुआ, धन दिया व अपना कामदार बनाया ।
- आचार्य सोमसुंदरसूरिजी का चातुर्मास मांडवगढ में कराया व भगवती सूत्र को सुनते समय स्वयं के १ सोनामहोर, माता के आधी सोना महोर, व पत्नी ने पा सोना महोर रखकर भगवती सूत्र की पूजा की थी । ३६ + १८ + ९ = ६३,००० सुवर्णमहोर से भगवती पूजा की ।
- इस सुवर्णमहोर के द्वारा कल्पसूत्र व कालकाचार्य की कथावली प्रतो लिखाकर प्रत्येक भंडार मे भेट की ।
- वि.सं. १४७२ मे मांडवगढ मे सुपार्श्वनाथ का भव्य जिनालय निर्माण करवाया था ।
- उसके पश्चात् मक्षी, मंदसौर, ब्रह्ममंडल, सामलीया, धार, नगरखेड, चंडाउली आदि १७ स्थआनो में १७ भव्याजिनालय का निर्माण कराया था ।
- ५१ जिनमंदिरो का जीर्णोद्धार कराया था ।
- मांडवगढ में १४९२ से १५२५ तक महम्मदखीलजी का खजानची बना था ।

- वि.सं. १५२० मे बुद्धिसागर ग्रंथ के ४१४ श्लोक की रचना की थी। जिसमें धर्मशुद्धि तरंग, नयतरंग, व्यवहारतरंग, प्रकीर्णक तरंग आदि चार तरंगो की रचना की थी। **(मांडवगढ इतिहास)**

500. 63 प्रकार के दुर्ध्यान व दृष्टांत के नाम

	ध्यान के नाम	कथाओ
१.	अज्ञान ध्यान	अशकटापिता
२.	अनाचार ध्यान	कोंकण साधु
३.	कुदर्शन ध्यान	सुराष्ट्र श्रावक
४.	क्रोध ध्यान	कुलवालक मुनि
५.	मानध्यान	बाहुबली
६.	मायाध्यान	धनश्री
७.	लोभध्यान	वणिकमित्र
८.	रागध्यान	विक्रमयशोराज
९.	द्वेषध्यान	धर्मरुचि-नाविक
१०.	मोहध्यान	बलभद्र
११.	इच्छाध्यान	कपिल
१२.	मिथ्याध्यान	जमालि
१३.	मूर्च्छाध्यान	कनकध्वज
१४.	शंकाध्यान	आषाढाचार्य शिष्य
१५.	कांक्षाध्यान	मरिचि
१६.	शुद्धिध्यान	मंगुसूरि
१७.	आशाध्यान	मूलदेव
१८.	सुद्रध्यान	सनत्कुमार
१९.	तृष्णाध्यान	क्षुल्लक मुनि

२०.	पथिध्यान	वल्कलचिरि
२१.	प्रस्थानध्यान	सनत्कुमार
२२.	निद्राध्यान	महिषमांसभक्षिः
२३.	निदानध्यान	नंदिषेण
२४.	स्नेहध्यान	मरुदेवा माता
२५.	कामध्यान	कुमारनंदिसोनी
२६.	कलुषध्यान	बाहुसुबाहु
२७.	कलहध्यान	दुर्योधन
२८.	युद्धध्यान	कोणिक राजा
२९.	नियुद्धध्यान	बाहुबली भरत
३०.	संगध्यान	राजीमती
३१.	संग्रहध्यान	मम्मणशेठ
३२.	व्यवहारध्यान	सार्थवाहिनी
३३.	क्रयविक्रयध्यान	नंद
३४.	अनर्थदंडध्यान	मंगदत्त
३५.	अभोगध्यान	ब्रह्मदत्त
३६.	अनाभोगध्यान	प्रसन्नचंद्र
३७.	ऋणविलध्यान	यतिभगिनी
३८.	वैरध्यान	परशुराम
३९.	वितर्कध्यान	चाणक्य
४०.	हिंसाध्यान	कालसौकरिक
४१.	हास्यध्यान	चंद्ररुद्राचार्य
४२.	प्रज्ञाध्यान	चंड़प्रद्योतन
४३.	प्रद्वेषध्यान	मरुभूति कमढ
४४.	परुषध्यान	युगबाहु

४५.	भ्रमध्यान	गजसुकुमाल
४६.	रुपध्यान	सनत्चक्री
४७.	आत्मप्रशंसाध्यान	वररुचि
४८.	परनिंदाध्यान	कुरगुडुमुनि
४९.	परगर्हाध्यान	गौष्ठामाहिल
५०.	परिग्रहध्यान	मुनिपतिमुनि
५१.	परपरिवादध्यान	सुभद्रासति
५२.	परदूषण ध्यान	अंगऋषि
५३.	आरंभध्यान	द्वीपायन
५४.	संगमध्यान	क्षुल्लक मुनि
५५.	पापानुमोदनध्यान	राजा
५६.	अधिसनध्यान	नंदभणियार
५७.	असमाधिमरणध्यान	खंधकाचार्य
५८.	कोमर्दयध्यान	विष्णु
५९.	ऋद्धिगाहनध्यान	दशार्णभद्र
६०.	सालगारवध्यान	जितशत्रु राजा
६१.	शातागारवध्यान	शशिराज
६२.	अविमरणध्यान	मेतार्यमुनि
६३.	अमुक्ति मरणध्यान	संभूतिमुनि

➡ इन सभी ध्यानो का विवरण-दृष्टांत आउरपच्चक्खाण नाम के आगम में हैं । (आउरपच्चक्खाण)

Note

Note

श्रुत भक्ति के लाभार्थी

जगजयवंत श्री जीरावला तीर्थमें

कोट कास्ता वास्तव्य

शा. भबूतमलजी भीमाजी राठोड परिवार

द्वारा आयोजित चैत्रमासकी शाश्वती

ओली के अंतर्गत ज्ञानद्रव्य में से

वि.सं. २०७१

Printed By :
NAVNEET PRINTERS
(M) 98252 61177